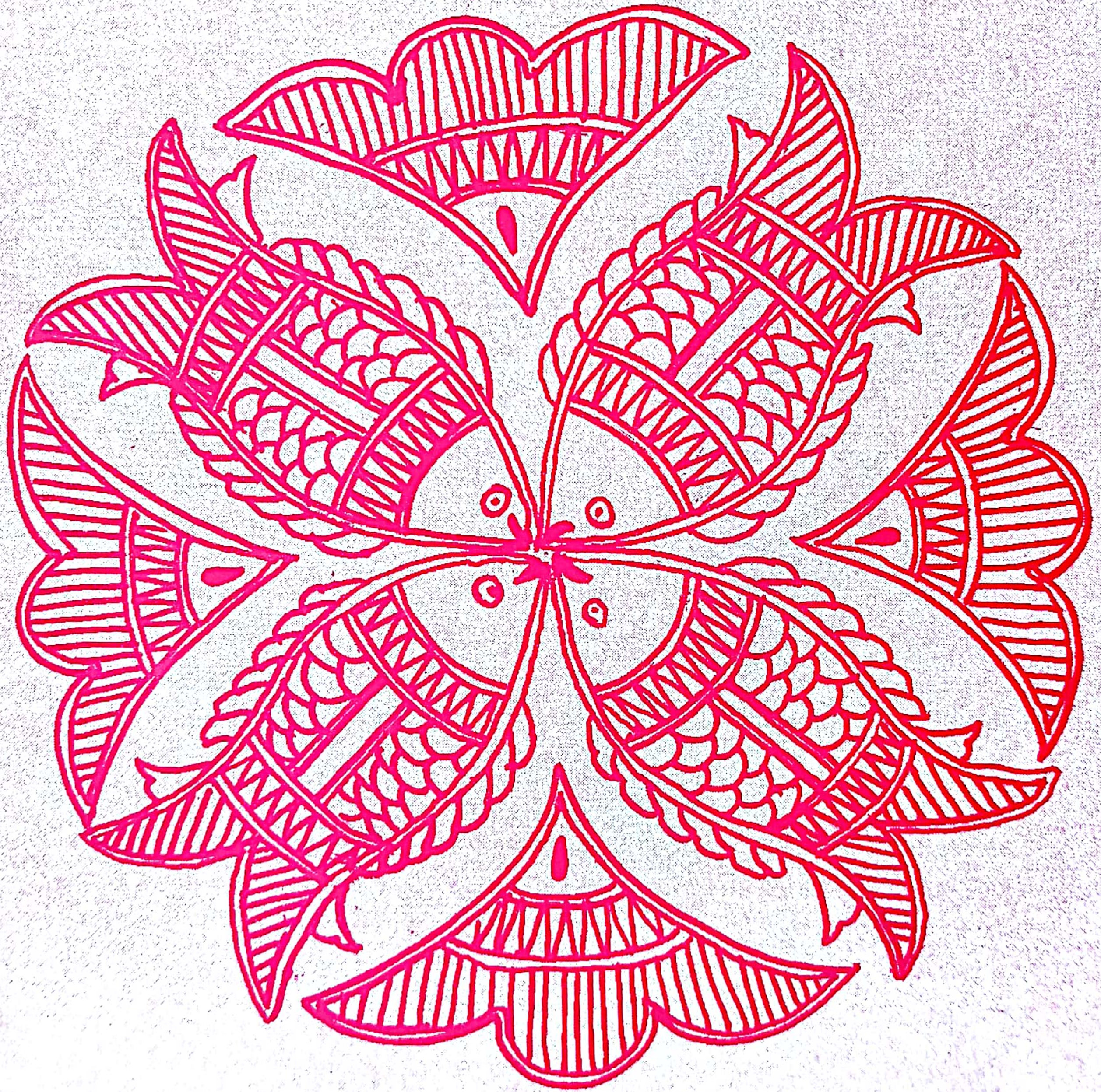
रामजोड़ी कागतक पाँखिपर



श्रीरामदेवझा

- 'ओ तँ अन्हार छथि भगवान कहौ के ?' नहि तँ मौगी जातिके ँ एहन सम्मानहीन जीवने किएक दितऽथिन । जँ एतेक सस्त अछि मौगी जाति तँ कोन काज छलनि भगवानके ँ ओकर रचना करबाक ?कोन ओकरा बिना सृष्टि अन्हार भेल जा रहल छलनि ?जखन अपने सभ कर्त्ता छथि तँ मौगी बिना हुनका कथीक खगता होइतनि ?
- ई दुनिया विभिन्नता आ विचित्रतासँ भरल छैक । एक गोटाके ँ जे वस्तु नीक लगतैक, वैह वस्तु दोसरके ँ अधलाह लगैत छैक ककरो पढ़लिये कनियाँ चाहिऐक आ ककरो पढ़लि कनियाँ देखि सात आँखि होइत छैक ।
- हम रामजोड़ी, ओही पंछी सन हालति हमरा लोकनिक अछि । अनन्त आकासमे उड़ल चल जा रहलि छी, जानि नहि कोनो गाछ-वृक्षक डारि वा फुनगी भेटत वा नहि । हमरा लोकनिक जीवन नौका कोन किनार वा दीयरमे जा कऽ लागत वा कोनो पाँकमे जा कऽ फँसि जायत से के जानय ?
- हम सब कतहु मऽरी ?लोक सभ कहैत छैक जे बेटीक जाति अज्जर-अम्मर भऽ जनम लैत छैक । कौआक जीह पिउने रहैत छैक घसि कऽ ।
- जाहि धरतीपर जनम भेल, जाहि ठामक बोलीमे अपन मोनक भाव प्रकट करब सिखलहुँ, जाहि ठामक संस्कृतिमे रहि कऽ आचार-व्यवहार सिखलहुँ, से धरती की बिसरल जयतैक ? लता-तरूसँ बेढ़ल, खेत-पथारसँ घेरल अपन गाम नहि बिसरल जाइत अछि ।... हमरा तँ रहि-रहि कऽ नटुआ सभक ओ पाँती मोन पड़ैत अछि– परम प्रिय पावन तिरहुत देश ।
- भाइजी हमरासँ पाँच-छौ बरखक जेठ छथि से तँ ओ नेना छथि, हुनका पढ़बाक छनि आ हम बुढ़िया भेलि जा रहल छी, अजग्गि भेल जाइत छी ।

रामजोड़ी कागतक पाँखिपर

श्रीरामदेवझा



मिथिला रिसर्च सोसाइटी
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा - 846001

Ramjodi Kagatak Pankhi Par : an epistolary fiction in Maithili by Shree Ramdeo Jha

प्रकाशक - मिथिला रिसर्च सोसाइटी
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा- 846001

वितरक - श्रीशंकरदेवझा
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा- 846001

संस्करण - 2002 इ.

मूल्य - 125/- टाका

आवरण - कल्पना कुमारी

मुद्रक - प्रिंटवेल
टावर, दरभंगा

शेष-विशेष

पटनासँ जखन मिथिला मिहिरक अभिनव रूपमे प्रकाशन होमऽ लागल तँ 1960 सँ 1963 धरिक अवधिमे ओकर **स्त्रीगण समाज** प्रभागक अन्तर्गत क्रमशः तीन गोट स्थायी स्तम्भ हम लिखैत रहलहुँ **: अंगरेजीफूलक चिट्ठी, बहिनाक विरोग** आ **रामजोड़ी कागतक पाँखिपर** । **अंगरेजीफूलक चिट्ठी** 30 अक्टूबर 1960सँ 20 अगस्त 1961 धरि चलल । अंगरेजीफूलक चिट्ठी पाठकमे वेश लोकप्रिय भेल । एते धरि जे प्रो. हरिमोहनझा सेहो एहि स्तम्भक गम्भीर पाठक छलाह । हुनक एहि आशयक पत्र मिथिला मिहिरक 25 दिसम्बर 1960क अंकमे पाठकक प्रतिक्रियाक रूपमे छपलो छल । आनहुँ कय गोट पाठकक प्रतिक्रिया प्रकाशमे आयल छल । गोपालजीझागोपेश अपन रचना **ओझाजीक डायरी** (मिथिला मिहिर, 6 जनवरी 1962)मे 19 जून 1961क घटनाक रूपमे अंगरेजीएफूलक अस्पतालमे रहैत कालक वर्णन कयलनि । पाठक दिससँ बेर-बेर अंगरेजीफूलक चिट्ठी सन सामग्रीक माङकेँ देखैत, शेखरजीक आग्रहपर चारि-पाँच मासक पश्चात् **बहिनाक विरोग** स्तम्भ लिखब आरम्भ कयल । 14 जनवरी 1962क अंकमे सम्पादकक दिससँ एहि सम्बन्धमे पूर्व सूचना देल गेल छल जे– **स्त्रीगण समाज स्तम्भक अन्तर्गत अंगरेजीफूलक चिट्ठी जे प्रकाशित होइत रहल तकरा स्त्रीगण लोकनि खूब पसिन्द कयलनि । पुनः हुनका लोकनिक हेतु दोसर रोचक सामग्री 'बहिनाक विरोग' अगिला अंकसँ प्रकाशित होयत । आशा जे इहो हुनका लोकनिकेँ नीक मनोरंजन करतनि ।**

ओहि समयमे हम दुमकामे एस्.पी. कालेजमे कार्यरत रही आ ओतहिसँ डाक द्वारा मिहिरकेँ सामग्री पठाओल करी । अगस्त 1962क उत्तरार्द्धमे पटना गेल छलहुँ । आर्यावर्त्त-मिहिर कार्यालय गेलहुँ । शेखरजी कहलनि जे 2 सितम्बरक अंकक संग मिहिरक वर्ष पूर्त्ति होयतैक । अगिला वर्ष **बहिनाक विरोग**क स्थानमे कोनो नव शीर्षकसँ धारावाहिक सामग्री दियऽ । हुनकहि संग सम्पादकजी (श्रीकान्तठाकुर विद्यालंकार)क दर्शनार्थ हुनका आफिसमे गेलहुँ । ओ मिहिरक प्रसंग अनेक बातक चर्च करैत रहलाह आ ओही क्रममे ओहो कहलनि जे कोनो तेहन सामग्री मिथिला मिहिरमे नियमित रूपमे अयबाक चाही जाहिसँ नव शिक्षित किशोर ओ युवावर्गमे मिथिला मिहिरक प्रति आकर्षण बढ़ि सकय ।

अत: **बहिनाक विरोग** बिना कोनो सार्थक परिणति देखौने 2 सितम्बर 1962क अंकमे प्रकाशित भऽ बन्द भऽ गेल । उभय सम्पादकक आग्रहक आदर करैत दुमका आबि कथा-विशेषांकक निमित्त एक गोट कथा **एकटा रहय उतमी** तथा स्तम्भक हेतु **रामजोड़ी कागतक पाँखिपर** शीर्षकसँ दुइ गोट चिट्ठी शेखरजीकेँ पठा देलियनि । कथा 9 सितम्बर 1962क कथा-विशेषांकमे छपल । **रामजोड़ी कागतक पाँखिपर**क प्रकाशनक विषयमे **बहिनाक विरोग** सदृश पूर्व सूचना बिनु देनहि 16 सितम्बर 1962क अंकसँ ओकर प्रकाशन आरम्भ कऽ देल गेलैक । 1962क दिसम्बरक तेसर सप्ताहमे हम सी.एम्. कॉलेज, दरभंगा चल गेलहुँ आ ओत्तहिसँ **रामजोड़ी कागतक पाँखिपर** स्तम्भक निमित्त मैटर पठाबऽ लगलियनि । 31.1.'63क लिखल शेखरजीक एकटा पत्र भेटल जाहिमे एकटा इहो बात लिखने छलाह जे– **'पाँखिपर' सबेर पठाओल करी । पहिने शुक्रकेँ छपि कऽ तैयार होइत छलैक । आब बुधे भऽ गेलैक अछि** । हम तत:पर सम्पादकक चिन्ताकेँ ध्यानमे राखि एक खेपमे तीन-तीन चारि-चारि अंकक हेतु सामग्री पठा दैत छलियनि । **रामजोड़ी** 12 मइ '63 धरि छपैत रहल । बीचमे 30.12.'62, 10.3.'63 ओ 14.4.'63 केर अंकमे नागा रहल । चिट्ठी लिखल गेल 36 गोट परन्तु प्रकाशित भेल 32 गोट मात्र । तीन गोट पत्र सम्पादकक लग एवं अन्तिम एक गोट हमरा लग अप्रकाशिते रहि गेल । जँ प्रकाशित होइत तँ ओहिसँ आगा तीन-चारि अंक धरि चलैत । परन्तु 19 मइ, 26 मइ ओ 2 जून 1963क अंक धरि **रामजोड़ी कागतक पाँखिपर** लगातार अमुद्रिते रहल । 29 मइ 1963क लिखल शेखरजीक पत्र 3 जून 1963केँ भेटल जाहिमे **प्रत्येक मासमे अनिवार्य रूपसँ दू कथा पठयबाक** आग्रहक संग सूचित कयने छलाह जे– **रामजोड़ीकेँ विदा कयलियनि । आगाँक अंकसँ सोनदाइक सोहाग आबि रहल अछि ।**

सोनदाइक सोहाग 9 जून '63सँ छपब आरम्भ भेल छल । अत: पूर्वक क्रमिक तीनू अंकमे रामजोड़ीक तीन गोट पत्र जे सम्पादकक लग छल से तँ छपिये सकैत छल, परन्तु नहि छपल, तकर कारणक जनतब हमरा कहियो ने भेल । हँ, ठीक दू मासक पश्चात् 30 जुलाइ 1963केँ जहिया हुनकर हाथक लिखल टेस्टीमोनियल (मूल अभिलेखक फोटो पृष्ठ 10 पर) हमरा भेटल छल, ओही दिन **रामजोड़ीक** अवशिष्ट अप्रकाशित पत्र हुनकासँ लऽ लेलहुँ । ओ तीनू पत्र एवं हमरा लगवला छतीसम पत्र एहि पोथीमे यथा स्थान संलग्न अछि ।

अंगरेजीफूलक चिट्ठी, बहिनाक विरोग ओ **रामजोड़ी कागतक पाँखिपर** मिथिलाक तीन तरहक वयसक नारी-मानसिकताक कथा कहैत अछि । तीनू पत्रात्मक धारावाहिकमे देखल जाइछ जे प्रत्येकमे पूर्वापर परस्पर सम्बद्ध घटनाक श‍ृंखला छैक जाहिसँ एकटा सुनिश्चित कथानकक सृष्टि-पुष्टि होइत जाइत छैक । परन्तु स्तम्भ रूपमे धारावाहिक-प्रकाशनक क्रममे कथानकमे जखन-जखन कोनो महत्त्वपूर्ण मोड़ ओ ओहिमे उत्कर्ष-अपकर्षक सम्भावना होमऽ लगैत छलैक, कथानक कोनो परिणति दिस अग्रसर होमऽ लगैत छलैक,

तखन-तखन सम्पादक लेखकक कलमकेँ रोकि देल करैत छलाह अर्थात् स्तम्भकेँ अकस्मात् बन्द कऽ दैत छलाह । एकरा पाछाँ हुनक की मानसिकता रहल करैत छलनि तकर व्याख्या करब कठिन ।

मिथिला मिहिरक नव रूपमे पटनासँ प्रकाशनारम्भ सितम्बर 1960सँ 1963इ. धरिक अवधिमे क्रमशः प्रकाशित उपर्युक्त तीनू स्तम्भ मैथिली साहित्यमे पत्रात्मक विधाक सृष्टि कयलक । पत्रक माध्यमसँ साहित्यिक अभिव्यक्तिक दिशामे महिला लेखिका ओ महिला-निमित्त-लेखनकेँ एकटा आदर्श बनि उत्प्रेरित कयलक ।

रामजोड़ी कागतक पाँखिपर स्तम्भक विरामक तीन अंकक पश्चात् दया०न०म० (दयानन्दमल्लिक)क **सोनदाइक सोहाग** नामक पत्रात्मक स्तम्भ 9 जून '63सँ चलऽ लागल जे 15 दिसम्बर '63 धरि चलल आ कुल 27 किस्त प्रकाशित भेल । एहिमे नवे-नव पटना-प्रवासिनी सोनदाइ अपन भाउजिकेँ पत्र लिखैत छथि । एहिमे सोनदाइ पटनाक विभिन्न स्थान, यथा- गोलघर, मीनाबजार, आन आन बजार इत्यादिक वर्णन करैत रहि जाइत छथि । कोनो सुनिश्चित कथानक नहि बनैत अछि ।

एहिना मिथिला मिहिरक **स्त्रीगणक समाजेक** अन्तर्गत एक गोट और पत्रात्मक धारावाहिक **जोड़ल आखर : पसरल भाव** आठ किस्तमे 9 फरवरी '64सँ 5 अप्रैल '64 धरि प्रकाशित भेल । पत्रमे सन्ताल परगनाक दुमका शहरक परिवेशक वर्णन अछि । एहिमे हमरहि तीनू धारावाहिक स्तम्भ सदृश लेखकक नाम नहि अछि । परन्तु थिकनि ई लिखल डा. विद्यानाथझा'विदित'क जे एस्.पी. कालेज, दुमकामे मैथिली विभागक व्याख्याता पद पर कार्यरत छलाह आ जे हमर सी.एम्. कालेज, दरभंगा चल अयबाक कारणे रिक्त भेल छल । 5 दिसम्बर '63केँ हम मुक्त भेलहुँ एवं विदितजी 6 दिसम्बर '63केँ ओतऽ कार्यभार ग्रहण कयलनि ।

दुहू पत्रात्मक धारावाहिकमे पत्र सभ एकदिसाहे लिखल गेल अछि । सम्बोधित व्यक्ति दिससँ कोनो पत्रोत्तर नहि देल जाइछ । अतः एकरसताक अनुभव पाठककेँ होयब स्वाभाविक । मिथिला मिहिरमे **अंगरेजीफूलक चिट्ठी, बहिनाक विरोग** ओ **रामजोड़ी कागतक पाँखिपरकेर** प्रकाशनावधिमे एवं प्रकाशनोत्तरो कालमे एकर सभक भाव-प्रभावसँ सम्पन्न, उपर्युक्त दुहू धारावाहिक सहित बहुशः पत्रात्मक विधाक रचनासभ निरन्तर प्रकाशित होइत रहल जकर लेखिका किछु अपवाद छोड़ि, महिले लोकनि छलीह । प्रमाण स्वरूप किछु रचनाक सूची देल जा रहल अछि– लक्ष्मीनारायणठाकुर'ललित'–अवधवासी रामकेँ मिथिलासँ पत्र (5.3.'61); मालतीउपाध्याय, कबिलपुर– गुलाबक चिट्ठी : गंगाकातक कल्पवास (12.6.'61), कपिलेश्वरस्थान : फूलक चिट्ठी (26.11.'61), आकाशफलक चिट्ठी (3.6.'62), गुलाबक पत्र (8.6.'64); श्रीमतीरामकुमारीचौधरी– सरहोजिक पत्र (11.3.'62, 10.3.'63, 4.2.'68); शान्तिदेवी ड्पि-इन-एड-ज्ञानसागरक

नामे भौजीक पत्र (15.4.'62); श्रीमतीराज्यश्रीदेवी- पानक पात (20.5.'62); माधुरीझा, नेहरा- एक शिल्पहीन पत्र (27.3.'63); सावित्रीरानीसिन्हा- मायक चिट्ठी बेटाकेँ (28.4.'63); कुसुमलतादेवी, भौर- सासुक चिट्ठी पुतोहुकेँ (2.6.'63); श्रीमतीवीणाझा- पानक पाँती (29.9.'63), बहिनाक पाँती (26.1.'64, 5.7.'64); मंजुलाकुमारी-प्रीतमक पत्र (10.11.'63) –एहिमे 'जय मैथिली' सम्बोधन ध्यातव्य; रामानुग्रहझा- व्यासक नाम राधाक पत्र (12.4.'64); विमलादेवी- अनारक पत्र (31.1.'64); आशादेवी, बेरि-सिनेहक पत्र (19.4.'64); सुश्रीआभाझा- गंगाजलीक पत्र (2.8.'64); कलांशुशेखरचौधरी- तीन पत्र (23.8.'64) –एहिमे भाइक नामे बहिनिक पत्र अछि; रानीदेवी-गंगाजलीक पत्र (23.8.'64); गोविन्दझा, बम्बइ-एक पत्र : एक समर्पण (23.8.'64); केदारमणिझा- प्रेयसीक पत्र (13.9.'64); शेफालिकावर्मा- एकटा पत्र एकटा साँझ (17.7.'66) अन्तिम पत्र (30.4.'67); राजकमलचौधरी- परमप्रिय निरमोही बालम हम्मर प्रानपती (30.10.'66) प्रीताचौधरी- एक पत्र (20.8.'68) –एहि पत्रमे मोर्चा परसँ एक सैनिकक पत्र पत्नीक नाम; कुसुमलताझा- सीमाक पत्र (14.1.'68); प्रेमकलादेवी- कचनारक पत्र (22.9.'68); सीतादेवी- एक जीवन पाँचटा पत्र (8.12.'68); सुरेखाचौधरी- सरहोजिक चिट्ठी (2.3.'69); अर्चना-जनकजोड़ीक चिट्ठी (6.4.'69); मीराझा, मंगरौनी-कदमजोड़ी फूलक चिट्ठी (8.6.'69), गुलाबक चिट्ठी (8.7.'73); विनयानन्दझा-मार्मिक चिट्ठी (8.6.'69); चन्द्रमादेवीमुन्नू, मिर्जापुर- बहिनाक चिट्ठी (15.6.'69); सावित्रीदेवी, मिश्रटोला- सिनेहक पत्र (2.11.'69, 30.11.'69 एवं अनारकुम्मरिक छद्म नामसँ 31.6.'69, 28.6.'70, 19.7.'70); प्रियदर्शी –भावुक पत्र (18.2.'71); उर्मिलाझा-प्राणक नाम सिनेहक आखर (20.2.'77); अर्पणाचौधरी- एकटा पत्र (9.3.'86) इत्यादि इत्यादि।

किछु अपवादकेँ छोड़ि एहि पत्रात्मक साहित्यपर **अंगरेजीफूलक चिट्ठी, बहिनाक विरोग** ओ **रामजोड़ी कागतक पाँखिपर**केर शब्दावली, वाक्य-विन्यास, शैली, वाग्भंगिमा, ओ बहुशः परिवेशक गम्भीर प्रभाव देखल जाइछ। बहुत ठाम तँ नकले बूझि पड़ैछ। उदाहरणार्थ पूर्वोल्लिखित **सोनदाइक सोहाग** स्तम्भक सोनदाइ वास्तवमे पटनावाली **अंगरेजीफूल** ओ **सोनादाइ**क अनुकरण थिक। हमर तीनू पत्रात्मक स्तम्भ एवं एकर सरणि पर मैथिलीमे लिखित पत्रात्मक साहित्यसँ कथाकार ललित अत्यन्त असन्तुष्ट छलाह आ एकर उत्तरदायी हमरा मानैत छलाह। समसामयिक कथालेखनसँ सेहो असन्तुष्ट छलाह। एहने मानसिकतामे ओ हमरा एक गोट पत्र लिखने छलाह जाहिमे हमरहु पर आक्षेप छलनि। हम ओहि समयमे वैदेहीक कार्यकारी सम्पादक छलहुँ। ललितक पत्रमे मैथिली साहित्यक समसामयिक गतिविधिपर चिन्ता व्यक्ति कयल गेल छल तेँ ओकरा हम वैदेहीमे प्रकाशित कऽ देलिऐक। ओहि पत्रमे ललित लिखने छलाह– **...एम्हर मैथिली कथाक जे हालत मिथिला-मिहिर, दर्शन किंवा वैदेहीमे देखल से देखि हतप्रभे होइत छी। महाग सड़ियल कथा सभ... एखन मैथिली लेखक लोकनिक हाल लगइए जेना चारू कातक विराट**

परिवर्त्तनसँ अपनाकेँ फराक रखने– उएह **बहिना**, सरोता, पान कि सोनदाइक कथा-कलापमे लागल बाझल... ।

बहिना, सरोता, पान, सोनदाइक नामोल्लेख करैत उपहास ओ हेय भावना देखबैत काल अवश्ये ओ मिथिलाक नारी समाजक ओहि समयक शैक्षणिक स्तरकेँ बिसरि गेल छलाह । पत्रात्मक साहित्य मिथिलाक अधिकांश नारीवर्गकेँ मैथिली साहित्योन्मुखी बनबैत शिक्षित महिला वर्गमे साहित्य-सर्जनक उन्मेषक सृष्टि कयलक । एहि बातकेँ ललित आत्मसात् नहि कऽ सकलाह । एकर सभक विवेचन-मूल्यांकन तँ गम्भीर आलोचके करथि तँ नीक ।

रामजोड़ी कागतक पाँखिपरकेर पृष्ठभूमि, परिवेश ओ पात्र सब **अंगरेजी फूलक चिट्ठी** ओ **बहिनाक विरोग**सँ सर्वथा भिन्न अछि । एहि सिरीजमे वर्णित बीसम शताब्दीक छठम दशकक उतरार्द्धक ओ कालखण्ड थिक जाहिमे मिथिलाक्षेत्रमे कतोक लोक अपन कन्याकेँ, लगपासमे हाइस्कूलक सुविधा रहलापर पढ़यबाकलेल पठयबाक साहस करऽ लागल छल । **रामजोड़ी कागतक पाँखिपर**क पृष्ठभूमि ओ परिवेश थिकैक शहर सन देहात किंवा देहात सन शहर । एकर मुख्य पात्र सभ अछि किशोरी–पन्द्रहसँ बीस वर्षक वयसक एहन कुमारि कन्या सभ जे हाइस्कूलक छात्रा अछि ।

ओहि कालावधिमे हाइस्कूल सभमे नव शिक्षा–पद्धति एवं नवीन पाठ्यप्रणाली लागू भेल छलैक । स्कूलक सेसन जनवरीसँ दिसम्बरक बदलामे जूनसँ मइ धरि भऽ गेल छलैक । आठम वर्गसँ विज्ञानक पढ़ाइ आरम्भ भऽ गेल छलैक । छात्रकेँ विज्ञान आ कला, विज्ञानहुमे मैथेमेटिक्स ओ बायोलोजी विषयक चुनाव आठमे वर्गमे कऽ लियऽ पड़ैत छलैक । प्रत्येक स्कूलमे विज्ञान–शिक्षक ओ विज्ञान–प्रयोगशालाक रहब अनिवार्य जकाँ भऽ गेल छलैक । किछु औरो स्कूली पाठ्यचर्या सभक प्रचलन छलैक, यथा–सभकलेल अनिवार्य साप्ताहिक समाज सेवाक घंटी, प्रत्येक विषयमे अनिवार्य मासिक परीक्षा ओ एसेसमेंट लेखन जाहि आधारपर मैट्रिक्यूलेशन परीक्षामे प्रत्येक विषयमे बीस प्रतिशत अंक स्कूलक हेडमास्टर द्वारा प्रदान कयल जाइत छलैक । नवीन पाठ्य प्रणालीमे मातृभाषा पत्रमे मैथिली पढ़बाक अधिकार छात्र लोकनिकेँ भेटि गेल छलनि । अतः स्कूल सभमे मैथिली विषयक पढ़ाइक व्यवस्थाक निमित्त आन्दोलन चलैत रहैत छलैक । मैथिलीप्रेमी लोकनि परस्पर अभिवादनमे तथा पत्राचारमे **जय मैथिलीक** प्रयोग कयल करैत छलाह ।

एहि ठाम एहि विषयसभक किछु संकेत दऽ देब आवश्यक अछि, कारण **रामजोड़ी कागतक पाँखिपर**मे अनेक स्थलपर एकर सभक प्रसंग आयल अछि । अर्द्ध शताब्दीक पश्चात् ओहि परिस्थितिक बोधमे पाठककेँ किछु कठिनता भऽ सकैत छनि ।

रामजोड़ी कागतक पाँखिपरमे चारि गोट समवयस्का सखी–सहपाठिनी अछि– रेवा (रेवती), सोना (स्वर्णप्रभा), शारदा ओ परमीला (प्रमिला) । सोना देहातक स्कूल

छोड़ि पटना चल जाइछ जतऽ ओकर पिता सरकारी नोकरी करैत छथिन । ओकर माय सेहो पटनेमे रहैत छथिन । रेवा ओ सोनाक मध्य पारस्परिक पत्राचार होइत रहैत छैक । ओही पारस्परिक पत्रक माध्यमसँ कथानकक विकास सूचित होइत रहैत अछि । ओही संग किशोरावस्थाक नारी-मानसिकताक अभिव्यंजना; आन्तरिक ऊहापोह, उत्सुकता-विवशता, इच्छा-आकांक्षा, अनुराग-उपराग, रोष-तोष, रोच-सोच इत्यादिक रूपमे होइत रहैत छैक । त्रिकोणात्मक प्रेमक एकटा पातर सन झिलमिली आभास एहिमे छैक अवश्य परन्तु ओ पूर्णतः मुखर नहि भऽ संकेतित मात्र रहैत अछि ।

हमर अपन योजनानुसार ई स्तम्भ मिथिला मिहिरक तेसर वर्ष पूर्त्ति अर्थात् '63क सितम्बरक पहिल सप्ताह धरि चलैत रहब सम्भावित छल । 26म किस्तमे सोनाक पत्रमे ओकरा द्वारा देखल गेल स्वप्नक माध्यमे कथानकक भावी घटनाक्रमक आभास देल गेल अछि । एखन धरिक कथा-विकासमे शारदाक भाइक संग रेवाक विवाहक प्रसंगमे निश्चितता जकाँ बूझि पड़ैछ आ सोना ओही विश्वासक संग रेवाकेँ पत्रो लिखैत छैक । यदि स्तम्भ आगाँ चलैत रहैत तँ सहसा ई स्थिति पलटि जाइत । शारदाक भाइ इंजीनियरिंगमे कम्पीट कऽ जाइत । तखन अत्यन्त पैघ-पैघ कन्यागतक कथा ओकरा प्रति उपस्थित होमऽ लगैत । ओही क्रममे सोनाक पिता सेहो अपन कन्या सोनाक प्रति कथाक उपन्यास करितथिन । रेवा, सोना, शारदा आ ओकर भाइक मनमे तखन अपना-अपना रीतिक अन्तर्द्वन्द्व आरम्भ भऽ जैतैक । एहन स्थितिमे प्रमिला बोल्ड स्टेप लैत आ रेवाकेँ सान्त्वना दैत, शारदा आ ओकर भाइकेँ पूर्व निर्णय पर दृढ़ रहबाक साहस देखयबाक लेल कहैत आ सोनाकेँ रेवाक प्रति अपन त्याग देखयबाक प्रेरणा दैत । सोनाक मोनमे कहियो शारदाक भाइक प्रति प्रेमोदय भेल छलैक, तेँ किंचित् आमोदित होइत अवश्य परन्तु रेवाक प्रतिस्पर्द्धी होयबामे संकोचग्रस्त भऽ कऽ अन्तर्द्वन्द्वमे पड़ि जाइत । ओमहर प्रमिलाक द्वारा देल गेल उत्तेजक ओ नैतिक विचारसँ प्रभावित भऽ सोना साहस देखबैत आ अपना मायकेँ ने केवल अपन अस्वीकृतिक सूचना दैत अपितु प्रमिलाक माध्यमसँ शारदा एवं ओकर भाइकेँ रेवाक प्रति अपन ओ परिवारक पूर्व निर्णय पर दृढ़ रहबाक प्रेरणा दैत । एहि तरहेँ प्रच्छन्न भावसँ आत्मत्याग करैत सखिधर्मक निर्वाह करैत ।

बोल्ड स्वभाववाली प्रमिलाक द्वारा समस्याक समाधानक दिशामे सक्रिय उद्योगक किछु ने किछु परिणति तँ होयबे करितैक । तथापि जतबहि अंश प्रकाशित भऽ सकल से अपनामे पूर्ण अछि । पाठक सोचैत रहथु जे रेवाक विवाह शारदाक भाइक संग सम्पन्न भेलैक, की नहि । सोना ओहि अवसरपर आबि सकलि वा नहि ।

रामजोड़ी कागतक पाँखिपर स्तम्भ लिखबाक क्रममे प्रसंगसँ हटि हम उल्लेख करऽ चाहब जे ई स्तम्भ हमर कय गोट कथाक थीम देलक । रेवाक दिससँ दुर्गा पूजाक प्रसंग-गर्भित तेसर किस्तमे दूटा पत्र लिखा गेल, दुनू दू तरहक ! एकटा तँ मिहिरकेँ पठा

देलिऐक आ दोसरकेँ पश्चात् अपन **नारिकेर** कथामे कथागर्भ पत्रक रूपमे उपयोग कयल। प्रमिलाक चरित्र एहि स्तम्भमे स्वतन्त्र विकास नहि पाबि सकलैक। अतः ओकर चरित्रक एकटा अंशकेँ आधार बनाय **परमिलिया** कथाक सृष्टि भेल। एहिना हमर कथा **जलक तल पर लिखल नाम**क दमित प्रेमक थीम एही स्तम्भसँ निःसृत भऽ कऽ अचेतन मनमे आबि बैसि गेल जे पश्चात् उक्त कथाक रूपमे अभिव्यक्ति पौलक।

एक बातक उल्लेख करऽ चाहब जे **रामजोड़ी कागतक पाँखिपर** स्तम्भक बहुशः पत्रमे अपन पत्नी योगमायाझा ओ हुनक छोटि बहीन सावित्रीकुमारीक द्वारा अपन स्कूली जीवनक संगी-सखी सभक सम्बन्धमे देल गेल टिप्सक कतहु यथावत् आ कतहु-कतहु किछु हेर-फेर कऽ प्रचुर सन्निवेश भेल छल। एहि हेतु हुनका सभक प्रति हमरा आभारी रहबाक चाही।

रामजोड़ी कागतक पाँखिपर कथमपि पुस्तकाकार नहि भऽ पबैत जँ हमर माँझिल बालक पत्रकार श्रीशंकरदेवझा सभ सामग्रीकेँ ताकि-हेरि झाड़ि-झूड़ि कऽ व्यवस्थित रूप दऽ प्रेस धरि नहि पहुँचबितथि।

हमरा एहि बातक अत्यन्त प्रसन्नता आ सन्तोष भऽ रहल अछि जे हमरा द्वारा लिखित **अंगरेजीफूलक चिट्ठी, बहिनाक विरोग** तथा **रामजोड़ी कागतक पाँखिपर** नामक स्तम्भाकार पत्र-शृंखला चारि दशकक बाद पुस्तकक आकार ग्रहण कयलक अछि। एहि कार्यमे विधि वा निषेधहु रूपमे सहयोग देनिहार इष्ट-अनिष्ट-अशिष्ट सकल महानुभाव लोकनिक प्रति आभारी छियनि।

श्रीरामदेवझा
सदस्य, साहित्य अकादेमी
नई दिल्ली

विवाह-पंचमी
9 दिसम्बर, 2002 इ.
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा- 846001

श्री सुधांशु 'शेखर' चौधरी
सम्पादक, मिथिला मिहिर

मजहरुलहक पथ, पटना—१
तिथि 30/6/ १९६३

प्रोफेसर श्री रामदेव झाकेँ हम हुनक छात्र-जीवनसँ नीक जकाँ जनैत छियनि। ओ ज्ञान-पिपासु रहबाक कारणे आरंभेसँ अपन प्रतिभाकेँ मँजैत-चमकबैत अयलाह अछि। मातृभाषा मैथिलीक प्रति हुनक सहज स्नेह हुनक कार्य-क्षेत्रकेँ विशाल बना देने छनि। निबन्ध, नाटक, कविता ओ कथाक क्षेत्रमे तँ हुनक प्रतिभा नीक जकाँ प्रतिभासित भेले अछि, संगहि अनुसंधानक क्षेत्रमे सेहो हुनक दृष्टि अत्यन्त सूक्ष्म रहलनि अछि। वस्तुतः एतेक अल्प वयसमे अपन प्रतिभा ओ अध्यवसायक बलेँ मैथिली-जगतक विद्वत्-समाजमे ओ अपन नीक स्थान बना लेने छथि।

मिथिलामिहिरक तँ ओ लेखक रहबे कयलाह अछि, विशेषतया हुनक लिखल मिथिला मिहिरक स्थायी स्तंभ 'अंगरेजी फूलक चिट्ठी', 'बहिनाक विरोग' ओ 'रामजोड़ी कागतक पाँखिपर' आदि समाजमे विशेष आदर पौलकनि अछि।

हमर दृढ़ धारणा अछि, हिनक सदृश दृढ़ चरित्र, बहुमुख प्रतिभासम्पन्न ओ अध्यवसायी व्यक्तित्व बड़ विरल देखल जाइत अछि। हम विश्वासक संग कहि सकैत छी, ई जाहि संस्थामे जयताह रहताह से अवश्यमेव चमकि उठत। हम हिनक सुन्दर भविष्यक आकांक्षी छी।

सुधांशु 'शेखर' चौधरी
30/6/63

रामजोड़ी कागतक पाँखिपर

1 **गय रामजोड़ी ! जय मैथिली !**

तोँ एहि ठामसँ चल गेलेँ । गेलेँ तँ सरिया कऽ बिसरिये गेलेँ । आ बिसरबेँ कोना नहि ? पटना सहर, चारू कात खूब देखऽ-सूनऽवला वस्तु सभ, ओहि चहल-पहलमे हम कोना मोन रहबौक ?

कोना-कोना ओतऽ पहुँचलेँ, नाम-ताम लिखौलेँ कि नहि ? ओहि ठामक लोकबेद केहन, बजार-हाट केहन ? स्कूल-सभ केहन, से सभ लिखितेँ ने । गय ! जिनगीमे हमरा सभकेँ तँ सेहन्ते लागल रहत जे पटना देखी । तोरा सनि भागमन्ति के होयत ? तोहर बाबूजी तँ ओतऽ पटनामे पैघ औफीसर छथुन तेँ तोँ गेलेँ । भरि पोख देखबेँ-सुनबेँ । हमरा भाग्यमे से सभ कहाँ अछि । एहि ठाम तँ भिनसरसँ साँझ धरि कोनो-ने-कोनो काजमे 'बीजिए' रहऽ पड़ैत अछि । देखहिन ने । घरक लोककेँ एको रत्ती फिकिरे ने जे हमरा स्कूलक टास्को बनयबाक अछि । से नहि बनौने बेंचोपर ठाढ़ि होमऽ पड़ैत अछि । से बुझन्ता केओ ने । गय, हमरो जिनगी की जिनगी अछि ? एकटा जिनगी छौक तोहर जे एहू ठाम राजकुम्मरि जकाँ रहैत छलेँ, आ ओहू ठाम रहबेँ ।

हे गय ! तोँ कहबेँ जे रामजोड़ीकेँ एको रत्ती शिष्टाचार नहि अबैत छैक तेँ ने एना लिखैत अछि ! गय, हमरो-तोरामे कोनो शिष्टाचार निमाहल जाय से हम नहि चाहैत छी । तोँ एहि ठाम छलीह तँ कतेक रंग-बिरंगक गप्प, देश-दुनियाक गप्प करैत छलहुँ ? मुदा आब तँ एकसरिये रहैत छी । तोँ तँ जनिते छेँ जे हमरा आन छौंड़ी सभसँ ओतेक संग नहि रहैत अछि । ओ सभ किछु विचित्र तरहक लोक । जखन कखनो एकट्ठा होयत तँ विचित्रे-विचित्रे गप्प सभ करऽ लागत । हमरा ओना रहसि-रहसि कऽ गप्प नहि करऽ अबैत अछि । गय ! स्कूलमे पढ़ैत छी तँ सभ लाज-लेहाज छोड़ि दी से कहाँ लिखल छैक कोनो पोथीमे ? हमर माय जँ सूनि लेति कि बूझि जायति तँ कोनो दशा बाँकी नहि छोड़ति । तुरन्ते बाबूजीकेँ फरमान दऽ देतनि जे पढ़नाइ छोड़ा दियौक ।

गय रामजोड़ी ! तोँ जे चल गेलेँ से कतेक दुख भेल तकर वर्णन नहि कऽ सकैत

छियौक । ओहि दिन, हम कनिते रही । कथूमे मोने ने लगैत छल । होअय जे खूब कानी । मोने-मोन सोचैत रही जे हम सभ लगौलहुँ 'रामजोड़ी' आ भऽ गेलहुँ बिजोड़ी । राति भरि निन्नो ने भेल । माय कहय जे –गय, एना छटपट किएक करैत छेँ ? निन्न नहि होइत छौक ? मोन खराब छौक की ? हम कहलिऐक जे– हँ, सौंसे देह टटाइत अछि, माथ भारी लगैत अछि ।' माय हमर माथ छुबैत कहलक जे देह तँ एकदम सुद्ध छौक । एना माथ किएक दुखाइत छौक ? देह जाँति दियौक ?'

–नहि ।' हम कहलिऐक ।

–माथ दबा दियौक ?

–नहि ।

–सभ बातमे नहि-नहि-नहि ।' ओ तमसा गेलि । उठि कऽ शंकरबाम लऽ आयलि आ हमरा माथमे रगड़ऽ लागलि । हमर सौंसे माथ चुनचुनाय लागल । आँखि कड़ुआ गेल । भेल जे ई अपनहिसँ कोन बलाय बेसाहि लेलहुँ ।

माय मारि भनभनाय लागलि– दिनमे कहलियौक जे माथसँ नहि नहो । केश भीजि जयतौक तँ माथ भारी भऽ जयतौक । मुदा हमरा बातकेँ मोजर दैँयि तखन ने । दू अच्छर पढ़ऽ आबि गेलौक कि हम सभ बताहिये भऽ गेलहुँ ।

गय ! टास्क तँ हम बनौनहि ने रही । एसेसमेंट सेहो ने भरल छल । माय सेहो मना कऽ देलक । कहलक– नहि कोनो काज छैक इसकुल-फिसकुल जयबाक । रह गामेपर ।' से ओहि दिन स्कूल नहि गेलहुँ । फल ई भेल जे ओहि दिन मैथिलीक मंथली एग्जामिनेशन भऽ गेलैक । एकटा परीक्षा छूटिये गेल । गय रामजोड़ी ! तकरा परात भेने स्कूल गेलहुँ तँ सभ पूछऽ लागलि– अय जी ! स्वर्णप्रभा चली गयी ?'

ततेक गोटे ने पूछऽ लागल जे भेल जे आँखि मूनि कऽ बजिते रही जे– हाँ-हाँ हाँ, चली गयी ! चली गयी !! चली गयी !!!' परमीला कय दिनसँ स्कूल नहि अबैत छलैक । से, ओहि दिन ओ आयलि तँ हमरा एकसरे देखि लऽगमे आबि कऽ पुछलक– हय रेवती ! तोरा एकसरिये देखिैत छियह ? सोना कतऽ छह ? मोन खराब छैक ?'

हमरा बुकौर लागि गेल । भेल जे कानऽ लागी ! लोक हमरा-तोरा सदिखन संग देखि कहैत छलि– इह, लगैत छैक केहन, जेना जौंआँ बहीनि रहय ।' से, हम आब एकसरिये छी । परमीला हमरा देहपर अपन हाथ राखि कऽ बड़ सिनेहसँ पुछलक जे– हय रेवा ! एना उदास किएक छह ? सोनाकेँ की भेलैक ?' एहिपर हम कोनहुना कऽ तोहर पटना जयबाक गप्प कहलिऐक । एहिपर ओहो उदास भऽ गेलि । ओ बाजलि जे– कहू, सोना एक बेर हमर भेंटो ने कयलक ।' परमीला अछि तँ मोखतारेसाहेबक बेटी ने ! आ तमतमायलि सन बाजलि– कनेक हमरा ओहि ठाम आबि कऽ मीलि लैत, कि हमरे

समाद दैत तँ की अमला ओछ भऽ जैतैक ? हमरा लोकनि तँ ओतेक पैघ लोक नहि छी, तखन कोना भेंट करैत ? बड़ अपस्वार्थी अछि सोना !

हमरा बूझि पड़ल जे ओकरा बड़ दुख भेलैक । गय, तोँहू तँ भेंट कऽ लितही ने । सत्ते, बेचारी बड़ नीक छैक । हम तँ ओकर पपनी भीजल स्पष्टे देखलिऐक । ओ फेर कहलक– हय रेवा ! तोँ चिट्ठी तँ लिखबे करबहक, लिखि दिहक जे 'परमिलिया बिदाक नमस्ते' कहलकह अछि । गय रामजोड़ी, तोरा बिना हम बड़ विकल छी । तोँ चिट्ठी अवश्य दिहेँ, तुरन्ते । कुशल-मंगल लिखिहेँ । **तोहर रामजोड़ी –रेवा**

2

हय रामजोड़ी, जय मैथिली !

हमरा लोकनि कुशलपूर्वक छी । तोहर कुशल भगवतीसँ मनबैत रहैत छी । तोहर चिट्ठी हमरा भेटल । पढ़ि कऽ मोन आनन्दित भेल, संगहि लाज सेहो भेल । वास्तवमे पहिने हमरे चिट्ठी लिखबाक चाही ।

हय रामजोड़ी, बात ई भेलैक जे गामसँ एहि ठाम आबि कऽ मोन ततेक थाकि गेल जे तीन दिन धरि बुझह जे बेहोसे जकाँ रही । एकदम निन्नसँ मातलि । बाबूजी कहथि जे सोनदाइ गामसँ मोटरी बान्हि कऽ निन्न लेने अयलीह अछि । हमरा कहथि– हय सोना, थोड़ेक हमरो सभकेँ निन्न दैह ने !' भाइजी कालेजसँ आबि कऽ हमरा देहपर पानि ढारि दैत छलाह । माय कहैत छलि जे– गय, गामपर एहिना सुतलि रहैत छलेँ ?' हय रामजोड़ी ! माय बाजलि जे- एना सुतनमी बनब कोन नीक बात छौक गय ?' आरो किदन सभ बाजलि । हमरा बड़ लाज भेल, से ओहि दिनसँ सप्पत खा लेलहुँ जे आब नहि सूतब ।

हय, पटना अयबा लेल मोनमे कतेक ऊड़ी-बीड़ी लागल छल ? मुदा एहि ठाम आबि कऽ सभ हिलस खतम भऽ गेल । सहर पैघ छैक अवश्य, मुदा ओहने सन जेहन दरभंगा छैक । एहि ठाम लोक बहूत, मोटर, बस, रिक्सा बड्ड बेसी । भरि दिन हर्र...हुर्र...घर्र...घों करैत रहत । कान तँ एतबे दिनमे बहीर भऽ गेल । बाटपर निश्चिन्त भऽकऽ नहि चलि सकैत छी । सदिखन बुझि पड़ैत छैक जे कोम्हरोसँ कोनो गाड़ी आबि कऽ पिचिये देत ।

एहि ठामक जीवनसँ अपने ओहि ठामक जीवन नीक । एहि ठाम लोक एकदम गल्ली-कुच्चीमे रहैत छैक । नाली सभमे सड़ल गलीज भरल रहैत छैक । दुर्गन्धिसँ मोन सदिखन हौँड़ैत रहैत छैक । तोँ अपना आँखियेँ देखबहक तँ आश्चर्य लगतह जे लोककेँ कोना एहि सभमे रहल जाइत छैक । मकानक एहि ठाम बड़ सिकस्ती छैक । कय-कय बरख धरि लोककेँ मकान मोन जोग नहि भेटैत छैक ।

आब तोँही कहह जे एहनो स्थानमे मोन प्रसन्न भऽ कऽ रहऽवला छैक ? मुदा आश्चर्य होयतह जे लोक तैयो एहि ठामक एहि नरकमे खुसीसँ रहैत छैक ।

हमरा तँ आब होइत अछि जे भने छलहुँ गामेमे । एहि ठाम सभ काज नापिये-तौलि कऽ होइत छैक । गामपर छलहुँ तँ बाबी लगमे सुतैत छलीह । हम हुनका छातीमे सटि कऽ

सूति रही । अहल भोरे उठा दैत छलीह । एहि ठाम नहि नीक लगैत अछि । बाबी बिना मोन नहि लगैत अछि । एक दिन–दू दिन माय लगमे सुतैत छलि । मुदा आब एकसरिये पछबरिया कोनवला कोठलीमे सुतैत छी । लोक़ एहि ठाम सात बजेसँ पहिने उठबे ने करैत छैक । हम भोरेमे ऊठि कऽ ओछाओनपर ठेहुनपर माथ देने बैसलि रहैत छी । भोरे ऊठि कऽ काजे कोन करी ? 'हाटक चाउर बाटक पानि' से कोनो विशेष झंझटि नहिये ने । एहि ठाम तँ संगियो–साथी केओ ने । तोरापर मोन लागल रहैत अछि । फेर आब कहिया भेट होयत से नहि कहि । हय, हम एक दिन कानऽ लगलहुँ । माय कहलक जे– किएक कनैत छें ?' हम कहलिऐक जे– हम अपना गाम जायब । बाबी हमरा लेल मारि कनैत होयतीह ।'

–अयँ गे ! बाबीये तोहर सभ किछु छथुन ? हम तोहर माय नहि छियौक ।' माय हमर नोर पोछैत क़हलक– हम तोरा नहि नीक लगैत छियौक ?' हम 'हँ'मे मूड़ी डोला देलिऐक । एहिपर माय कहलक– तखन एना किएक करैत छें ?

–हमरा एहि ठाम नहि नीक लगैत अछि ।' हम कहलिऐक ।

–ए माँ ! कहू !! लोक पटनामे रहबा लेल कबुला–पाती करैत अछि आ तोरा नहि नीक लगैत छौक ?

–हमरा बाबी बिना नहि नीक लगैत अछि ।' सत्ते, बाबी हमरा कतेक मानैत छथि से तँ तों जनैत छह, मुदा हम मायकें कोना बुझबियौक ।

तों बाबीसँ भेट कयलहुन अछि की नहि ? हमर कय गोट किताब गामेपर छूटि गेल । तों ताकि कऽ अपना लग राखि लिहह, ताबत ओहीसँ पढ़िहह । एहि ठाम एखन हमर नाम नहि लिखाओल गेल अछि । देखी, कोन स्कूलमे जाइत छी । परमीला हमरासँ नराज भऽ गेलि अछि । चलबा काल हम ओकरासँ नहि भेट कऽ सकलिऐक । बड़ धड़फड़ी भऽ गेलैक ने ।

हय रामजोड़ी, पैघ आ छोट लोकक तँ कोनो गप्प नहि छैक । परमीलाकें एहन नहि सोचबाक चाहिऐक । ओ जे हमरा स्वार्थी कहलक से कहि सकैत अछि । एसेसमेंट बनयबामे हमर बड़ उपकार कयने अछि । ओकरा हम नहि बिसरबैक । हमरासँ जे अपराध भेलैक तकरा लेल हम ओकरासँ माफी मङैत छिऐक । तों कहि दिहक । हय, ओ आरो किछु गप्प नहि कहलकह ? ओकर दूटा कौपी आ एकटा किताब हमरे लगमे छैक । तों हमरा ओछाओनपर सिरममे दहिन कात तोसक तऽरमे तकिहक । ओहि ठाम राखल छैक । से लऽ कऽ दऽ दिहक । आरो, हमरो नमस्ते कहि दिहक ।

एकटा बात आरो लिखैत छियह । शारदाक थोड़े पाइ हम पैंच लेने छलिऐक । प्रायः दस आना होयतैक । हमरा बाबीसँ माङि कऽ ओकरा दऽ दिहक, ने तँ कहति जे स्वर्णप्रभा हमर पाइ पचा लेलक । हमर एकटा रुमाल ओकरे लगमे होयत से तों लऽ लिहह । ओकर कसीदाक नमूना उतारबा लेल हमरासँ लेने छलि । स्कूलक हालचालक संग चिट्ठीक उतारा दिहह । बिसरिहह नहि । तोरे बाट तकैत रहबह । **तोरे रामजोड़ी –सोना**

3 गय रामजोड़ी ! जय मैथिली !

तोहर चिट्ठी भेटल । मोनमे तेहने खुसी भेल जेना भमराकेँ फूलकेँ देखि कऽ होइत छैक । पियासलि गायकेँ पानि देखि कऽ होइत छैक । एतेक जल्दी. हमरा उतारा देबेँ से आशा नहि छल । होइत छल जे ओहि ठाम जा कऽ की हमरा सभकेँ मोन रखबेँ । परमीला ओहि दिन हमरा कहबो कयलक जे– हय रेवा ! सोना अछि पैघ लोक । एहि ठाम छलि तँ हम सभ संगी छलहुँ, मुदा ओहि ठाम जा कऽ की हमरा सभकेँ मोन राखति । जँ मोन राखय तँ अपन भाग्य सराही ।' मुदा तोहर चिट्ठी पाबि कऽ जे कनेक विखाद पहिने भऽ गेल छल से बिला गेल ।

हम तँ फेर कहलिऐक जे– हय परी ! तोहर बात ठीक नहि उतरैत छह । हमर रामजोड़ी केहन शीलवन्ति अछि तकर प्रमाण हम देखा दैत छियह ।

ओ बाजलि जे –व्याकरणमे नियम आ ओकर अपवाद दुनू होइत छैक । नियम हम कहि देलियह । तोँ ओकर अपवाद दैह तँ हम अपना नियममे ओहि अपवादकेँ जोड़ि लेब ।' फेर ओ बाजलि जे –सुनह, हम तँ बाबूजीक मुँहसँ सुनल गप्प कहलियह । हमरा सोनासँ कोनो अक्खज नहि अछि । सरिपहुँ ओ नीक लोक अछि, एहिमे सन्देह नहि । मुदा नीक आ अधलाह होयब तँ संगतिपर निर्भर छैक ।

हम कहलिऐक– से कोना हय ? जे नीक रहत से अधलाह कोना होयत ?

ओ बाजलि– छोड़ह विवाद । आब थोड़ेक कालमे टिफिन खतम भऽ जयतैक । कहह जे सोनाक कोनो चिट्ठी-पत्री अयलह अछि ?

–सैह तँ हम कहैत छलियह जे हमर रामजोड़ी बड़ नीक लोक अछि । देखह, हमर चिट्ठीक उतारा तुरन्त देलक । आ तोरा दऽ की सभ लिखलकह अछि !'

हम तोहरवला चिट्ठी बढ़ा देलिऐक ।

ओ हबर-हबर चिट्ठी खोलि कऽ पढ़ऽ लागलि । पढ़ैत-पढ़ैत आँखि नोरा गेलैक । ओ बाजलि– हय रेवा ! तोँ केहन लोक छह जे ~~हमरवला कथा~~ लीखि देलहक । कतेक दुख भेल होयतैक ? हम तँ खाली नमस्ते लिखऽ लेल कहने छलियह ।

ओ हमरापर कने रुष्ट जकाँ भऽ गेलि । हम कहलिऐक जे –तोहर किताब आ कापी ओकरा लग रहि गेलह से हमरा कहियो कहबो ने कयलह ।'

एहिपर परमीला हमरा कहलक जे– ओतेक छोट वस्तु लेल हम उपराग दितियह । तोँही अपना मोनमे की सोचितह जे परमीला कतेक ओछि अछि ? सोनाक मोनमे सेहो दुःख होइतैक । ओकरा गेलापर पोथीक तगादा करबाक माने भेल ई कहब जे सोना हमर पोथी पचा लेलक आ पड़ा गेलि । ई तँ शिष्टाचारक विरुद्ध बात भेल ।

—हय परी ! अपन वस्तु मङबामे शिष्टाचार की ? हमर वस्तु अछि से लेब ।' हम कहलिऐक ।

—हमर पोथी ओकरा लग रहि जाइत तँ की होइत ? कमसँ कम पोथी देखला उत्तर हम तँ मोन पड़ितिऐक । मोने-मोने कहैत जे परमीलाक पोथी थिकैक ।

ओ फेर हमरा कहलक जे —हमरा भूख लागल अछि । आइ सबेरे भानस नहि भेलैक से बिनु खयनहि चल अयलिऐक ।' ओ चिनियाँबदामवलाकेँ बजौलकैक आ दू आनाक चारिटा बदामक ठोङी कीनि कऽ दूटा हमरा आगाँमे दऽ देलक आ दूटा अपने रखलक ।

हम कहलिऐक— तोँ आइ खयलह नहि तेँ बदाम तोँही खाह ।

—भक् । बदामसँ पेट भरैत छैक ? अनमानालेल एकटा साधन भेटि गेलैक अछि । तोँहू खाह, हमहूँ खाइत छी । खूब गप्प करैत छी संग-संग ।

—घंटी बाजि जयतैक से ?

—हुँह ! हमरा एखने मोन पड़ल अछि, एखन समाज-सेवाक घंटी छैक । हमरालोकनि एही ठाम बैसि कऽ समाज सेवा करी ।' हम दुनू गोटा बदाम फोड़ऽ लगलहुँ ।

परमीला हमरा कहलक जे– हय रेवा ! तोरासँ गप्प करबा कालमे कहलियह जे सोना बड़ अपस्वार्थी अछि, से तोँ लीखि देलहक । ओ बुझने होयति जे परमिला अपन पोथी आ कापी दुआरेँ कहलक । असलमे हमर कहबाक अर्थ दोसर छल । ओकरा पटना जयबाक स्वार्थ छलैक, ताहिसँ भेटो नहि कयलक । ओकरासँ हमरा बड़ सिनेह अछि तेँ कहलिऐक ।' हम गटर-गटर सुनैत रही । ओ जखन बाजऽ लगैत छैक, बूझि पड़ैत छैक जेना कोनो नेता बजैत हो । हमरा सभसँ बेसी अवगति छैक ओकरा बजबाक-भुकबाक । हमरालोकनि बजबामे बीचेमे अकबका जायब ।

गय रामजोड़ी ! परमीलासँ जे गप्प भेल से हम लिखि देलियौक । आब तोँ ओकरा सम्बन्धमे जे बूझ । मोन एको रत्ती नहि लगैत अछि । एकसरि औआइत-टौआइत रहैत छी । तोरा आङन हम नहि जा सकलियौक अछि । आङनक काजसँ फुरसतिये नहि होइत अछि ।

गय रामजोड़ी ! दुर्गापूजामे स्कूल बन्द भऽ गेलैक । स्कूलो जयबाक जे अनमना रहैत छल सेहो खतम भऽ गेल । तोरा बिना एको रत्ती नहि नीक लगैत अछि । भगवतीस्थान एकसरे जाइत नीक नहि लगैत अछि, तोँ रहैत छलेँ तँ केहन बढ़ियाँ दुनू बहिनियाँ घाड़ाजोड़ी कऽ कऽ जाइत छलहुँ । साँझमे माय दीप दऽ अयबाकलेल कहैत अछि तँ जाइत छी । रीता, वीना, गनौरी सभ रहैत अछि, मुदा तोरा बिना सभ उदास ।

एहू बेर नाटक ई सभ होयतैक । स्टेज गाड़ल गेलैक अछि । एकटा बात खुसीक ई जे एहि बेर चारू दिन मैथिलीए नाटक होयतैक । बड़ नीक लगतैक देखबामे । आ कि नहि ? अपना सभक बीचमे तँ अपने बोलीमे ने ई नाटक होयबाक चाही ? से नाटकमे

देखैत छिऐक जे अकलेलो-बकलेल छौंड़ासभ हिन्दीमे पार्ट करत । बड़ कठाइन लगैत अछि ! से भेल ने एहि बेर खुसीक गप्प ! मुदा दुखक गप्प एतबे जे एहि बेर मायक औडर छैक जे नहि कोनो. काज छैक कतहु नाच-तामाशा देखबाक ।

आन बेर अपने कहैत छलि नाटक देखऽ जायलेल आ एहि बेर की भेलैक से नहि बुझैत छिऐक । जेना कोनो पहाड़ टूटि जयतैक । एक बेर नहुएँ कहि देलिऐक— मैथिली नाटक होयतैक । माय तामसे आन्हर भऽ गेलि— गय, आब नाटक-फाटक देखऽवाली छेँ ?' आर की कहाँ । हम दम सधने रहलहुँ ।

तोँ पटनामे की सब करैत छेँ ? पटना आखिर पटने थिकैक । खूब घुमैत-फिरैत होयबेँ । कोन-कोन सिनेमा देखलेँ अछि ? हम तँ पटना नहियेँ देखि सकब जिनगीमे । तखन तोँही जे कहबेँ ताहीसँ सन्तोख करब । गय, पटना लगमे तँ कोनो तीर्थो नहि छैक जे ओहू बहन्ने लोक पटना देखि आओत । दुर्गापूजा ओहि ठाम केहन ? खूब खेल-तमाशा होइत होयतैक ? तोँ जे लिखलेँ, पटना बड़ गन्दा शहर, से हमरा एकदम फूसि लगैत अछि । जे बिहारक राजधानी छैक, जाहि ठाम मारि मिनिस्टर आ बड़का-बड़का हाकिम-हुकुम रहैत छैक, से कतहु ओतेक गन्दा रहय ? गय, बेसी फूसि नहि बाजी ।

शारदाकेँ आइ चारिम दिन थिकैक, स्कूल नहिं अबैत अछि । प्रायः काल्हि-परसूसँ औतैक, तखन कहबैक । तोरा गामपरक कुशल-मंगल नीके छौक । तोहर बाबी हमरा समाद देने छलथुन । तोँ चिट्ठीक उतारा तुरन्त दिहेँ । **तोरे रामजोड़ी —रेवा**

4

हय रामजोड़ी ! जय मैथिली !

तोहर चिट्ठी हमरा भेटल तँ भेल जेना कोनो हुड़िया भेटि गेल हो । तोँ हमरा कतेक मानैत छह से एहीसँ बुझलहुँ जे तोँ चिट्ठी पबैत देरी ओकर उतारा देलह । हमरा लोकनिकेँ आब कहिया भेंट-घाँट होयत से नहि कहि । तखन तँ एही उज्जर-उज्जर कागतक हंसापंखीपर चढ़ि कऽ हमरा सभक मोन मिलैत रहत ।

हय रामजोड़ी, एहि ठाम दुर्गापूजाक हूलिमालि बड़ बेसी । मोहल्ले-मोहल्ले दुर्गापूजाक सामाजामा । बेस धमाचौखड़ी रहैत छैक । लाउडस्पीकर तँ अनघोल कयने रहैत छैक । तेहन हल्ला होइत रहैत छैक जे कोनो गीतक आखर बूझब कठिन । हय, एक गोट बात विचित्रे लागल । पूजा करैत जायत माता दुर्गाक आ गीतक रेकर्ड सभ जे बजाओत से विचित्रे सभ । सूनि कऽ जेना जी ओकिया जयतह । सिनेमाक खाली छौंड़ी-छौंड़ाक गीत । कोनो गीत बजौतैक तँ ओहिमे 'प्यार' जरूरे रहतैक । सौंसे सहरमे सदिखन मेले रहैत छैक एखन आ कालेजक लड़की सभ झुंडक झुंड तमासा देखबामे व्यस्त । ओकरा पाछाँ लुच्चा-लफन्दर-सभक झुंड । कोना नीक लगैत छैक ओकरा सभकेँ !

हय, सत्त पूछह तँ हमरा जनैत एहि ठाम लोक देवी दुर्गाक पूजा नहि कऽ आधुनिका देवीक पूजा करैत अछि । लुच्चा-लफन्दरकलेल तँ सोराजे रहैत छैक ।

रातुक रमन–चमनमे जँ बिजली फेल भऽ गेलैक तँ बूझह जे जुलुम भऽ जाइत छैक। गान्धी मैदानमे रावण सभक पैघ–पैघ मूरुत बनैत छैक। रामलीला होइत छैक। आ ओहि रावण आ कुम्भकरण आ आन–आन मूरुत सभकेँ जराओल जाइत छैक। बूझह जे टाकाकेँ धूनी कयल जाइत छैक। अपना सभक ओहि ठाम ई रामलीला ई – सभ कहाँ होइत छैक ? एहू ठाम दू–तीने बरखसँ सुरू भेलैक अछि। सत्त पूछह तँ लोक एहि ठाम पूजा कम करैत अछि आ धूजा बेसी उधियबैत अछि।

नीक अछि अपने सभक ओहि ठामक पूजा। ओहि ठामक जे पूजाक मर्यादा छैक तकर धोअनो एहि ठाम नहि। मोन होइत अछि जे कोन पापेँ एहि ठाम अयलहुँ ! गाममे रहितहुँ तँ कतेक हँसी–खुसीसँ पूजाछुट्टी बीतैत। हम कतहु जाइत नहि छी। नीके ने लगैत अछि तँ की करू। ओहि मेला–ठेलामे के जाओ। हमरा डऽर होइत अछि।

हय, एहि ठाम तँ बूझि पड़ैत अछि जेना दम फुलैत हो। ओना कहह तँ मनोरंजनक साधनक अभाव नहि छैक। मुदा हम सभ भेलहुँ देहाती। गमैया लोक। कोना कऽ नीक लागओ एहि ठाम। ओहि दिन भाइजीक संग पटना मार्केट गेलहुँ बुलबाक लेल। सभ वस्तु किनबेक योग्य, मुदा कीनैत बड़ कम्मे लोककेँ देखलिऐक। लोक बड्ड, मुदा सभ खाली घुमैत–फिरैत। अपनो सभसँ बेसी समर्थि छौंड़ी सभक झुंड। भाइजीकेँ पुछलियनि जे ई सभ के थिकैक।' भाइजी एकटा दोकानपर ठाढ़ि गुलाबी रंगक साड़ीवाली छौंड़ी दिस तकैत छलथिन। हमरा टोकैत देरी ओ तमसा गेलाह– देहातीपनी एखन धरि तोहर नहि गेलौक अछि ? एना सभ वस्तु दऽ पुछैत रहबेँ तँ आब कतहु ने लऽ जयबौक। देखैत नहि छहिन जे ओ सभ कालेजक लड़की थिकैक। ओ सभ केहन फरहर जकाँ घुमैत छैक आ तोँ तीतल बिलाड़ि जकाँ छेँ।

हय, हमर मोन तँ कानऽ–कानऽ सन भऽ गेल। सत्ते, हम सभ देहातिन छी तँ तुरन्ते सहरिन कोना भऽ जायब ? से भेल हमरा बुतेँ नहि पार लागत। हमरा पटना मार्केटमे कोना दन लागल। कोना ओकरा सभकेँ निर्लज्जि जकाँ घुमैत नीक लगैत छलैक ! कालेजिया छौंड़ा सभ भमरा जकाँ ओकरे सभक पछोड़ धयने। हमर देह लाजसँ आ डऽरसँ काँटो–काँट भेल। भाइजी थोड़ेक कालक बाद हमरा पुछलनि जे –किनबेँ किछु ?'

हम तँ पड़ा जाय चाहैत छलहुँ। हम कहलियनि– नहि, आब डेरा चलू।'

हय, एतबेमे बूझि पड़ल जे दहिना कात तीन–चारि गोट लोक सूटबूटमे ठाढ़। भाइजी दोकानमे चल गेलथिन किछु कीनऽ। हम एकसरि ठाढ़ि रही। तावतमे कहैत सुनलिऐक– धुत, अभी बच्ची है !

–हूँ, नई नई देहात से आई मालूम होती है।' हमरा तँ सौंसे देहक लिधुर सर्द भऽ गेल। हम भाइजी लग सहटि कऽ चल गेलहुँ। दुइए डेगपर ओ छलाह। हम कहलियनि– भाइजी, हमर जी बड़ जोर ओकिआइत अछि। हम डेरा जायब।

ओ कनेक रुष्ट भऽ कऽ बजलाह– एहिना तोरा कखनो माथ दुखाइत छौक, पेट दुखाइत छौक आ कखनो जी ओकियाइत छौक । चल ।

एकटा रिक्सावलाकेँ बजा कऽ बैसि गेलाह । रिक्सा आगाँ बढ़लैक, मुदा ओ घूमि कऽ पाछाँ देखऽ लगलथिन । हमहूँ कनेक घूमि कऽ पाछाँ देखलिऐक– वैह गुलाबी साड़ीवाली छलैक आ ओकरा संग दू तीनटा मौगी । गामपर आबि कऽ मायकेँ कहलथिन जे– आबसँ तोहर बेटीकेँ अपना संग कहियो कतहु ने लऽ जयबौक ।

माय पुछलकनि– किएक, की कयलकह ?'

–करति की ? तेहन देहातिन छौक, उजड्ड–गमार जे कोनो ठाम संग रखबा जोग नहि । एकरा कखनो माथ दुखाइत छैक । कखनो पेट । बीचेमे कहत जे हमर जी ओकियाइत अछि, डेरा जायब ।' ओ बुश्शर्ट खोलि कऽ फेकैत बजलथिन– पठा दहिन एकरा गामेपर, ओही ठाम नीक लगतैक ।

माय हमर डेन पकड़ि लेलक आ हुनका कहलकनि– सोनाकेँ एना उल्लू–धुत्तू किएक करैत छहक ? तोरा जखने कहलियह जे कनेक एकरा देखा अनहक तखनेसँ हनछिन करऽ लगलह । एना कतहु होइक ? एकपिठिया भाइ–बहीनि बहुत लोक रहैत अछि ।

–हँ, सभ दोख हमरे देबैँ ने । अपन बेटीक कोनो दोख ने !

–आब नहि जयतह तोरा संग सैह ने ?' फेर हमरा पुछलक– की भेल छलौक गय । जी ओकियाइत छौक ? चल । सूति रहगऽ । जाहि दिनसँ सोनादाइ एहि ठाम आयलि अछि खिदखिदाइते रहैत अछि । एक रत्ती डाक्टरसँ देखा देथिन से नहि ।'

हमरो मोन विखिन्न भऽ गेल छल । भाइजी हमरा बड़ बात कहैत छथि । जहाँ कनेकोटा बात होयतैक कि देहातिन, गमारिन, उजड्ड, बकलेल, ढहलेल, मने जतेक विशेषण भेटतनि से कहि देताह ।

हमहूँ ओहि दिन जा कऽ सूति रहलहुँ । रातिमे नहि खयलहुँ । दोसरो दिन अपन पड़ले रहलहुँ । माय कहऽ आयलि जे –खा ले ।' हम कहलिऐक जे भूख नहि अछि । नहि खायब ।'

हमर नहि खयबाक परिणाम की सभ भेलैक से सभ पाछाँ लिखबह । एखन एतबे ।

हँ, परमीला केहन लोक अछि से जानि लेब बड़ कठिन बात । कखन ओ सहानुभूति देखाओत आ कखन घृणा से कहब कठिन । तेँ हमरापर ओकर केहन धारणा होयतैक सेहो बूझब कठिन ।

हम जे काज सभ कहने छलियह से सभ नहि कयलह की ? तोँ हमर ओ काज सभ मोन पाड़ि कऽ कऽ दिहह । तोरे आशामे हम बैसलि रहबह । **तोरे रामजोड़ी –सोना**

5 गय राम जोड़ी ! जय मैथिली !

तोहर चिट्ठी हमरा भेटल । तोहर आखर पढ़ि कऽ जे मोनमे आनन्दक हिलोरि उठैत अछि तकर बखान कोना करियौक । गय रामजोड़ी ! जेना-ने-तेना देवीपक्ष बीति गेलैक । बूझ तँ ई छुट्टी एकदम 'बोर' कऽ देलक । तोँ नहि छलेँ ने, तेँ बड़ कोनादन लगैत छल एकसरि । परमीला सेहो कखनो काल अबैत अछि, मुदा ओकरा लग बैसू तँ खाली भाषण सुनैत रहू । बुझि पड़ैत अछि जेना ओ सभ दिन भाषणे तैयार करक पाछाँ लागलि रहैत अछि । हम एक दिन कहलिऐक– हय, भगवतीस्थान चलबह ? आइ छागरक बलि पड़तैक ।

ओ एहि पर भाषण देबऽ लागलि– कोना कऽ तोरा सभकेँ देखल जाइत छह ओ लिधुरक पनार ? बाबूजी कहैत छलथिन जे ई सभ समाजक स्वार्थी लोक सभ अपन स्वार्थ-पूर्त्तिक लेल चलौने छल । हम जी कूचैत कहलिऐक– हय, एना जुनि बाजह । माता भगवतीक ओ सभ आराधना थिकनि । हुनक पूजाक खिधांस नहि करक चाही ।

ओ बाजलि– हय रेवा ! भगवती तँ जगत् जननी छथिन । हुनकर कतहु खिधांस हम सभ करियनि ? हम सभ दिन भोरे कऽ उठैत छी तँ हुनके स्मरण करैत छी । परीक्षामे लिखबाक पहिने भगवती माताकेँ गोहरा लैत छी । मुदा ई छागर-पाठी मारब माताकेँ नहि नीक लगैत होयतनि । हय, हुनकर तँ सभ पुत्र-पुत्री थिकनि । जहिना हम सभ तहिना छागर । तँ एकटा माय अपन बेटाक मृत्युक कामना करत से विश्वास होइत छह ?

हम कहलिऐक– गोड़ लगैत छियनि माताकेँ । हुनकहि इच्छासँ ईहो सभ होइत छैक, जाहि दिन हुनक इच्छा नहि होयतनि ताहि दिन बन्द भऽ जयतैक ।

–एकदम ठीक कहलह । हमरा घरमे माताक इच्छा भऽ गेलनि अछि । आब हमरा घरमे भगवतीकेँ मधुर चढ़ैत छनि ।' परमीला बाजलि– बाबूजी कहैत छथिन जे ई सभ हिंसा थिकैक । महात्मागान्धीकेँ ई काज बाँकी रहि गेलनि ।

फेर हमरा उठबैत कहलक– चलह, नहि जयबह तँ तोरा मोनमे दुख होयतह । हय रेवा ! हमरा लोकनि जतेक दिन छी संग-संग, से बहुत बुझह ।

–किएक हय ?' हम पुछलिऐक ।

–जेना किछु बुझिते ने छहक, तहिना पुछैत छह ।'

गय रामजोड़ी ! परमीलाक ई गप्प सदिखन मोनमे घुरमैत रहैत अछि । होइत अछि जे जतेक दिन संग-संग छी से बहुत अछि । जखन-जखन कऽ ई बात मोन पड़ैत अछि तखन-तखन कऽ छाती हहरि जाइत अछि, सौंसे देह सिहरि उठैत अछि आ सोचऽ लगैत छी जे मौगिओक की जीवन थिकैक ? गय, घरमे बाबूजी दुर्गापाठ करैत छलथिन तँ सभ दिन कानमे पड़ैत छल– **पत्नीम्मनोरमान्देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्** ।

रामजोड़ी गय, एहि पाँती पर सदिखन सोचैत रहैत छी जे पुरुखोक मोनमे ई बात होइत रहैत छैक । परमीला कहैत छलि जे– हय रेवा, पता नहि हमरा लोकनिकेँ के कपारमे ठोका जाइत अछि ।

गय रामजोड़ी ! तोरा पटनामे मोन नहि लगैत छौक से जानि आश्चर्य होइत अछि । ओहि ठामक जे कथा सभ लिखलेँ अछि से जानि कऽ बड़ दुख भेल । एना लोक सभ किएक करैत छैक ? ओकरा सभकेँ की अपना घरमे लोक वेद–नहि रहैत छैक ? आब तँ लोकक बाट चलब कठिन भऽ गेलैक अछि । आब देख ने, ओहि दिन स्कूलसँ चल अबैत रही कि दूटा साइकिलवला पाछूसँ नहूँ-नहूँ साइकिल हँकैत गाबऽ लागल ओ सिनेमावला गीत– **रूप सहा ना जाये नखरेवाली का...**

मोन तँ भेल जे पयरमेसँ चप्पल निकालि कऽ दी दूनूक मुँह तका कऽ । मुहझौंसा सभ ! मुदा हमरा लोकनि सदिखन विवश रहैत छी । करू की ? तोरा तँ मोने होयतौक, दुनू गोटा चल अबैत रही तँ पानक दोकान लग एकटा जुलफीवला गायब सुरू कयने छल– **चकोर भेलइ मोर दुनू अँखिया, मुख तोहर चन्दा समान गे...**

कतेक खराब लागल छल ? ओ तँ सुकुर भेल जे तखने कालेज दिससँ शारदाक भाइ अबैत छलथिन तँ ओ हमरा सभकेँ आगाँ कऽ अरियाति देलनि । शारदाक भाइक नाम नहि मोन अछि, मुदा हुनक ओ चाट ओहिना मोन अछि जे ओ ओहि गबैया छौंड़ाकेँ मारने रहथिन गालपर । केहन हंगामा भऽ गेलैक ?

तोरा मोन छौक की नहि– शारदा दोसर दिन हमरा पुछलक जे काल्हि की भेल छलह हय ? रातिखन भाइजी कहैत छलथिन जे तोहर संगी रेवती आ स्वर्णप्रभाकेँ एकटा बदमास छौंड़ा बोली कसने छलैक । हमरा कहलनि अछि जे कहि दिहेँ अपना संगीकेँ जे ई अपन गामक विद्यार्थीक संग जाय–आबय ।

गय रामजोड़ी, शारदा तोरा दऽ पुछैत छल । ओकर पैसा हम दऽ देलिऐक । ओ रुमाल नहि देलकौक । कहलकौक जे ओ तँ भाइजी लऽ लेलनि । कोजागरा भऽ गेलैक । श्रीनाथकेँ भार–दोर किछु ने अयलनि । तैंतिस गोट टाका पठा देलकनि । केहन धरकट छैक श्रीनाथक ससुर, ने व्यवस्था देलकैक, ने वऽर विदाइ । अपन बेटीक मधुश्रावणीमे ई सभ नहि रहने तँ शोभासुन्नर नहि होइत छैक । आ कोजागरा बेरमे सभकेँ मुँह झरका देलकैक । चिट्ठी लिखने छलैक जे भार तँ राड़े खा जाइत छैक, से भारमे टाका फेकने कोन फल ? टके पठा रहल छी । श्रीनाथक बाबू टाका फेरि देलथिन । कहलथिन जे– ई खुद्दी खा कऽ भूख नष्ट कथी लेल करब ? बूझब जे हमर बेटाक बियाह छोटहाक बेटीसँ भेल छल ।

गय, श्रीनाथक ससुर केहन खकनर छैक, बड़ निसोख ! बसुलाक धार जकाँ खाली अपने दिस छौ देतौक । एहने-एहने बापक चलते बेटीक जिनगी दुखमय भऽ जाइत

छैक । देखि लिहनि रामजोड़ी, श्रीनाथकेँ अपना कनियासँ मिलान नहि रहतैक । ओ बड़ जिदियाह लोक छैक । रामजोड़ी, उतारा दिहेँ । देरी नहि करिहेँ । **तोरे रामजोड़ी –रेवा**

6

हय रामजोड़ी, जय मैथिली !

तोहर चिट्ठी भेटल । पढ़ि बड़ आनन्द भेल । माता भगवतीसँ मनबैत रहैत छी जे तोँ सब सतत कुशल रहह । हम अपन हाल-समाचार की लिखियह ? तोरा बिना मोन नहि लगैत अछि । एहि ठाम जे कोनो वस्तु देखैत छिऐक आ ओ देखनुक रहैत छैक, तँ होइत अछि जे तोँहू एकरा देखितह तँ कतेक नीक होइतैक !

हय, यात्रा दिन मोन बड़ चंचल भऽ उठल । एहि ठाम तँ छलैक धूमधाम खूब, मुदा नहि जानि किएक हम एना उदास छलहुँ । गामपर रहितहुँ तँ जयन्ती काटल जैतैक, बाँटल जैतैक । एहि ठाम से सभ कहाँ ? हय रामजोड़ी, गामपर तँ पातड़ि पड़ल होयतैक, मुदा से हमरा भागमे एहि बेर लिखले ने छल । एहि ठाम तसमै ई सभ बनल छलैक, मुदा हमरा तेहने सन बूझि पड़ैत छल जेना नोन बिना तीमन-साजन लगैत छैक । गामपर पातड़िक हेतु जे तसमै बनैत छैक ओहिमे पवित्रताक भाव रहैत छैक । एकटा प्रतीक्षा रहैत छैक ओकर सम्पन्न होयबाक । जेँ ओहि तसमैमे देवीक प्रति समर्पणक भाव रहैत छैक तेँ मोनमे श्रद्धा रहैत छैक जे एक प्रकारक शान्ति आ उत्फुल्लता आनि दैत छैक । एहि ठाम तँ से सभ छलैक नहि । साधारणे रूपसँ जेना भानस होइत छैक तहिना भेलैक । खयलहुँ, मिट्ठ लागल, साँझमे बिसरि गेलहुँ । ओहि ठामक कटोरी भरि तनुकाक आगाँ एहि ठामक छप्पन भोग, बूझह तँ फिक्का ।

हय रामजोड़ी, आब जँ हमरा **गाम आ शहर**पर निबन्ध लिखऽ लेल कहैत तँ यैह सभ बात लिखितिऐक । हमरा एहन सन बुझि पड़ैत अछि, एहि ठाम जेना सभ वस्तुमे औपचारिकता भरल छैक । लोक सभ जे भेट-घाँट करत, गप्प-सप्प करत, ओहिमे 'फार्मलिटी' बेसी रहैत छैक आ सौहार्द्द कम । अपना लोकनि एकटा निबन्धमे पढ़ने रहिऐक ने **आर्ट फौर आर्ट सेक मने कला कलाक हेतु** से एहू ठाम बूझह तँ **गप्पक हेतु गप्प, भेंटक हेतु भेंट** ।

हय, एक बात आरो कहैत छियह । गामपर हम आ तोँ एक संग रहैत छलहुँ तँ हम तोरा संग खा लैत छलहुँ तोँ हमरा संग । एहिमे कहियो कोनो मीन-मेख होइत कहाँ देखलिऐक ? एहि ठाम जँ हम चाह पिलिऐक अछि ककरो तँ हमरो चाही जे ओकरा पिया दिऐक । जँ हम ओकरा डेरापर गेलिऐक तँ चाहब जे एकरा बदलामे ओहो हमरा ओतऽ आबय । जाबत ओ आओत नहि ताबत हम नहि जयबैक । जँ हमरे ओतऽ अबैत अछि तँ हमहूँ ओकरा ओतऽ जा कऽ **रिटर्न भिजिट** (पुनः दर्शन) दिऐक ।

हय रामजोड़ी, हमरा ई सभ बड़ कठाइन लगैत अछि । हमरा लोकनि तँ शुद्ध हृदयसँ संगिता जोड़बामे विश्वास करैत छी । तोरा मोन होयतह जे हमरा लोकनि कतेक

बेर रूसा-फुल्ली कयने होयब, मुदा तैयो संग नहि छूटय । एहि ठाम संग छूटि जायत, हृदय नहि मिलत, मुदा व्यवहारमे वेश महो-महो ।

रामजोड़ी हंय, एहि ठामक सभ व्यवहारमे एकटा कृत्रिमता रहैत छैक । से ऊपरसँ नहि बूझि पड़तह । जखन कोनो गप्पक तहमे प्रवेश करबह तँ सभ वस्तु बनाबटीये लगतह । हय, तोँहू कहबह जे रामजोड़ी मारि कहूँ सिद्धान्त छटने जा रहलि अछि । मुदा हमरा जे अनुभव भऽ रहल अछि सैह तोरो कहैत छियह । तोँ पटना-पटना कहैत छह आ आब हमरा जँ केओ पटनो रहबा लेल कहत तँ हम पट-ना कहि देबैक ।

ओहि दिनुक गप्प हम पूरा नहि लिखलियह । हय, जखन हम दोसरो दिन नहि खयलिऐक तँ माय चिन्तित भऽ गेलि । ओ हमरा लगमे आबि कऽ कहऽ लागलि जे तोरा भाइजी बात कहलकौक तेँ नहि खा रहलि छेँ ? गय सोना ! अपना भाइ-बहीनमे एहिना होइत छैक, ओहि लेल लोक तामस करय ? ओकरो तँ हम कम बात नहि कहलिऐक । भगवान् करथुन तँ बियाह-दान होयतौक, सासुर जयबेँ आ सासुरक लोक कोनो बात कहतौक तँ एहिना रूसबिही ?' हय रामजोड़ी, हम तँ लाजे गड़ि गेलहुँ । भेल जे कोन पाप लागल जे सहि गेलहुँ ।

माय फेर कहलक जे हमरा कहने नहि खयबेँ तँ बाबूजी औथुन बँसबा लेल ।' आब तँ हमर जान अवग्रहमे पड़ि गेल । जँ बाबूजी बूझि गेलाह आ हमरा कहऽ अयलाह तँ की होयत ? मोनमे कहताह जे सोनियाँ रुसनमी अछि ।

माय कोनो काजेँ बाहर गेलि तावतमे भाइजी अयलाह । थोड़ेक काल मोखा लग ठाढ़ रहलाह । पुनि एक डेग घरमे आबि बजलाह- सोनादाइ ! हमरे दुआरे ने अहाँ एना अनसन कयने छी ! हम अहाँकेँ बात कहि कऽ बड़ अपराध कयलहुँ । माफी चाही आ यैह हमहूँ बिनु खयनहि कालेज जा रहल छी ।'

भाइजी ई कहि सरसरा कऽ चल गेलाह ।

माय आयलि तँ बाजलि- हमरा तँ सभ केओ बाबाजीक बेल बना देलक अछि । एक टा एमहर रूसल अछि । ओ ओम्हर रूसल अछि । सभकेँ रुसबाक सूरि लागि गेल छैक । हमरा बुतेँ पार नहि लागत सभकेँ सम्हारब ।' आ माय हमर डेन पकड़ि कऽ उठबऽ लागलि । हमर मोन तँ उजबुज भऽ गेल । हम चुप्पे उठि कऽ रसोइघरमे जा कऽ एकटा प्लेटमे परसि कऽ खाय लगलहुँ । खायल तँ नहि जाइत छल, मुदा कोनहुना खाय पड़ल ।

हय, शारदा हमरवला रुमाल नहि देलकह ने ? ई कोन तमासा कयलक जे हमर रुमाल बाँटि देलक ? हमरा नहि नीक लागल ई चालि । परमीलाक गप्प-सप्प बेस मनोरंजक होइत छैक । ओकरा हमर नाम मोन पाड़ि दिहक । गाम-घरक आरो हाल-चाल लिखिहह । कुशल समाचार तुरन्त दिहह । **तोहर रामजोड़ी -सोनादाइ**

7 गय रामजोड़ी, जय मैथिली !

तोहर पत्र भेटल, कुशल-मंगल जानि मोन प्रसन्न भेल । एहि ठामक कुशल-मंगल नीक छैक । तोँ जे पट-नाक लोक, आचार-व्यवहारक सम्बन्धमे लिखले॑ से तँ युगक प्रवाहे थिकैक । एहन बूझि पड़ैत छैक जेना सभ किछु बदलि जयतैक । गय, परिवर्तन होयब तँ स्वाभाविके छैक । किछु अंशमे ई हितकारी छैक आ किछु अंशमे अहितकर । जतेक दूर धरि सभ्यता आ संस्कृतिक प्रश्न छैक, ओहिमे कोनो प्रकारक भयानक परिवर्तन समाजक लेल कहियो हितकारी नहि भऽ सकैत छैक ।

गय रामजोड़ी, ई युग थिकैक मशीनक । ओकरा द्वारा निर्मित वस्तुमे एकरूपता रहैत छैक । मशीनक अपन कोनो कलाकारिता वा रुचि नहि रहैत छैक । तेँ मशीनसँ प्रभावित एहि युगक मानवमे सेहो जँ ओकर छाप छैक तँ कोन आश्चर्य ?

रामजोड़ी गय, शहरक जे गतिविधि लिखले॑ ताहि अर्थमे गामो आब पाछाँ कहाँ छैक ? एहू ठाम तँ लोक आत्मवादी भेल जा रहल अछि । सभ अपना-अपनामे मगन । ककरो अनकर चिन्ता-फिकिर नहि । देख ने, ओहि दिन कोजागरा छलैक । बड़ समादबारी देलापर श्रीनाथक आङनमे हकरैतिन सभ अयलीह । मुदा गीत गयबाकाल किनको अबैत नहि छलनि । क्यो गबैत नहि छलीह आ किनको गऽर बाझल छलनि– गय, रंग-बिरंगक लाथ सभ । हारि-दारि कऽ हमरा, परमीला सभके॑ आदिसँ अन्तधरि गाबऽ पड़ल । हमहूँ ठेकना कऽ रखने छियनि– जखन दाइ-माइ सभके॑ अपना आङनमे काज-परोजन होयतनि तखन हमहूँ मकड़ी ऐंठि देबनि । एखन भरि दिन घर-आङनक काज-धन्धामे लागल रहैत छी । दीया-बाती आबि गेलैक ने; से माँटि-मँटिकमसँ फुरसतिये ने भेटैत अछि ।

मायके॑ दोख एहिमे नहि देबैक । ओ हमरा अढ़ौलक नहि । हम अपने मोने संग-साथ देबऽ लगलिऐक । हमरा टोकबो कयलक जे तोँ छोड़ि ने दही । तोरा कोन काज छौक ई सभ छूबाक ? तोँ सभ इसकुलिया छेँ; ई सभ होयतौक ?

गय रामजोड़ी ! हम मोनमे सोचलहुँ जे स्कूलक जीवन चिरसत्य नहि थिकैक, यैह घर-आङनक जीवन मौगीक लेल चिरसत्य थिकैक । एक दिन परमीलासँ एहिना गप्प होइत छल । हम कहने छलिऐक जे की कहियह, मायके॑ पढ़ब सोहाइते ने छैक । भरि दिन ओ घरक काजे अढ़बैत रहत । कहत जे पढ़ि कऽ की बालिस्टर होयबे॑ ?' परमीला हमर गप्प सूनि कऽ कहलक– हय रेवा ! काकी कोनो फूसि नहि कहैत छथुन ।

–तँ तोरा मोने आब हम गोबरौर छूबू, गोइठा पाथू, चिनमार निपैत रहू आ थारी-बासन मँजैत रहू आ पढ़ब-लिखब गेल चूल्हिक पाछाँ ?' –हम कहलिऐक ।

–हँ हय रेवती !' ओ शान्त भऽ कऽ कहलक– एही सभ दुआरे॑ लोक अपना ओहि ठाम बेटी-डाँटीके॑ पढ़बैत नहि छैक । तोरा कहबह तँ विश्वास नहि होयतह । तोँ तँ हमरा

आङन अबिते छह कम काल, ने तँ देखितहक जे हम घरक कोन काज नहि करैत छी ।' हमरा आश्चर्य भेल । परमीला कहलक जे– हय रेवा ! हमरा तँ घरक काज–धन्धा करबामे मोन लगैत अछि । पढ़ने–लिखने लोक अपन स्थिति आ अस्तित्वकेँ बिसरि जाय, से की कोनो नीक बात थिकैक ? हमरा मायकेँ तँ किछु अढ़ाबहि ने पड़ैत छैक ।' ओहि दिनसँ मोनमे ई बात खट दऽ बैसि गेल । हमहू सोचैत छी जे माय एकसरुआ अछि, जँ हम लागि–भीड़ि नहि देबैक तँ ओ बेटीक सुख की बुझतैक ? ओना हम पहिनो काज कऽ दैत छलिऐक, मुदा जेना एखन करैत छिऐक, तेना नहि ।

गय, रामजोड़ी ! तोहर बाबी गंगाकात गेलथुन अछि मास करकलेल । हम जा कऽ भेंट कऽ आयलि छलियनि । शारदाकेँ हम तोहर रुमाल दऽ फेर टोकलिऐक । ओ कहलक जे भाइजीकेँ हम फेर कहबनि । दीया–बातीक दिन तोरा बिना मोन नहिये लागत । एकसरि टौआइत रहब । चिट्ठी तुरन्त दिहेँ । **तोरे रामजोड़ी –रेवा**

8 **हय रामजोड़ी, जय मैथिली !**

तोहर चिट्ठी समयपर भेटल । हम सभ आनन्दसँ छी, तोहर सभक कुशल माता भगवतीसँ मनबैत रहैत छियह । हय रामजोड़ी, तोँ जे समयक प्रवाहक सम्बन्धमे लिखलह अछि से एकदम ठीक जे समाजमे परिवर्तन भेल जा रहल छैक । लोक आत्मवादी, व्यक्तिवादी भेल जा रहल अछि । मुदा एना तँ समाजक अन्तःस्थ एकात्मकताक सूत्र टूटि जयतैक । समाजक अंग–प्रत्यंग छिन्न–भिन्न भऽ जयतैक । मुदा हमरा–तोरा एहि सम्बन्धमे की विचारबाक अछि ? हम सभ जेँ स्कूलमे पढ़ैत छी तेँ एतबो बुझैत छिऐक आ जे कहियो 'सी' अच्छर नहि पढ़लक अछि से की बुझतैक ? यदि किछु बुझितो होयतैक तँ के मोजर देतैक ?

हय, दुर्गापोथीक एकटा पाँती तोँ एक बेर लिखने छलीह, हम ओहि बातक उतारा नहि देने छलियह । तोरा मोन होयतह श्रीनाथक गप्प, ओ अपना भौजीकेँ कहने रहैक । भौजी पूछने रहथिन जे –छोटका बौआ ! अहाँकेँ केहन कनियाँ पसिन्न पड़त ?'

आ श्रीनाथ कहने छलैक जे– अपना हाथक गप्प थोड़े थिकैक जे कहि दियऽ ? जेहन पसिन्न पड़ैत छैक, ओहन की भेटैत छैक ?

–तैयो बुझिऐक ने जे केहन ?' भौजी पुछने रहथिन । एहिपर श्रीनाथ भौजीकेँ निंघारैत कहने रहैक– अहीं सन, ने कम ने बेसी ।'

–धौर जो ! हम कोनो नोखक छी ?' भौजी लजा कऽ मरौत काढ़ि लेने रहथिन ।

सत्ते श्रीनाथक भौजी कतेक सुन्नरि छथिन ! ओहन कनियाँलेल ककर जी नहि सिहयतैक ? मुदा तेँ की मौगीक मोनमे एहन इच्छा नहि रहैत छैक ? हय, तुसारी पूजऽकालमे कोन बात मोनमे घुरियाइत रहैत छैक ? हमरा जनैत तँ परस्परे होइत छैक ।

हय रामजोड़ी ! श्रीनाथक गप्प खूब लिखलह, ओकरो बियाह तँ अपने इच्छासँ भेलैक ने, तखन जँ ससुर नहिंयेँ देलकैक तँ ओहो खूब । आगाँ लितऽथिनै तखन ने पाछाँ दितनि ? मङनीक वरकेँ चङनीक विदाइ । श्रीनाथक भौजी केहन बुधियारीसँ बजा कऽ अपन ममियौत बहीनकेँ देखा देलकनि आ मोन मोहि लेलकनि ? हय, आर जे किछु कहह, श्रीनाथक कनियाँ सेहो बड़ देखनुक छैक । लोकोसभ कहैत छलैक आ श्रीनाथक भौजीक लगमे फोटो सेहो देखने छलिऐक । रामजोड़ी हय ! बाबी गंगाकात मास करऽ गेलथिन से जानि कऽ हमरा तँ बड़ हर्ख भेल, मुदा मायकेँ नीक नहि लगलैक । ओ मारि बाजऽ लगलैक जे कोन ज्ञाने घर छोड़ि देलनि ?

हम कहलिऐक— गय ! तोँ सभ अपने रहबेँ बाहर आ घरपर ओ पहरा करैत रहथुन ? ओ मरि जयथुन तखन के धन-सम्पत्ति ओगरतौक ? आ नहियेँ छथुन बाबी तँ की ओहि ठाम लूटि होइत छैक ! काकी, दीदी ई सभ तँ छथुनहेँ तखन....

—हँ गे हँ !' माय हमरा बीचेमे टोकैत बाजलि— तोँ कोना बुझबिही ? तोरा तँ नोन पढ़ा कऽ बूढ़ी खुआ देने छथुन, तेँ हुनके पच्छ ने लेबहुन ?'

—तँ एहिमे तोहर की गेलौक ? अपन तीर्थ करऽ गेलथिन ?

—हँ तीर्थक समय बीतल जाइत छलनि की ?

—तँ तोरा मोने सारापर जइतथिन तखन तीर्थ-व्रत करितऽथिन ?' हमरो तामस भऽ गेल । तोँही कहह रामजोड़ी, जे बूढ़ लोक तीर्थो-व्रतसँ गेल ?

हय रामजोड़ी ! ओहि दिन भाइजीक गप्प नहि लिखलियह ने ! भाइजी कालेज गेलाह तँ हमर मोन कोनादन करैत रहय । मोने ने लागय । साँझमे अयलाह तँ हम स्टोवपर सेवइ भूजऽ लगलहुँ । हलुआ बनौलहुँ । प्लेटमे परसि कऽ देबऽ गेलियनि तँ ओ बड़ी काल धरि गुम्मसुम्म कुर्सीपर बैसल 'मिथिला मिहिर' उनटबैत रहलाह । हम बड़ी काल धरि ठाढ़ि रही, तखन कहलियनि— भाइजी, खायब नहि ?

ओ कहलनि— अहाँ खयलहुँ ?' हमरा भाइजीक 'अहाँ' कहब नीक नहि लागल, तैयो हम कहलियनि— हमरा तँ तेसर बेर भेलैक ।

ओ कनेक मुसकैत बजलाह— योर ऑनर सोनादाइक बातपर विश्वास करी । लाउ, हमरा पेटक नेफा क्षेत्रमे भूख रूपी 'चाइनीज' आक्रमण कऽ रहल अछि ।'

हय रामजोड़ी ! एहि ठाम, भारतपर चीन हमला कऽ देनें छैक तकर बड़ हल्ला छैक ।

दीया-बाती दिन एहि ठाम बूझह तँ इजोरिया राति भऽ गेलैक । चारू कात बिजली बत्तीसँ जगमग करैत । बेस देखनुक लगैत छलैक । हमरा तँ भेल जे घुमिते रही- घुमिते रही । रंग-विरंगक इजोत, रबाइस-फटक्का । मुदा रबाइस-फटक्कामे जेना देशक सम्पत्ति

स्वाहा होइत बूझि पड़ल । सौंसे देशमे ओहि दिन जतेक फूकल गेल होयतैक से सभ टयका जँ सुरक्षामे खर्च होइतैक तँ कतेक उपकार होइतैक !

हमरा लय माय भाइजीकेँ फुलझड़ी-फटक्का आनऽ कहलकनि तँ ओ एकटा बेस पैघ भाषणो दऽ देलथिन । कहलथिन– हम छी एकनामिक्सक छात्र, कोना कऽ एहि फुलझड़ी-फटक्कामे टाका जराबी ?

हय रामजोड़ी, हमर मोन रहि-रहि कऽ गामपर चल जाइत छल । एहि ठाम ने अरिपन पड़लैक ने ऊक फेरल गेलैक । भोरुकी रातिमे मायकेँ उठौलिऐक जे सूप नहि पिटबहिन ?

माय हमरा डटैत कहलक– गे हे ! गदहा गेलाह स्वर्ग तँ छान गेलनि संगहि, से परि तोँ करैत छेँ । पटनो आबि कऽ अपन गमै सोभाव रखनहि छेँ । एहि ठाम एहि भोरुकी रातिमे सूप डेङायब से लोक की कहत ?' हम किछु बजलहुँ नहि । सोचैत रहलहुँ जे पटना आबि कऽ की लोक लोक नहि रहि जाइत छैक ? एक दिन पहिनहि हम पुछलिऐक जे– माय आइ जमदिवारी थिकैक, दीप कोन ठाम देबही ?' माय कहलक जे एहि ठाम तँ बाटपर 'डस्टबीन' राखल छैक, सऽख छौक तँ ओही ठाम दऽ अबही ।' आब तोँही कहह रामजोड़ी, ई सभ सऽखक बात थिकैक ?

पखेब दिन रहि-रहि कऽ अपन बथान मोन पड़ैत छल । केहन लागल होयतैक रङल-ढङल गाय-बड़द सभ ! भरदुतिया दिन सेहो मोन बड़ उचटल रहल । बहीनक लेल ई केहन पाबनि थिकैक से प्रायः एहि ठाम लोक नहि बुझैत छैक । बड़ सेहन्ता छल जे अरिपन ई सभ दऽ कऽ भाइजीकेँ नोत दितियनि । मुदा, भाइजी कहलनि जे– गय सोना ! तोरा हम टाका दऽ दैत छियौक, मुदा ई सभ हमरासँ नहि होयतौक ।

हय रामजोड़ी ! आब बूझि पड़ैत अछि जे सामा सेहो हम एहि बेर नहि बना पायब । के बनाबऽ देत ? सभ कहत जे देहाती, उजड्ड, गमार अछि । मुदा सामा नहि बनायब तँ मोन हमरा कचोटैत रहत । तोरा हम नेहोरा करैत छियह । हमरालेल फराकसँ सामा बना दिहह आ ओकरा अपने जकाँ रखिहक । हमर प्राण तोरेपर लागल रहत ।

सुनैत छिऐक जे पटनाक छठि नामी होइत छैक । गंगाकिनारमे बड़ भीड़ लगैत छैक । नाओपर चढ़ि-चढ़ि लोक छठि देखैत छैक आ साँच-पकमान मङैत छैक । एहि बेर हैत तँ अपना आँखिसँ देखब । मोन तोरेपर अटकल रहत । सभ बातक उतारा नीक जकाँ दिहह । बिसरिहह नहि । अनठबिहह नहि । सामा जरूर बनबिहह । **तोरे रामजोड़ी –सोना**

9 गय रामजोड़ी, जय मैथिली !

तोहर चिट्ठी ठीक पारन दिन भेटल तेँ अपन सामाक संग तोरो सामा बना देलियौक । तोरा काकीकेँ जा कऽ कहलियनि जे रामजोड़ी एना-एना लिखलक अछि । तोहर काकी कहलनि जे– अय दाइ, हमहूँ समादे देबालेल छलहुँ जे ओहि ठाम सोनादाइ सामा बनौतीह कि नहि । तेँ एही ठाम बना दियौन ।

गय, सामा सनक पाबनि दोसर नहि भऽ सकैत छैक। एहन मधुर-मधुर गीत, मधुर विधि-विधान जँ अनठीया देखय तँ मोन मुग्ध भऽ जयतैक। मुदा सामा-चकेबा, रहबे करैत छैक बड़ कम दिन। स्कूल फूजि गेल तेँ पूरा पलखति नहि भेटैत अछि। पछिला पाबनि-तिहारक झमेलासँ आब छुट्टी भेटल, मुदा तकरा बदलामे स्कूल आबि गेल। कोना कऽ सौंसे मास बीति गेलैक से आश्चर्य लगैत अछि। परमीला सेहो सामा बनौलकैक अछि आ अपने टोल अबैत छैक सामा खेलाइ लेल। लोक सभ कहैत अछि जे तोँ सभ इसकुलिया छेँ तैयो मोन लगैत छौक एहि सभमे ?'

अयँ गय रामजोड़ी ! कोन एहनि निसोखि बहीनि होयत जकरा सामा-चकेबामे मोन नहि लगतैक ! हम तँ स्कूलोमे रहैत छी तँ सदच्छन सामा-चकेबा मोनमे बसल रहैत अछि। होइत अछि जे कखन गामपर जाइ आ राति होइ कि सामाक डाला लऽ कऽ बाहर होइ। गय, कतेक भावुक छैक ई पाबनि ! निर्मल शरद् ऋतुक ओस आ नवीन धानक मंजरीसँ सामाक पूजा करबामे जेना कोनो कविता नुकायल होइक। गय रामजोड़ी, तोरा चुगिलाक मोछ आ केश, सभ केओ मीलि कऽ एखने झरका देलकौक अछि। तोहर वृन्दावन सेहो बहुत छोट भऽ गेलौक। ओकरा हम आ परमीला दुनू बेराबेरी जरबैत छिऐक। तोरा बिना सुन्न जकाँ लगैत अछि।

हम आ परमीला सोचलहुँ अछि जे एकेटा पैघ बेड़ बनबाबी, छठिलय करजानमेसँ दू घड़ि केरा काटल गेल छलैक, तकर थम्ह लगले छैक। ओहीसँ भऽ जयतैक। गय, बेटी जमायक विदासँ की कम करुण होइत छैक सामा-चकेबाक विदा। जखन गबैत छैक– **सामचको, सामचको अबिहऽ हे अबिहऽ हे**

कूड़खेतमे बैसिहऽ हे बैसिहऽ हे

सब रङ पटिया ओछबिहऽ हे ओछबिहऽ हे

तखन कऽ हमर मोन कोनादन करऽ लगैत अछि। होइत अछि जे भोकासी पाड़ि कऽ कानी। यैह दुनियाँ थिकैक, माटियोक मूरुत चारि दिन संग-संग रहि जाइत छैक तँ ओकरासँ एतेक सिनेह भऽ जाइत छैक।

अक्षय नवमी दिन धातरी गाछतर भानस-भात भेल छलैक। तोरा बिना एकदम उदासी रहलैक। हम श्रीनाथकेँ कहलिऐक जे– हौ सिरी भाइ, हमरे भानसमे खाह ने आइ।

एहिपर श्रीनाथ बाजल जे– हमरा कोन, जे केओ परसि कऽ दऽ देबह, हम खा लेब।' ओकर भौजी ओही ठाम छलथिन, बजलीह जे– औ ! छोटका बौआ ! अहाँकेँ तँ रेवादाइक हाथक वस्तु खयबाक मोन अछि, हम की नहि बुझैत छी ! अपन बहीनक पच्छ सभ लैत अछि।

हम कहलियनि– से के बहीनक पच्छ लैत छैक से तँ ममिऔते बहीन संग देखल गेल। अपन बहीनक मुँह देखा कऽ सिरीभाइकेँ मोन मोहि कऽ ठकि लेलिऐक।

–से भाइकेँ ने पुछियौन जे के मोन मोहलकनि । नहि मोहतनि हमर बहीन, अपने बहीन मोन मोहथुन ने ।

–हे भौजो ! बेसी लबर-लबर कयलह तँ हम सभ दशा कऽ देब ।' हम डँटलहुँ ।

–बेस हे ननदो ! राजीमे झाजीक कोन काज ।'

गय, थेत्थरि छैक ओ । कतबो बात कहबहिन, गारि पढ़बहिन, ओकरा लेल धन सन । कोजगरा दिन लोक ओकरा मामाकेँ गरियबैत छलैक आ ओ हिंहिंयाइत हमरा सभकेँ डहकन सुनबैत । हम कहलियनि– अय भौजी ! केहन बेलज्जि छी अहाँ ? मामकेँ लोक अठारह गंडा पढ़ने अछि आ अहाँ...

–की होयतैक ?' ओ ठोर टेढ़ करैत बजलथिन– बेटीक बापकेँ एहिना कहैत छैक– **रुसल जमैया करताह की, धीया छोड़ि कऽ लेताह की** ? सत्ते हुनकर ममियौत बहीन कतेक भागमन्ति छनि जे श्रीनाथ सन वऽर अनायासे भेटि गेलनि । एहन करमक जोरगरि कम लोक होइत अछि । बूझह तँ ओ हाथीपर चढ़ि गौर पुजने छलि जेना ।

हम पुछलियनि– अयँ ए भौजी ! एना लेब-देबमे भेलैक अछि, जँ सिरीभाइ तमसा कऽ ओतऽ नहि जाथि तखन ?'

ओ बजलीह– अय रेवादाइ ! अहाँ सभ एखन अबोध छी, स्कूलमे पढ़नहि की होयत ? सभ बात नहि बुझबैक । जखन बियाह होयत तँ अपने सभ विद्या आबि जायत ।

–भक् ! अहाँके यैह सभ रहैत अछि । पुछलहुँ की आ गप्प पटकलहुँ कहाँ ।' हम कहलियनि ।

–एकबेर जे मोन मीलि जाइत छैक तँ ओ टूटब कठिन छैक । केओ-केओ लोक एहन निसोख आ निसरठ होइत अछि जे रूसि कऽ बैसि रहैत अछि । एहन रुसनाइ की ? कनियाँसँ की रूसत लोक ?' ओ बाजलि छलीह ।

ओहि दिन शारदा ओतऽ गेल छलिऐक । शारदाक भाइ हमरा कहलनि जे– अहाँक संगीक की नाम थिकनि ?

–स्वर्णप्रभा । गामपर लोक सोनादाइ कहैत छैक । हम रामजोड़ी कहैत छिऐक ।' हम उतारा देलिऐनि ।

–ओ चल गेलीह ? हुनकर हम एकटा रूमाल रखने छियनि से सुनल जे ओ बड़ तमसयलीह अछि एहिपर । हुनकासँ अहाँ पुछबनि लीखि कऽ जे जँ बड़ दुख भेल होनि तँ हम ओकरा घुमा दियनि । जँ केओ अपन वस्तु नहि देमऽ चाहत तँ ओकरा कोना लेबैक ?

एतबेमे शारदा ओमहरसँ चाह लेने आयलि । ओ अपना भाइकेँ कहलकनि जे–

भाइजी अहाँ बुझबे ने करैत छिऐक जे हम कोन सर्त पर रूमाल अनने रहिऐक । स्वर्णप्रभा अपना मोनमे की सोचत ?

—सैह तँ हुनक रामजोड़ीकेँ कहलियनि अछि । बेस आब अहाँ सभ गप्प-सप्प करू ।' ई कहि शारदाक भाइ बहार भऽ गेलाह । शारदा खिन्न जकाँ होइत बाजलि— की कहियह ? बच्चूभैया हमरा अकच्छ कऽ देने छथि । आब हम मायकेँ कहि देबैक ।' गय रामजोड़ी ! तोँ की कहैत छहिन से लिखिहेँ । आरो सभ बात कुशले-कुशल । **तोहर रामजोड़ी —रेवा**

10 **हय रामजोड़ी, जय मैथिली !**

तोहर सिनेह भरल पत्र भेटल । हमर सौंसे देह पुलकित भऽ उठल । भेल जे हमर समस्त मनःप्रान्त तोहर स्नेहरससँ परिपूर भऽ उठल अछि । तोरा देखबाक लेल मोन अकुलाइत रहैत अछि । जखन कखनो सुतैत छी तँ तोरे दऽ बिसनाइत रहैत छी । एको घड़ी तोरा बिसरैत नहि छियह । हय रामजोड़ी, तोँहू हमरा नहि बिसरिहह ।

एखन भाइजी दहिन भेल छथि । आब बेसी बात नहि कहैत छथि । एक दिन माय हुनका मारि किदन सभ कहैत रहनि । कहैत रहनि जे आब जे तोँ सोनादाइकेँ एना कहैत छहक से नीक लगैत छह ? ओ की आब बच्चा छैक ? ओकरा मोनमे की दुख नहि होइत होयतैक ? भगवान् करथिन, बियाह-दान होयतैक, अपना घर जायति । आब ओ तोरा सभक भार बनि कऽ कते दिन रहतह ?' हय रामजोड़ी, ककरो ई बात नहि कहिहक । ओहि दिनुक गप्प सूनि कऽ मोन कोनदऽ रंगक करऽ लागल । होइत अछि जे मायो आब हमरा विरान बूझि रहल अछि । लोकक बियाह नहियेँ होयतैक तँ की होयतैक । हमरा होइत अछि जे भाइजी वरु हमरासँ पहिनहि जकाँ व्यवहार करथु आ हम पहिनहि जकाँ रही । अँय हय, हम सभ आब बच्चा नहि छी तँ की बुढ़िया भऽ गेलहुँ ? एहि ठाम देखैत छिऐक अपनासँ ड्यौढ़ा दुन्ना छौंड़ी सभ ओहिना छैक ।

स्कूलमे हमर नाम नहि लिखाओल गेल अछि । आब कहैत छथि सभ गोटे की जे फेर तँ गामपर जयबे करबह, ओही ठाम पढ़िहह । हम कहैत छियनि जे— नहि, हमर एक बरख खतम भऽ जायत से नाम अवस्से लिखा दियऽ ।

हय रामजोड़ी, हम चारि पाँच दिनुक लेल सिमरिया चल गेल छलहुँ । बाबूजी सेहो गेलथिन, मायो गेलैक । बाबी गंगाकात गेलथिन अछि से जानि कऽ बाबूजी कहलथिन जे— बेस, एक दिन जा कऽ भेंट कऽ अयबैक मायकेँ । मायकेँ अपना इच्छा छलैक सोनपुर जयबाक । ओ बाबूजीकेँ कहने रहनि जे एहि बेर बाबाहरिहरनाथक दर्शन कऽ अयबनि । मेलो देखबाक सेहन्ता अछि ।'

हमर तँ उत्कट अभिलाषा छल बाबीसँ भेंट करबाक । बाबूजीक गप्प सूनि कऽ जेना हमर पयर धरतीपर पड़िते ने छल । हय, सिमरियाघाटमे मासी सभक निवास रेलवी

लाइनसँ हटि कऽ छैक । तड़ाय सभसँ गोहिया बनाओल । हजारो घर रहल होयतैक । ततेक नीक लगैत छलैक जे मोन होइत छल जे सभ दिन एही ठाम रही ।

हम सभ ओहि ठाम पहुँचलहुँ तँ बाबीकेँ हम दौड़ि कऽ गोड़ लगलियनि । ओ हपसि कऽ हमरा भरि पाँज कऽ धऽ लेलनि । बजलीह– गय दाइ गय दाइ, एहि बुढ़ियाकेँ बिसरि गेलेँ गय दाइ !' बाबीक आँखि नोरा जकाँ गेलनि । हय रामजोड़ी, बाबूजी हमरा दुनू माइ–धीकेँ ओही ठाम छोड़ि देलनि आ पटना चल अयलाह । कहलथिन जे– जखन अयबाक मोन हो तँ चिट्ठी लीखि देब ।' ओहि ठाम आरो कोना–की सभ, से फेरो लिखबह । एखन एतबे ।

हय रामजोड़ी, हमर सामा भसा देने होयबहक । शारदाक ओतऽ ओहि दिनुक बाद फेर कहियो गेलहक अछि कि नहि ? ओकर भाइ हमर नाम किएक पुछैत छलथुन हय ? आरो हमरा दऽ की सभ गप्प–सप्प ? आब तोँ शारदासँ रुमाल नहि मङिहक । ओहो की कहत जे स्वर्णप्रभा एकटा रुमाल लेल छाल छोड़ौने अछि । हय, हमरा रुमालक कसीदाक डिजाइनक मोह छल आर किछु नहि । शारदा कहय तँ हम आर रुमाल पठा दिऐक । शारदाकेँ कहि दिहक जे स्वर्णप्रभाकेँ ओहि रुमालक कसीदाक डिजाइन भेटि गेलैक तेँ आब ओहि रुमालक काज नहि । ओ अपन राखि लेत ।

हय, शारदाक भाइकेँ हमर नाम नहि कहितहुन तँ नीक । अनेरे ककरो नाम ककरो कहि देने तँ कोनो फल ने । हुनका कहि दिहनु जे हम किएक तमसायलि रहब, शारदा अनेरे फूसि बात कहि देलकनि । शारदा सेहो केहन लोक अछि, छोटो–छीन बातकेँ नमारि दैत छैक । शारदाक भाइक नाम की थिकनि हय ?

श्रीनाथभाइक भौजीक गप्प–सप्प जे लिखलह से हम हुनका खूब चिन्हैत छियनि । ओ हमरा सभकेँ बाते–बातमे छका देबाक विद्या खूब जनैत छथि । सिरिओ भाइकेँ तँ छकयबे कयलथिन ने । हुनका भौजीकेँ पुछिहनु जे वऽर कनियाँमे केहन पटैत छैक ? अँय हय, जे ममियौत बहीन छलैक से देयादनी भऽ कऽ औतैक तँ केहन लगतैक ? कोनादन नहि लगतैक ? श्रीनाथभाइ ओकरा कोना आ कतऽ देखलथिन हय ?

अँय हय, दू गोटे अनठीयाकेँ एकट्ठा कऽ दैत छैक से फेर कोना एक भऽ जाइत छैक, से आश्चर्यक गप्प । की हय रामजोड़ी, तोहर की विचार छह ? श्रीनाथभाइक भौजी जे कहलथुन दू गोटेक मोन मीलि जाइत छैक से टूटब असम्भव, से कोना ? हमरा तँ सन्देह होइत अछि । होइत अछि जे मोन मिलैत नहि होयतैक– बियाह करा देल गेलैक तँ आब की करत ? रहैए पड़ैत छैक । कोनो दोसर उपाय नहि रहने संग–संग रहैत अछि । हय रामजोड़ी, बिसरिहह नहि । पत्रक उतारा तुरन्त दिहह । तोरा बिना कखनो जी नहि लगैत अछि । होइत अछि जे कखन तोरासँ भेँट होयत, कखन नहि । **तोरे रामजोड़ी –सोना**

11 गय रामजोड़ी, जय मैथिली !

तोहर चिट्ठी प्राप्त भेल । पढ़ि कऽ भेल जेना आनन्दक सरोवरमे डूबि रहल छी, दहा-भसिया रहल छी । एहन आनन्द-सरोवर जकर कोनो ओर-छोर नहि होइक । तोरा बिना हमरा एको रत्ती कऽल नहि पड़ैत अछि । होइत अछि, उड़ि कऽ पड़ा जाइ तोरा लग ।

गय, तोरा जखन ओहि ठाम सभ कहैत छथुन जे गामेपर पढ़ऽ तँ चल ने आ । देरी कयने कोन फऽल ? तोँ अयबेँ तँ हमरो पढ़बामे मोन लागत । संग-संग परीक्षामे बैसब । ओना तोहर एक साल छूटि जयतौक तँ हमरा लोकनिक संग छूटि जायत । तोँ एक क्लास निच्चाँ भऽ जयबेँ, ई कोनादन नहि लगतैक ? एहन उपाय कर जे दुनू बहिनी संगहि रही ।

गय रामजोड़ी, काकी जे भाइजीकेँ कहैत छलथुन से बात बूझि कऽ हमरो मोन विखिन्न भेल रहैत अछि । लोक सभ बेटीकेँ एना भार किएक बुझैत छैक ? देखिहिन ने, हमरो माय बाबूजीकेँ एक दिन मारि तमसाइत रहनि जे– अहाँ चुपचाप बैसल छिऐक ।

–तँ की हम ढोल पीटू आ कि चिचिआउ ?' बाबूजी हँसीक टोनमे कहलथिन ।

–अहू बेर अहाँ ध्यान नहि देबैक । एहिना हँसीमे उड़ा दैत छिऐक ।

–अहाँकेँ बेटी भारी लगैत अछि, हमरा नहि । एखन पढ़ैत छैक ।

माय खौंझाइत कहलकनि– रखने रहू तखन । ककरो-मुहेँ नहि सुनलिऐक अछि जे सन्तान जखन भार भऽ जाइत छैक तखने लोक ओकर बियाह-दानक चिन्ता करैत छैक ।' गय, हम देहरिपर रही से सहटि कऽ आङनमे चलि गेलहुँ ।

गय रामजोड़ी, हमरो बुझाइत अछि जे लोकक नजरिमे बदललि जा रहल छी ।

तोँ सिमरियाघाट गेलेँ, मुदा ओहि ठामक पूरा गप्प-सप्प लिखबे ने कयलेँ । तोहर सामाकेँ भसा देलियौक । सामा भसयबाक दिनुक गप्प की कहियौक । होइत छल जे खूब कानी । ओतबे दिनमे ओहि माँटिक मूरुतसँ लोकके केहन सिनेह भऽ जाइत छैक । तोरालेल सामाक ऐंठ चूड़ा-दहीकेँ सुखा कऽ रखने छियौक । अयबेँ तँ देबौक । तोहर काकी ओहि दिन तोहर बड़ खोज करैत छलथुन । कहैत छलथुन जे सोनादाइ बिना बड़ उदास लगैत छैक ।

शारदाक ओतऽ ओहि दिनुक बाद फेर एक दिन परमीला संग गेल छलिऐक । अपने मोने उपकरि-उपकरि कऽ ओकरा ओहि ठाम जाइत हमरा बड़ कोनादन लगैत अछि । गय, हमरा ओहि ठाम तँ ओ कहियो अयबे ने करैत अछि आ हमही बेर-बेर जाइत रही ? मुदा तोहर समाद ओकरा देबाक छल । फेर आठ-दस दिनसँ स्कूल आयब नागा कऽ देने छलैक तेँ परमीलाक संग गेल छलिऐक । ओ दुखित भऽ गेलि छलि । लटि कऽ खिरकिट्टी भऽ गलैक अछि । एकदमसँ काँटो-काँट ।

हम सभ गेलहुँ तँ ओ बाजलि जे– एहि बेर परीक्षामे हम फेल कऽ जायब । किछु

पढ़ल नहि भेल आ समय लगिचा गेलैक अछि ।' परमीला टुप दऽ कहलकैक– गय शारदा ! हमरा सभक लेल पढनाइ कोनो जरूरी नहि छैक– पढ़ैत रहनाइ जरूरी छैक । जे औतौक से एक बेर कऽ अपना सभकेँ कहबे करतौक जे पढ़ि कऽ की होयतैक ? बाबूजी कहैत छलथिन जे समाजक मनोवृत्तिए विचित्र प्रकारक भऽ गेलैक अछि ।'

तोँ जे लिखलेँ जे शारदाक भाइ तोहर नाम किएक पुछैत छलथुन, से हम की जानऽ गेलिऐक ककरो मोनक भितरिया गप्प ? ओना, ककरो नाम पुछबामे आरो कोनो बात हमरा जनैत नहि रहैत छैक । तोरा सम्बन्धमे जे गप्प-सप्प भेल से लिखनहि रहियौक । हँ, परमीलाक संग गेलहुँ, ताहि दिन ओकर भाइसँ सेहो भेंट भेल । फेर तोहर नामक चर्च, रुमालक चर्च । हम शारदाके तोहरवला गप्प सभ कहि देलिऐक । ओकर भाइ एहिपर बजलथिन– बड़ नीक लोक छथि अहाँक रामजोड़ी, बड्ड नीक ।' फेर शारदाकेँ पुछलथिन– की गय, तोँ बजैत रहैत छलेँ हमरापर, देख, आब फेर बजबे तँ बेजाय बात भऽ जयतौक ।' फेर हमरा कहलनि– हमरा दिससँ धन्यवाद कहि देबनि अपना संगीकेँ । हम हुनकर रुमालकेँ सुरक्षित रखने छियनि ।'

गय, हम जँ तोहर नाम ओहि ठाम बाजिये देलिऐक तँ एहिमे की भऽ गेलैक ?

श्रीनाथक भौजीकेँ हम पुछने रहिऐक– जे बहीन छलि से आब देयादनी भऽ गेल, से केहन लागल ?'

एहिपर ओ बजलीह जे– कनेक कोनादन तँ अवश्य लगैत छैक, मुदा फेर लोक मोनकेँ ओहने बना लैत छैक । अय रेवादाइ ! ओ तँ हमर ममियौत बहीन थिक, देयादनी होयत, मुदा सहोदर बहीन जखन सौतिन भऽ जाइत छैक, तखन केहन लगैत छैक ?'

हम चुप रहलहुँ थोड़ेक काल । पुनः पुछलियनि जे– रामजोड़ी लिखने छलि जे बियाह भेलापर दुनू गोटाक मोन मिलैत नहि छैक, जबरदस्ती संग-संग रहऽ पड़ैत छैक तेँ रहैत छैक । जँ दुनूक मोन मिलैत छैक तँ आश्चर्यक गप्प ।'

ओ हमरा कहलनि– अय, एना नहि बाजी, लोक सुनत से की कहत ? अहूँकेँ आ अहाँक रामजोड़ीकेँ कहि दैत छी जे एना बताहि जकाँ नहि सोचल करू । की होइत छैक आ की नहि, से अपने बेर पड़लापर बूझि जयबैक । अपने आबि जायत सभ । पहिनेसँ बूझि-गमि लेबा लेल किएक उताहुल छी ?

–अहाँकेँ तँ एहिना रहैत अछि, जेँ कि किछु पूछब कि आँयि-बाँयि बाजऽ लागब ।'

श्रीनाथभाइकेँ अपन कनियाँसँ पटैत छैक कि नहि से दोसर के जनतैक ? भौजी कहलनि जे– ई बात तँ छोटकाबौआ आ मनियाँ कहि सकैत अछि ।' लाख पुछलियनि, मुदा नहियेँ ने कहलनि जे श्रीनाथभाइ हुनका बहीनकेँ कोना कहिया देखलकनि । पत्र पबिते उतारा दिहेँ । **तोरे रामजोड़ी –रेवा**

12 हय रामजोड़ी, जय मैथिली !

तोहर चिट्ठी हमरा भेटल । तोँ हमरासँ जे सिनेह करैत छह तकर बखान हम नहि कऽ सकैत छी । तोहर पाँती-पाँती आ शब्द-शब्दमे सिनेहक मऽधु. बोरल रहैत छह । हमर-तोहर जे सङ्तिारय अछि, एहन की संसारमे आरो ककरो होयतैक ? हमर मोन सतत छटपटाइत रहैत अछि जे गाम चल आबी, मुदा हम की करी ? हमर की कोनो बस चलैत अछि ? बीचमे हम गाम अयबा लेल खूब हल्ला कयलहुँ । एहिपर भाइजी एकटा खिस्सा कहब सुरू कयलथिन– गय माय, एकटा रहय सूगा । एकदमसँ बनचर । ओकरा गाम-घरसँ भेंट नहि रहैक कहियो । से, एक दिन पड़ि गेल चिड़ैमारक हाथमे । ओ बेचि देलकैक राजाक हाथेँ । राजा ओकरा बड़ सिनेहसँ रानीकेँ देलकैक । रानी ओकरा सदिखन अपन आँचरेपर राखऽ चाहैक । दाख-मनक्का दैक । सिनेहसँ सौंसे देह सोहराबैत रहैक, मुदा ओ सूगा एहन बनचर जे...' हमरा बड्ड तामस भऽ गेल । हम कहलियनि– भाइजी ! ई बात हमहूँ बुझैत छी जे अहाँ ककरा धुआ कऽ कहैत छिऐक । बनचरे किएक, आरो जतेक विशेषण अबैत होअय सेहो कहू ने । कही तँ हम डिक्शनरी आनि दी ।'

–अनबो कर ने डिक्शनरी दौड़ि कऽ ।' हमर आँखि नोरा गेल । माय भाइजीकेँ कहलकनि जे– ई कचकचयबाक की अभ्यास छह ?

–गय, हम तँ मिथिला मिहिरक नेना भुटकाक चौपाड़िमे बहार भेल एकटा खिस्सा कहैत छलियौक । सोनादाइ अनेरे अपनापर सब बात लऽ लैत छौक ।' भाइजी बजलाह– एहन तुनकाहि तँ संसारमे देखल नहि अछि ! कोना कऽ वास होयतैक एकर ? ई तँ राति-दिन सासुएक झोंट तीरैत रहतैक !' हमरा असम्भव भऽ गेल बैसब । हम तमसा कऽ उठि गेलहुँ । हमरा भाइजी एहिना कहैत रहैत छथि । हम बड़ मस्किलमे पड़ि जाइत छी ।

हय रामजोड़ी, तोँ जे लिखलह अछि जे दुनू बहिनी संग-संग रहब से की एहन परिस्थितिमे रहि सकब संग ? जानि नहि, हमरा सभमेसँ के कतऽ जायत ? सदिखन एतबे चर्चा एहि ठाम चलैत रहैत छैक । जहिना तोहर माय ककाकेँ कहैत छथिन तहिना हमरो माय बाबूकेँ कहैत छनि । एहि अवस्थामे आबि कऽ सभक माय-बापक भाषा की एके रंग भऽ जाइत छैक ? हमरा जनैत तँ परमीला आ शारदाक ओहि ठाम सेहो एहने गप्प होइत होयतैक । जखन एहन गप्प चलैत छैक तँ हमरा बड़ लाज भऽ जाइत अछि । आ भाइजी खुष्टम-ख्याल कऽ कऽ हमरा आगाँ मायसँ ई गप्प-सप्प करबे करताह ।

संयोगक बात कहह, आ खुशीक गप्प जे हमर एक बरख बाँचि गेल । बाबूजी हमर नाम एहि ठाम एकटा गर्ल्स स्कूलमे लिखा देलनि । भरि दिन जे डेरापर माँछी मारैत रहैत छलहुँ से आब नहि होइत अछि । स्कूल जाइत छी, खूब मोन लगैत छैक । रंग-विरंगक छौंड़ी सभसँ भेंट-घाँट, परिचय-पात भेल अछि । ओ सब फीटे-फाटमे ततेक रहैत छैक जे हमरा नहि सोहाइत अछि । हम जे नाम लिखबऽ गेलहुँ तँ छौंड़ी सभ हमरा देखि कऽ कहय– हाय रे हाय ! जेना लफन्दर छौंड़ा सभ बाट चलैत बोली कसैत छैक ।

स्कूलक गप्प-सप्प तँ फेरो बादोमे लिखबह । तोरा सिमरियाघाटक हाल नहि लिखलियह । हय, ओहि ठाम तँ बूझह जे छोट-छीन मिथिला बसि गेल छलैक । बूझि पड़ैत छलैक जेना कोनो धर्मात्मा ऋषि-मुनि ई नगरी बसा देने होथि । हमरा लोकनि पोथियेमे तपोवनक वर्णन पढ़ैत छलिऐक, मुदा एहि ठाम तँ सद्यः देखलिऐक ।

बाबीक मोन भरि दिन प्रसन्न देखियनि । साँझमे गंगाक कछेड़मे दीप लऽ कऽ गीत गबैत साँझ देबऽ जाइ । ततेक दीब लगैक जे की कहियह । आध पहर रातियेसँ लोक पराती गाबऽ लगैक । बाबी हमर रंग-विरंक गीत सभ मोन पाड़ि-पाड़ि कऽ गबैत छलीह । हय रामजोड़ी, सभसँ पैघ एकटा आरो चीज देखलिऐक, गंगाक उपर पुल । ओतेक विशाल आ ओतेक भव्य ! तोहूँ एक बेर सिमरिया आबि कऽ देखि जइतह । दुमहला पुल छैक– नीचासँ रेलगाड़ी आ ऊपरसँ सड़क ! सुनैत छलिऐक हावड़ाक पुल नामी, मुदा हमरा जनैत तँ आब सिमरिये पुल नामी भऽ गेलैक ।

हय रामजोड़ी, आब तँ नाम लिखा गेल तेँ एखन तँ आब आबिये ने सकैत छी, तेँ सामाक ऐंठवला चूड़ा लिफाफमे पठा दिहह, बड़ गुन मानबह ।

शारदाक ओतऽक गप्प-सप्प कहने छलह, फेर एम्हर गेलीह अछि की नहि ? शारदाक मोन आब ठीक भऽ गेलैक ने ? बड़ चिन्ता भऽ गेल अछि । हमरा दऽ आरो की सभ कहैत छलह ओ ? हय, शारदा तोरा ओहि ठाम नहि अबैत छह आ तोँही जाइत छहक, ताहि लेल तोरा बड़ क्षोभ छह ? एहन नहि होयबाक चाही । तोँ कहह तँ हम ओकरा चिट्ठी लिखिऐक । तोँ ओकरा ओहि ठाम जायब नहि छोड़िहह । तोँ जे शारदाक भाइकेँ हमर नाम कहि देलहुन ताहि सम्बन्धमे जे हम लिखलियह, ताहि लेल तोरा दुख भेलह । हम तँ ओहिना लिखलियह । ओ जे हमरा धन्यवाद देलथुन से फेर हुनके घुमा कऽ दऽ दहुन । रुमाल सन छोटो छीन वस्तुक लेल ओतेकटा पैघ धन्यवाद नहि चाही हमरा । शारदाकेँ पुछिहक जे नऽव डिजाइनक आरो रुमाल पठा दिऐक ? ओकर कुशल-मंगल लिखिहह आ हमर 'नमस्ते' कहि दिहक ।

रामजोड़ी हय, श्रीनाथक कनियाँक नाम मनियाँ थिकैक । भौजियो बेस मनोरंजक लोक छथि । हुनका लग रहू तँ एको रत्ती 'बोर' नहि होयब । बेस रसगर गप्प सभ करैत रहैत छथि । आब देखी जे हुनकर मनीदाइ केहन छथिन ।

हय, हमरा लोकनि की अनर्गल सोचैत छी जे ओ एना डटलथुन अछि । बात पुछब तँ कोनो अनर्गल नहि भेलैक । हे, अपन सभक पत्राचारक गप्प-सप्प खुलि कऽ हुनका नहि कहियहुन । ओ बड़ खेलाड़ि छथुन । सभकेँ कहि देथिन । लोक सभ बूझत जे ई दुनू अपन चिट्ठीमे यैह गप्प-सप्प लिखैत अछि तँ की कहत ? अपनो कतेक लाज होयत ? हमर चिट्ठी पबितहि तोँ अपन पूरा-पूरी हाल-समाचार लिखिहह । एको बात बिसरिहह नहि । उतारा तुरन्त दिहह, तोरा हमरे सप्पत । **तोरे रामजोड़ी –सोना**

13 गय रामजोड़ी, जय मैथिली !

तोहर चिट्ठी भेटि गेल । तों जे हमरा चिट्ठीक ओतेक प्रशंसा कयले अछि जे पाँती-पाँती मऽधु ब्ओरल रहैत अछि से ओहने सन हमरा लागल जेहन श्रीनाथक कनियाँ चिट्ठी लिखने छलैक । बड़ सुन्दर चिट्ठी लिखैत छथिन मनीदाइ । श्रीनाथक भौजी हमरा एक दिन बजा कऽ कहलनि जे मधुर खुआबी तँ हम एकटा वस्तु देखऽ दी । हम कहलियनि जे भैयासँ कहि कऽ मधुर खुआ देब ।' फेर कहलियनि जे– अहाँ अपने मधुर सन छी, अहाँके देखि कऽ अनेरो कतेक मधुमाछी आ भमरा सभ चारू कात भनभनाय लागत । ओ हमरा एक ठुनका मारि देलनि– बेसी लबर-लबर नहि करी ।

–हम की कोनो फूसि कहैत छी ? सौंसे गामक लोक कहैत अछि । अपनो अयनामे मुँह देखिते होयब ।

–भऽ गेल, आब हमरा अहाँक बाजा-भुक्की बन्द ।' भौजी ई बात बजलीह तँ, मुदा भीतरसँ हमर बात नीके लगलनि । तकरा बाद कतेक नेहोरा कयलाक बाद कहलनि– मनियाँ छोटका बौआके चिट्ठी लिखैत छनि से एकटा हम चोरा लेलियनि जेबीमेसँ । हमरासँ बड़ नुकबैत छलाह । हम पुछैत छलियनि जे बौआ अहाँ मनीके चिट्ठी दियौक ने, तँ कहथि जे हमरा नहि अबैत अछि ई लटर-पटर ।' हम कहियनि जे मनियो नहि लिखैत अछि ?' ताहिपर कहथि जे पुछियौन ने अपन मानिनी बहीनसँ ? हुनका तँ हम सोहाइते ने छियनि तँ ।'

भौजी आगाँ कहलनि– अहाँ जे सोनादाइक बात हमरा कहने छलहुँ जे दूगोट अनठीयाके एक ठाम कऽ देने मोन कोना मिलतैक' से हमरा अपने मोनमे सन्देह होमऽ लागल । होइत छल जे छोटका बौआ मोनसँ मनियाँके मानैत छथिन कि नहि ? मनियोसँ चिट्ठी लीखि कऽ पुछलिऐक तँ घुमा-फिरा कऽ गोल-मटोल भाषामे की कहाँ लीखि देलक जे– ककरा मोनमे की रहैत छैक से के जानय । अपन मोन-मोनक गप्प थिकैक; ककरो नीक लगैत छैक, ककरो नहि ।' आरो की-कहाँ ने लिखलक ।

भौजी हमरा कहलनि– हमरा तँ मोनमे चिन्ता भऽ गेल जे सत्तेमे ई दुनू गोटा मुँह फुला कऽ बैसल अछि । से बात तँ नीक नहि । एखन तँ खाइ-खेलाइवला अवस्था छैक । मुदा की कहू अय रेवादाइ ! मनियाँ तँ बेस गब्बरि बहार भेलि । हम कहने रही ने जे बियाह होइते देरी मोन मोहि लेबाक विद्या आबि जाइत छैक ? पजोह लगबैत-लगबैत परसूखन एकटा लिफाफ ऊपर कयलहुँ ।

कहैत छियौक रामजोड़ी ! मोन कोनादन करऽ लागल । भेल जे कने देखितिऐक जे की सभ लिखने छैक । कोना लिखने छैक । मुदा भौजी एकरा बाद आरो लटाढ़म पसारि देलनि । किन्नहु देबे ने करथि । कतेक दँतरिगड़ी कयलाक बाद हमरा ओ चिट्ठी देलनि । हरियर रंगक खूब चिक्कन कागतक एक कोनपर बेस सुन्दर कमलक फूलक छाप । कहैत

छियौक रामजोड़ी, ओ चिट्ठी हाथमे लैत मात्र हमरा किदन भऽ गेल । छाती बड़ी जोरसँ धड़कऽ लागल, देह काँपऽ लागल । होइत छल जे सौंसे देह बिनबिनाय लागत । कोनहुना कऽ सम्हारलहुँ अपनाकेँ । आ ओकर चिट्ठी जे पढ़लिऐक से भेल जे पढ़िते रही । कोना-कोना कऽ फुरलैक से नहि कहि ।

गय रामजोड़ी ! तोरा हम की कहाँ, कोन ककर खिस्सा लीखऽ लगलियौक । लिखबाक चाही अपन गप्प । अनकर चिट्ठी-पत्रीसँ हमरा सभकेँ की ? गय, तोँ जे बियाहवला चर्च दऽ लिखलेँ से सत्ते सभ ठाम एतबे बात । हमरा तँ बूझि पड़ैत अछि, हमर चलब-फिरब लोक बन्द कऽ देत । आङनमे जे केओ आओत से बाजत-कोनो कथाक उपन्यास नहि भेलैक अछि ? कतहु गप्प चलि रहल छैक कि नहि ?

हम जे ककरो आङन जायब तँ कहत की, आब रेवती बियाह करक जोग बड़ सुन्नर भऽ गेलैक । आब बियाह भऽ जैतैक तँ बड़ दिब होइतैक । मने सभकेँ जेना हमरे चिन्ता-फिकिर होइक । एक दिन परमीला हमरा कहलक जे हय रेवा ! हम सभ जेना माय-बापकेँ, सऽर-समाजकेँ सभकलेल जेना जानक कबाहटि भऽ गेलिऐक ।' हम पुछलिऐक जे से की ?' एहिपर जे कहलक से फेर वैह कथा । शारदाक ओहि ठाम गेल रही तँ ओकरो ओहि ठाम ओतबे खिस्सा । शारदा बाजलि जे सम्भवतः एहि बीचमे हमरा लोकनि कहियो गामो जाइ । जँ भऽ जयतैक तँ...

हम पुछलिऐक जे– की भऽ जयतैक ?' ओ बाजलि जे– हम नहि जनैत छिऐक ।'

शारदा आब निकेँ अछि । शारदा हमरा ओहि ठाम नहि अबैत अछि ताहिलेल मोनमे क्षोभ भेल छल, मुदा ओ की सभ-दिना छलैक ? गय, ! हमरा तँ स्कूल जयबाक रहिते अछि । पाँच-दस मिनट कष्ट करऽ पड़ैत अछि आ ओकरा तँ हमरा ओहि ठाम अयबामे उनटा पड़तैक ने । हम ओकरा ओहि ठाम जाइत रहबैक । ओहि दिन तोहर कुशल-मंगल आ 'नमस्ते' सभ कहि देलिऐक । शारदाकेँ हम कहलिऐक जे– हय, रामजोड़ी कहलकह जे आरो रुमाल पठा दिऐक ?' शारदा बाजलि जे– हमरा सोनादाइक रुमालक दुआरेँ लाज होइत रहैत अछि । भाइजी हमरा बेस फटकफन्दमे धऽ देलनि । सोनादाइ प्रायः ई समाद दऽ कऽ हमरा लजबैत अछि । हमरा पठाओत कथीलेल ?

शारदाक भाइ-बगलवला कोठलीमे छलथिन से ओ आबि कऽ कहलथिन– गय, ओना नहि बाजल कर । कोनो तोहर वस्तु नहि लेलियौक । अपने देबेँ नहि आ अनका रोकैत रहबहिन ।' फेर हमरा कहलनि– हे अय, अहाँ अपना रामजोड़ीकेँ कहबनि रुमाल पठा देबाकलेल । जँ ई नहि लेतनि तँ हम लऽ लेबनि ।

शारदा हमरा कहलक जे– नहि हय रेवती बहीन ! हिनका रुमाल दियौन तऽ ई बटने औताह । जे मङतनि तकरा दऽ देथिन । फूल बनयबामे मेहनतियो होइत छैक कि ओहिना भऽ जाइत छैक ?' गय रामजोड़ी ! शारदाक भाइ बड़ नीक स्वभावक छथिन ।

गय रामजोड़ी, तों ओहि ठामक स्कूलमे नाम लिखौलें से जानि मोन बड़ प्रसन्न भेल । जाहि स्कूलमे नाम लिखौलें से केहन छैक ? मोन लगैत छौक कि नहि से सभ लिखिहें । के सभ नव-नव संगी-बहिनपा भेलौक अछि ? ओकरा सभ संगे खूब गपाध्याय चलैत होयतौक । हे गय ! ओहि सभमे लिपित भऽ कऽ अपन रामजोड़ीकें नहि बिसरि जइहें । ओहि ठामक अपन सभ संगीकें हमर 'नमस्ते' कहि दिहनि । सिमरियाघाटक जे गप्प लिखलें से पढ़ि कऽ तँ भेल जे अपना हाथक बात रहैत तँ तुरन्त देखि अबितहुँ । सिमरियापुल देखबा लेल मोन लागल अछि । कनेक एक बेर देखितिऐक । तों आब अयबे ने करबें तें जल्दी-जल्दी चिट्ठी-पत्री दैत रहिहें । लिफाफमे चारिटा सामावला चूड़ा पठा रहल छियौक । खा लिहें । आरो कुशल-मंगल जनबिहें । **तोरे रामजोड़ी –रेवा**

14 **हय रामजोड़ी, जय मैथिली !**

तोहर चिट्ठी भेटल । पढ़ि कऽ मोनमे जे हर्ख भेल से वर्णन करबा योग्य नहि । सौंसे दुनियाँमे हमर-तोहर सन मीती ककरो होयतैक से हमरा सन्देह अछि । हम अपना स्कूलक हाल-चाल की लिखियह ? बुझह तँ परीक्षाक जाँतमे पिसीमाल भेल छी । आब भरोस नहि होइत अछि जे एहिसँ उबरब । मोनमे होइत अछि जे भने नाम नहि लिखाओल गेल छल । सभ किछुसँ निश्चिन्त छलहुँ । कखनो एको घड़ी पलखतिये ने भेटैत अछि जे आन कोनो गप्प सोची कि आन कोनो काज करी । दू-एकटा क्लासक संगी भऽ गेल अछि से ओ आबि कऽ बहुत रास समय लऽ लैत अछि । एही सभ दुआरें तोरा चिट्ठीक उतारा देबामे कनेक बिलम्ब भऽ गेल । तों एहि हेतु रुष्ट नहि होइहह ।

रामजोड़ी हय, स्कूलमे मोन तँ खूब लगैत छैक । खेलयबाक सामान सभ एहि ठाम खूब छैक । अपना ओहि ठामक स्कूल जकाँ एहन नहि जे टिफिनमे आम आ कि लिच्चीक गाछ तरमे बैसि कऽ बदाम फोड़ैत रहू । एहि ठाम बेगेटेला आ लूडो खूब खेलाइत छी । कहियो कऽ बैडमिंटन सेहो खेलाइत छी । हय, अपन स्कूलमे हम सभ कोना तीतल बिलाड़ि जकाँ रहैत छलहुँ, मुदा एहि ठाम सभकें निडर, निधोख देखैत छिऐक । कखनो-कखनो कऽ ओकर सभक ई उद्दाम व्यवहार हमरा अधलाहो लगैत अछि । हय, एकटा बात की कहियह, लफन्दर छौंड़ा जकाँ कोनो-कोनो छौंड़ी सेहो कयल करैत छैक । बड़ असर्ध लगतह । तों जे लिखलह जे एहि ठाम नऽव संगी सभमे हमरा बिसरि नहि जइहें– से कोना भऽ सकैत छैक । तों तँ हमर हृदयक संगी छह, मन-प्राणमे बसलि । ओकर समता दोसर के कऽ सकैत अछि ?

तँ श्रीनाथभाइ ओ हुनकर मन्नीदाइमे प्रेम-पत्री सेहो चलैत छनि ! कोना-कोना कऽ हाथ लागि गेलह ओ लिफाफ ? चिट्ठीमे की सभ गप्प छलैक लिखल ? कोना-कोना कऽ लिखने छलैक, हय ! हमरा ओहिलेल बड़ मोन लागल अछि । कनेक लिखिहह तँ विस्तारसँ जे की सभ छैक । बियाह-दानवला गप्प-सप्प तँ बूझह जे जीयब असम्भव कऽ देलक अछि । अपनो मोनमे कोनादन करैत रहैत अछि । की लिखियह जे मोनमे की सभ होइत अछि ।

शारदा गाम किएक जयतैक हय ? हम ओकरा किएक लजयबैक ? ओ अनेरे अपना मोनमे किदन-कहाँदन सभ सोचि-विचारि कऽ रखने अछि जे हम यथार्थेमे ओकरा रुमाल पठयबा दऽ लिखलिऐक अछि । हय, रामजोड़ी, एहि ठाम बड़ नव-नव डिजाइनक कसीदा सभ देखैत छिऐक । मोनमे होइत अछि जे सभकेँ 'ट्रेस' कऽ कऽ राखि ली । दू-तीनटा डिजाइन उतारि कऽ तोरो पठा देबह आ शारदोकेँ पठा देबैक । एहि ठाम डिजाइनक बड़ बढ़ियाँ पोथी सभ भेटैत छैक । भाइजीकेँ कय दिन ने नेहोरा कयलियनि जे आनि दियऽ, मुदा भाइजी तँ जेना बहीर भऽ जाइत छथि । हमरा कहलनि जे एना जे तोँ **सिन्धी कढ़ाइ**क पाछाँ बेहाल भेल छेँ से **तिरहुतिया कढ़ाइ** पहिने अबैत छौक ?

—अहींक मुहेँ नाम सुनैत छी ई ।' हम कहलियनि— तिरहुतिया कसीदा आइ धरि नहि सुनने छलिऐक ।

—आब सैह सभ कहबहिन ने ? थोड़ेक दिनमे तिरहुतियाभाषा, तिरहुतिया वेश-भूषा...'

—मैथिली भाषा की...' हम बीचमे टोकलियनि ।

—हँ हँ, मैथिली भाषा, वेश-भूषा, आचार-व्यवहार सभ ने बिसरि जयबेँ ।' भाइजी तमसाइत बजलाह । हम तँ अप्रतिभ भऽ गेलहुँ जे ई कोन बात भेलैक ? हय, अपना सभक ओहि ठामक जे रीति-नीति छैक ताहिपर चलिते छी, मैथिली पढ़िते छलहुँ । एहि ठामक स्कूलमे मैथिलीक पढ़ाइ नहि होइत छैक तँ तकरा हम की करिऐक ? जहाँ धरि कसीदाक कोनो प्रश्न छैक से अपना सभक ओहि ठाम सेहो कोनो प्रणाली छैक से हमरा बुझले नहि अछि । सभ ठाम तँ यैह नवका डिजाइन प्रचलित छैक ।

हमर मोन बड़ बिखिन्न भऽ गेल हुनक व्यवहारसँ । जखन कखनो दाओ भेटतनि कि एकटा भाषण दऽ देताह, मिथिलाक संस्कृतिपर । अन्तमे कहताह जे— कहि दैत छियौक, जाहि ठाम जइहेँ ओहि ठाम मैथिलीक सेवा करब अपन धर्म बूझि लिहेँ ।'

हय रामजोड़ी, कतऽ पहिने ओ भरदुतियाक नोत लेबऽलेल तैयार नहि होइत छलाह । मुदा जहियासँ ओ विद्यापतिपर्व देखलथिन अछि, तहियासँ मैथिलीपर बेस भाषण देबऽ लगलाह अछि ।

हय रामजोड़ी, भाइजीक गप्प-सप्प एहने रंगविरंगक होइत रहैत छनि । हमरो भाइजी ओहिना करैत रहैत छथि जेना शारदाक भाइजी ! हय, शारदाकेँ कहिहक जे ओकर भाइजी जँ रुमाल बाँटिये दैत छथिन तँ कोन पैघ अपराध भऽ गेलैक ? बड़ कंजूस बूझि पड़ैत अछि ओ । शारदाक ओहि ठाम फेर गेलहक अछि कि नहि ? शारदाक भाइ हमरो चर्च करैत छलथुन ? की सभ चर्च कयने छलथुन से सभ लिखिहह । हय, शारदाक मोन आब खूब फरहर भऽ गेल होयतैक । ओकर भाइ सेहो खूब स्वस्थ होयथिन से आशा करैत छी । शारदा लोकनिकेँ कहि दिहक जे हमरा बिसरि नहि जाय ।

परमीलाक हालचाल लिखिहह, ओकरालेल कतहु ताकल जाइत छैक वा नहि ? ताकल तँ जाइते होयतैक, मुदा बेचारीक भाग्यमे आबे जे होइक । ओकर बाबू ओतेक टाका गनि सकथिन हय ? बाप रे ! लोक सभ टाकालेल जे मुँह बौने रहैत छैक ! बाबूजी परसू राति खन बजैत छलथिन । ओ कहैत छलथिन जे– आइ काल्हि तँ बेटीवलाक जीब कठिन भऽ गेलैक अछि... ।' आरो आगू किछु बजितथिन, मुदा हम तावत चाह लऽ कऽ पहुँचि गेलियनि । हमरा कानमे कनेक अंश पड़ल । हम तँ लाजेँ जेना कठौत भेलि जाइत रही । तुरन्त हम पड़ा कऽ अपन कोठलीमे चल अयलहुँ । बाबूजी मारि किदन-कहाँदन गप्प करैत रहथिन ! हम नहि बुझलिऐक सरिया कऽ । हय, परसूसँ परीक्षा अछि, तकरा बाद बड़ा दिनुक छुट्टी होयतैक, तखन तोरा निश्चिन्तसँ मोनक गप्प-सप्प लिखबह । तोहर परीक्षाक की हालचाल से लिखिहह, शेष कुशल अछि । **तोरे रामजोड़ी –सोना**

15

गय रामजोड़ी, जय मैथिली !

तोहर चिट्ठी ठीक परीक्षाक साँझमे भेटल । उपरे-झापड़ पढ़ि सकलियौक, खूब नीक जकाँ तँ राति खन पढ़लियौक आ एखन उतारा देमऽ लेल तैयार भेलियौक । परीक्षाक कारणेँ तोहर चिट्ठीक उतारा देबामे हमरा विलम्ब भेल तदर्थ क्षमा करिहेँ । तामस नहि करिहेँ, तोँ बड़ नीक लोक छेँ से हमरा बूझल अछि आ नीक लोक तमसाइत नहि अछि ।

गय रामजोड़ी, एखन जाड़-ठाड़ ततेक पड़ैत छैक जे सीरक तरसँ बहार होयबाक एको रत्ती ने मोन होइत छैक आ ने साहस । धनउसिनियाँ खूब चलि रहल छैक । भरि आङन पथार पसरल रहैत छैक । आब परीक्षासँ जान छूटल अछि तँ मायक संग पुरबैक । परमीला तँ पहिनहिसँ धनउसिनियाँमे लागलि अछि । हम कहलिऐक जे– हय परी, एखन परीक्षा छह आ तोँ एहिमे लागल छह ?

–कोनहुना पास कऽ जाइ' –ओ निफिकिर भेल बाजलि– से पास कइए जायब । ओहिसँ फाजिल चाहबे की करी हमरा ?' हमरा एकान्तमे बड़ उदास भऽ कऽ कहलक जे– हय रेवा बहीन ! आब हमरा ई अनुभव होइत अछि जे ई पढ़ब-लिखब एकटा ठट्ठा थिकैक । ओकर कोनो मोल नहि । अपन नाम-गाम लिखऽ आबि गेल बस 'इति' । पहिने तँ एतबे पढ़ने मौगीक प्रशंसा होइत छलैक । हम तँ भला बहुत पढ़ने छी ।

–हय तोँ एना विषादमयी किएक बनलि छह ? एना उदास आ करुण होयबाक की कारण ?' हम कहलिऐक ।

–हय रेवा ! कोनो एहन यात्री, जे नाओपर बैसल बसातक झोंकपर बहल जाइत रहैत अछि ओकर जे स्थिति रहैत छैक, सैह स्थिति तँ हमरो सभक अछि ने । जानि नहि, कोन किनार-घाट लागब हमरा लोकनि । तोँ नहि अनुभव करैत छहक ?

–हँ' –हमरा मुँहसँ बहार भेल ।

परमीलालेल कोनो कथा एखन धरि नहि ठीक भऽ रहल छैक। ओकर बाबूजी छथिन गान्धीवादी लोक, से सभ पहिनहि भटकि जाइत छनि जे ई तँ आदर्शवादी विवाह करबाक लेल कहताह। अपना टाका ओतेक छनि नहि। देखहिन आगाँ की होइत छैक।

तोँ तँ पटनियाँ स्कूलमे जा कऽ खूब रमि गेलेँ अछि। खूब मोन लगिते होयतौक। परीक्षा केहन भेलौक से लिखिहेँ। अयँ गय रामजोड़ी ! ओहि ठामक छौंड़ी सभ बड़ ढीठ होइत छैक ? माय-बाप किछु कहैत नहि छैक की ? तोँ तँ ने बहकैत छेँ ? ओहि ठामक नवकी संगी सभमे रमि कऽ हमरा बिसरैत नहि छेँ से हमर सौभाग्ये अछि।

श्रीनाथभाइक कनियाँ जे चिट्ठी लिखने छलैक से कोना लिखियौक, भौजी मना कऽ देने छथि ओकरा ककरो कहबा लेल। हम हुनकासँ पूछि कऽ सभ बात लीखि देबौक। गय रामजोड़ी, अनकर चिट्ठीक गप्प-सप्प बुझबाकलेल मोन एना उताहुल किएक छौक ? हमरा तोरा सभकेँ ओहिसँ की ? बेल पाकल तँ कौआक बापकेँ की ? ओना मनीदाइ छथिन बेस रसगरि। जखन तोँ हुनकर प्रेमपाती देखबहुन तँ बूझि पड़तौक। ऊपरसँ श्रीनाथभाइ कोना अन्यमनस्कता देखबैत छलाह ?

अपन हाल-समाचार की लिखियौक ? बाबूजी बड़ कमे काल गामपर रहैत छथिन। बेसी काल बाहरे रहैत छथिन। एखन तँ एहन बूझि पड़ैत छैक जेना दिनकेँ दिन आ रातिकेँ राति नहि बुझैत होथिन। मोनमे बड़ गरानि होइत रहैत अछि जे हमरा सभक जन्म बेटी भऽ कऽ किएक भेल। ककरो अपन मोनक गप्प नहि कहैत छिऐक। परमीलोकेँ नहि। मायक ठोरपर सदिखन फुफड़ी पड़ैत रहैत छैक। कखनो-कखनो एकसरमे हमरा अपना कोरमे समेटि लैत अछि आ कहैत अछि— हमर सोनक टुकड़ी !!!

मोन तखन कऽ कोनादन करऽ लगैत अछि। होइत अछि जेना बुकौर लागि जायत। माय पहिने एना नहि करैत छलि। आब तँ पहिने जकाँ गोँहछि कऽ बजबो ने करैत अछि। बाबूजी जखने अबैत छथिन तखने माय हुनका लगमे जिज्ञासाक हेतु पहुँचि जाइत छनि— फेर एकटा विषादक कालिमा ओकरा मुखमंडलपर आबि जाइत छैक।

तोँ एहि सम्बन्धमे अपन हाल-चाल लिखिहेँ, ई सभ तँ किछु लिखिते ने छेँ तोँ। खाली भाइजी आ स्कूलक गप्प। एहू सभक सम्बन्धमे किछु लिखल करी ने। जे-से, तोरा एहि सम्बन्धमे कोन चिन्ता, जखन तोहर बाबूजी चाहथुन तखने एकसँ एक भेटि जयतौक।

शारदा ओहिठाम तँ हम आ परमीला बरोबरि जाइत रहैत छिऐक। ओकर भाइक गप्प-सप्प सुनबामे बेस मोन लगैत छैक, सदिखन हँसबिते रहैत छथिन। हमरा सभकेँ तँ हँसैत-हँसैत पेटमे बगहा लागि जाइत अछि। हुनका स्टोव जरयबाक बड़ सिनेह रहैत छनि, से जहाँ केओ पहुँचतनि कि ओ तड़ाक दऽ ओकरा लेसि चाहक ओरियान करऽ लगैत छथिन। शारदा सेहो ओहिमे लागि जाइत अछि। हुनकर स्वास्थ्य तँ बड़ सुन्दर छनि तखन तोरा एतेक चिन्ता किएक भऽ गेलौक ? एहि बीचमे ओहि ठाम तोहर कोनो चर्च नहि भेल छलौक। तोँ जे लिखलेँ जे 'शारदालोकनि बिसरि ने जाय' से शारदाक संग ई 'लोकनि' के सभ ?

गय, रामजोड़ी, भाइजी जे **तिरहुतिया कढ़ाइ** कहलथुन से ठीके । अपना ओहि ठाम बड़ सुन्दर सियाइ बखिया, कौड़िया, डेउढ़िया, लहेरिया, बुट्टी, भरीथ झिक्को, मछखोइया आदि होइत छलैक, से तोरा नहि बूझल छौक ? जँ ओहि पद्धतिकेँ कनेक आरो विकसित कऽ दितैक तँ बड़ दीब होइतैक । मुदा से भेलैक कहाँ ? सभ लोक तँ अपन निज वस्तुकेँ छोड़नहि जा रहल छैक । हमरा-तोरा रोकने कहाँधरि रोकयतैक । जहाँधरि पार लागत तहाँधरि अपन सभ्यता-संस्कृतिकेँ बचयबाक चेष्टा तँ करबे करबैक । आरो हालचाल लिखिहेँ । जाड़ केहन लगैत छौक ? देहेँ-समाङे खूब निकेँ होयबेँ । काकीकेँ हम गोड़ लगैत छियनि से कहि दिहनु । आरो सभ कुशल । **तोरे रामजोड़ी –रेवा**

16

गय रामजोड़ी, जय मैथिली !

तोहर चिट्ठी तँ बहुत पहिने भेटि गेल । किन्तु समयपर हम ओकर उतारा नहि दऽ सकलियौक ताहि हेतु मोनमे बड़ रोख होयतौक से हम बुझैत छी । मुदा एके व्यक्ति संसारमे सभक मोनकेँ प्रसन्न नहि कऽ सकैत छैक । हमरा जनैत चिट्ठीक कोनो विशेष महत्त्व नहि छैक । तोँही कह जे थोड़ेक सादा कागत, मोसि, समय आ दिमागिक खर्च छोड़ि कऽ आरो लाभे कोन होइत छैक । दोसर बात जे सभ व्यक्तिकेँ अपन-अपन धन्धि रहैत छैक । तोरो अपना, अपन काजक चिन्ता होयतौक । ओहिमे हमर चिट्ठी जा कऽ ओझरे ने करैत होयतौक ? मोनमे तामस होयतौक जे रामजोड़ी सेयाखे करैत रहैत अछि ।

हमर चिट्ठी तोरा पढ़बामे नीक तँ नहिये लगतौक– तैयो हमर मोन नहि मानलक– नहि मानल गेल तेँ लीखि रहल छियौ । तोँ हमरा बिसरि सकैत छेँ, बिसरि गेलि होयबेँ, मुदा हमरा बुतेँ बिसरब सम्भव नहि अछि । हम तोरा नहि बिसरि सकैत छियौक । तोँ जे हमरा बिसरबेँ ओहिमे तोहर कोनो दोख ने, सभ हमर दुर्भाग्य अछि । बिना भाग्यक दोखेँ कोनो बात ने होइत छैक । भाग्य सांकुल रहने सभ किछु अपने होइत रहैत छैक ।

गय रामजोड़ी, एक्समसक छुट्टी छलैक । डेरामे बैसल मोन नहि लगैत छल एको रत्ती । अपना सभक ओहि ठाम धनकटनी भऽ गेल होयतैक । चारू कात खाली धान-धान होयतैक । हमरा ओ सभ देखबा लेल मोन छटपट कऽ रहल अछि । तोँ आ परमीला ओहीमे बाझल होयबेँ । शारदा आइ-काल्हि की करैत अछि ? परमीलाकलेल एखन कोनो कथा नहियेँ ठीक भेलैक अछि ? गय, सभक संग कोनो-ने-कोनो नुकसी लागले रहैत छैक । बाबूजीकेँ सेहो कतेक ठाम एहिना लोक कहैत छनि– एह, अहाँ तँ मारि टाका कमा कऽ जमा कयने होयब । अहगरसँ खर्चे कऽ देबैक तँ की होयत ? लोक जकरा टाका दैत छैक से तँ फेर अपने लोक भऽ जाइत छैक । बाबूजीक मोन एहि सभसँ बड़ विखिन्न रहैत छनि । एक गोटे कहलकनि जे– अहाँकेँ कोन चिन्ता ? आइ जतेक गनब, काल्हि ओतेक अपन बेटामे गना लेब । गय रामजोड़ी, कतेक खराब बात छैक ई सभ ! तोँही कह, टाका दऽ कऽ कतहु लोककेँ अपन बनाओल गेलैक अछि ? ओहन व्यक्ति टाकाकेँ चिन्हतैक की मनुक्खकेँ ? हमरो मोन कोनादन करैत रहैत अछि । बड़ा गरानि जकाँ

बुझाइत अछि । कखनो कऽ भाइजी कहताह जे– हय दसहजारी नोट, कने फल्लाँ काज कऽ दियऽ तँ' –हम तँ कटि जाइत छी ।

गय रामजोड़ी ! परमीलाक कहल बात जे कोनो यात्री जँ नावपर बैसल बसातक झोंकपर बहल जाइत रहैत अछि तँ ओकर जे स्थिति रहैत छैक, सैह स्थिति हमरो सभक अछि, से एकदम ठीक । हमहूँ सैह अनुभव कऽ रहल छी । मोनक कोनो कोनमे आशंकाक बिहाड़ि जकाँ बहैत रहैत अछि । मारि की–कहाँ सभ सोचैत रहैत छी । एहन स्थितिमे जँ तोरासँ भेंट होइत तँ हमरा कतेक भरसाहा होइत ! आब कह जे हम पटनियाँ स्कूलमे कोना रमि सकब, तोरा कोना बिसरि सकब ? एहिसँ तोरा ईहो अन्दाज लागि गेल होयतैक जे बाबूजी जखन चाहथिन तखने सभ किछु नहि भऽ जयतैक । जैह हाल तोहर बाबूजी आ मायकेँ छनि सैह हालति एतऽ हमरो माय आ बाबूजीकेँ छनि । तेँ हम तोँ दुनू बहिनी एके रंग छी ।

शारदाक ओहि ठाम खूब गेल करैत छेँ । मुदा हमर कोनो चर्चा ओहि ठाम नहि करैत छेँ । किएक करबेँ ? तोरा एको रत्ती मोनमे ई बात नहि उठैत छौक जे अपन संगी सभ लग अपन दूरदेशिनी रामजोड़ीक नामोक चर्च कऽ दिऐक ? शारदाक भाइजीक जे गप्प–सप्प दऽ लिखलेँ से पढ़ि कऽ तँ हमरो भेल जे जँ पाँखि रहैत तँ ऊड़ि कऽ ओहि ठाम चल अबितहुँ आ हमहू खूब सुनितहुँ । हुनकर गप्प सुनबालेल हमरा बड़ सेहन्ता होइत अछि । कखनो कऽ शारदाकेँ आ ओकरा भाइजीकेँ देखबाक मोन हमरा भऽ जाइत अछि । बहुत दिन भऽ गेल ने भेंट भेला । तोँ तँ खूब ओहि ठाम जा कऽ चाह पिबैत छेँ । हम तँ अभागलि छी, पटनाक जालमे बन्द, माछ जकाँ छटपटा रहलि छी । तोँ तँ मुक्त गगन–पंछी जकाँ छेँ । हमर–तोहर कोन तुलना ?

श्रीनाथभाइक कनियाँक चिट्ठी तोँ हमरा नहियेँ पठौलेँ । तोँ लिखलेँ अछि 'अनकर चिट्ठीक गप्प–सप्प बुझबाक लेल मोन किएक एना उताहुल छौक ?' से अपना मोनसँ नहि पुछैत छेँ जे एना किएक होइत छै ? किएक ओ चिट्ठी पढ़ि कऽ तोहर छाती धड़कऽ लगलौक, सौंसे देह कापऽ लगलौक आ बिनबिनाय लगलौक ? हम कनेक मङलियौ पढ़बाक लेल तँ हमरासँ सबाल पूछि देलेँ । नहि पढ़ो ओ चिट्ठी, तोरा हमरे सप्पत छौक ।' गय, गाछमे बेल पकलैक तँ कौआक बापकेँ की ? हमरा ओहि चिट्ठीसँ कोन मतलब ? जँ इच्छा होउक तँ अपनो चिट्ठी हमरा नहि लिखहिँ । हम अपन सन्तोख कऽ लेब ।

हँ, एक बात, श्रीनाथक भौजीकेँ कहि दिहनु जे हमरोसँ फेरो कहियो बेगरता लगतनि, तखन हम मोन पाड़ि देबनि । आइ–काल्हि बड़ बनऽ लगलीह अछि ओ । ओ किएक तोरा मना कयलथुन ओ चिट्ठी अनका देखयबासँ से हमहूँ बुझैत छिऐक । हुनकर सफाइ मतलब छलनि जे सोनाकेँ एहि चिट्ठीक गप्प नहि कहल जाइक । नहि कहल जाइक तँ सेहो बेस, भौजियो बेस, तोँहू बेस । आ प्रेमपाती सेहो बेस आ ओकर लिखनिहारि मनीदाइ सेहो बेस । मोन होउ तँ चिट्ठीक जबाब दिहेँ आ नहि तँ छोड़ि दिहेँ, ई नहि बुझिहेँ जे बड़ खुसामदि करैत छियौक । **पत्र लेखिका– कुमारीस्वर्णप्रभादेवी**

17 गय दूरदेशिनी रामजोड़ी ! जय मैथिली !

तोहर चिट्ठी भेटल । पिपहिया जकाँ हम ओकर बाट तकैत रहैत छियौक । तों तँ ओतेक दूरपर छें, कोना कऽ हम तोरा अपन हीया चीरि कऽ देखा दियौक । तों हमरा चिट्ठी लिखब छोड़ि देलें । तों भेलें पटनाक रहनिहारि, तखन हमरा सभ सन देहातिनसँ चिट्ठी-पत्री करबामे अवश्ये संकोच होयतौक । सोचैत होयबें –रेवा अछि गमारिन, ओकरासँ हम अप-टू-डेट भऽ कऽ कोना सम्पर्क राखब । से तोहर सोचब एको रत्ती गैरवाजिब नहि छौक । ठीके तँ लिखलें जे चिट्ठी लिखने थोड़ेक सादा कागत, मोसि, समय आ दिमागि खर्च भऽ जाइत छैक ।' हमरा लेल एहन पैघ खर्च तों किएक करबें ?

एहि सभमे हमही अपन भाग्यक दोष बुझैत छी, ने तँ बिना कोनो दोखें तो एना हमरापर तामस नहि करितें । जतेक कठोर भाषामे हमरा तों लिखलें अछि एहन भाषामे हमरा केओ ने लिखने छल, प्राय: तोँहू अनका लिखने नहि होयबहिन । हमरा जनैत तँ दुनियाँमे केओ ने ककरो एना लिखने होयतैक, से तों हमरा लिखलें अछि ।

गय रामजोड़ी ! तोरा चिट्ठी लिखबामे वा हमर चिट्ठी पढ़बामे असौकर्य होइत छलौक, आसकति होइत छलौक, गोँहछ लगैत छलौक तँ मधुरे शब्दमे लीखि दितें । ओहिलेल एतेक अभिरोख करबाक तँ काज नहि ने छलैक ।

अन्तमे जे रामजोड़ी लिखबाक स्थानमे लिखलें **पत्र-लेखिका कुमारीस्वर्णप्रभादेवी** से देखि कऽ तँ भेल जे खूब कानी । हमर छाती फाटि गेल जे हमर रामजोड़ी हमरासँ एतेक विरान भऽ गेलि ! हम थतमतमे छलहुँ जे तोहर ओहि चिट्ठीक उतारा दियौक कि नहि । कय दिन तँ ओहीमे बीति गेल । सोचैत रहलहुँ अछि जे तोहर एहि तामसक की कारण, मुदा हमरा अपना जनैत कोनो कारण नहि भेटल अछि । गय, तोरा साफ-साफ लिखबाक चाही जे हमर कोन-कोन अपराध छल ।

एकटा बात हमरा मोनमे होइत रहल अछि जे तों जे हमरा संग रामजोड़ी जोड़ने छलें से हमरापर कृपा कयने छलें । ने तँ कहाँ तों आ कहाँ हम ? हम तोरा अपन सन बुझैत छलियौक, मुदा से हमर धोखा छल आ बूझ तँ अपराधो वैह छल । से तोहर जें जी-मुँह पबैत छलियौक तें ने अपने सन व्यवहार करैत छलियौक । तोहर बाबूजी जतेक पैघ लोक छथुन, ओतेक पैघ लोक तँ हमर बाबूजी नहि छथि । तों एखनो ओहि ठाम मोटरपर चढ़ैत होयबें, दामी कपड़ा पहिरैत होयबें । कोनो डाक्टर, इंजीनियर की प्रोफेसरसँ बियाह होयतौक । पैघ घरसँ फेर पैघ घरमे जयबें । तखन हमरा सन-सन गरीब लोकसँ रामजोड़ी लगौने रहबें तँ अनेरे हिनस्ताइए होयतौक ने ! नीक कयलें, अपन पहिनहिसँ बाट साफ कऽ लेलें ।

खाली एके बातक कचोट होइत अछि जे परमीला हमरा तोरा दऽ कहने छलि जे सोना अछि पैघ लोक । हम ओकर बात काटि देने रहिऐक । ओ जँ ई चिट्ठी देखत आ

अपन बात दोहराओत तँ हमरा बड्ड दुख होयत । प्रायः तोँ हमरा हृदयक वेदनाकेँ नहि बुझबेँ, लिखबौक तँ पढ़ि कँऽ हँसबो करबेँ । हम एतबे लिखि सकैत छियौक जे 'प्रीति किये दुख होय' ।

गय रामजोड़ी, जँ तोरा संग एतेक सिनेह नहि रहैत तँ तोहर ओहन कठोरो चिट्ठी पढ़ि ओतेक कष्ट नहि होइत । तोहर चिट्ठी पढ़लाक बाद मोन एको रत्ती ने लागि रहल अछि, बूझि पड़ैत अछि जेना कोनो वस्तु हेरा गेल अछि । परमीला हमरा अनमनायल देखि मारि खोद-बेद करऽ लागलि, मुदा हम बातकेँ टारि देलिऐक । ओ जखन पुछलक जे सोनाक चिट्ठी अयलह अछि ? तखन भेल जे हम भोकासी पाड़ि कऽ कानऽ लागब ।

हम बहुत बेर तोहर चिट्ठी पढ़लियौक जे कोन-कोन बात लऽ कऽ तोरा दुःख भेलौक । हमरा दू-तीन गोट गप्प ठहकल अछि । श्रीनाथभाइक कनियाँक चिट्ठी नहि पठौलियौक तकर दुख भेल होयतौक, मुदा ओ तँ हमरा लगमे छल नहि । ओहि सम्बन्धमे हम हँसीमे लिखलियौक जे अनकर चिट्ठीक गप्प-सप्प बुझबाक लेल मोन किएक एना उताहुल छौक ? एहि बातकेँ तोँ एना रोखावह बुझबेँ से कल्पनोमे ने छल ।

शारदाक ओहि ठाम तोहर चर्च नहि कयलियौक ताहू लेल तोँ रुष्ट छेँ । हमरा बूझि पड़ैत अछि जे कहियो काल हम शारदाक भेँट करऽ जाइत छिऐक से तोरा पसिन्न नहि छौक । हम मोनमे निश्चय कयलहुँ अछि जे आब सपनो रूपेँ शारदाक ओहि ठाम नहि जायब । परमीला कय दिन कहलक अछि जे शारदाक ओहि ठाम चलह, मुदा हम नकारि देलिऐक । स्कूलोमे हम शारदासँ भेंट नहि करैत छिऐक । एहिसँ तोरा मोनमे सन्तोख भऽ सकैत छौक । जँ से भऽ सकतौक तँ हमरा बड़ प्रसन्नता होयत । हम नहि चाहैत छी जे हमर कोनो काजसँ ककरो दुख कि बाधा होइक । आ एहि तरहेँ हम तोरा बाटसँ हटि जयबौक ।

रामजोड़ी ! ई चिट्ठी लिखैत काल हमरा मोनमे जे टीस उठैत रहल अछि से हमहीं जनैत छी । हमरा नहि बूझि पड़ि रहल अछि जे तोँ हमरा सम्बन्धमे आब केहन विचार रखबेँ, केहन व्यवहार रखबेँ । हम तँ यैह बुझैत छी जे आइ हमर एकटा अलंग टूटि रहल अछि । फेर एहन मधुर सिनेह हम ककरोसँ जोड़ि सकब से विश्वास नहि होइत अछि । हम अन्तमे एतबे कऽल जोड़ि कऽ प्रार्थना करैत छियौक जे एतेक दिनमे हमरासँ जे अपराध भेल होउक ओकरा छमि दिहेँ । **तोरे रामजोड़ी –रेवती**

18 **हय रामजोड़ी, जय मैथिली !**

तोरा हम चिट्ठी लिखने छलियह । मुदा ओकरा पोस्ट आफिसमे खसौलाक बाद रातिमे जखन अपन एहि काजपर सोचऽ लगलहुँ तँ भेल, जेना हम बड़ पैघ अपराध कऽ गेलहुँ । जाहि अपराधक, जाहि पापक, कोनो प्रायश्चित्त नहि भऽ सकैत छैक । ओहि दिनसँ जेना हमरा हलदिली भऽ गेल अछि । भरि आँख निन्न नहि होइत अछि । ककरोसँ भरि मुँह बजैत नहि छी । हय, मोनमे भयानक बिहाड़ि उठल रहैत अछि ।

हमरा कोन दुरमतिया घेरने छल जे हम तोरा ओहन कठोर भाषामे चिट्ठी लिखलियह । अवश्ये ओहि दिन हमरापर कोनो खुंनुस सवार भऽ गेल छल, ने तँ एहन असभ्य, असंयत, क्रूर, कृतघ्न, कठोर चिट्ठी तोरा नहि लिखितियह । एहन चिट्ठी हम कहियो ककरो नहि लिखने छलिऐक । हम मानैत छी जे केओ ककरो ने लिखने होयतैक ।

जे रामजोड़ी हमरा अपन प्राणसँ बाढ़ि कऽ हमरा मानैत छलि, जकर हृदय नेनु सन कोमल, जकर विचार गंगा सन निर्मल, जकर बोली मऽधु बोरल, जकर चि्टठीक पाँती-पाँतीमे अपनत्व भरल तकरा कतहु हम एहन तुर्च्छ भऽ कऽ लिखिऐक ? आब हम तोरा कोना मुँह देखबियह ? कोन मुँह-बोल लऽ कऽ तोरा चिट्ठी लिखियह ? तोरा आगाँ हम कोना माथ उठा सकबह ? से हमरा नहि बूझि पड़ैत अछि । तोरा 'रामजोड़ी' लिखैत लाज आ संकोचसँ गललि जा रहल छी । हे हमर बालसंगी ! हे हमर प्राण ! तोँ हमरा जे दंड देबह से हम लेबाक लेल तैयार छी । तोँ जे चिट्ठी लिखलह से हमरा जनैत आरो कठोर कऽ लिखितह तँ सेहो थोड़ होइतैक ।

रामजोड़ी, संगिता छोट आ पैघ नहि देखैत छैक । मुदा हम पैघ लोक कोना कऽ छी ? बाबूजी पटनामे नोकरी करैत छथि तेँ जनि बूझह । तोँ लिखलह अछि जे मोटरपर चढ़ैत होयबेँ से मोटर ओतेक सस्त नहि छैक । गाममे रहि कऽ तोँ बूझि सकैत छह, मुदा एहि ठाम हम बुझैत छिऐक जे बाबूजीकेँ मोटरक औकाति नहि छनि । से रहितनि तँ...। खैर छोड़ह ओ बात । हम कोन बात लऽ कऽ रुष्ट भेलहुँ आ छी से सोचबाक समय नहि अछि । आब हम ई सोचैत छी जे तोँ हमरासँ सम्बन्ध एकदमेसँ तोड़िये तँ ने लेबह ? हम तँ एहू चिन्तामे छलहुँ जे तोँ आब फेर कहियो चिट्ठी लिखबे ने करबह । मुदा हमर भाग्य बड़ तेज अछि जे तोँ ओकर उतारा देलह । तोहर चिट्ठी जखने भेटल तखने भेल जे तोँ कतेक नीक छह । अन्यथा हम जेहन चिट्ठी लिखलियह से पढ़ि जिनगी भरि फेर हमरासँ नहि बजितह ।

रामजोड़ी, तोरा हमर आङसमाङक सप्पत, तोँ हमरे मुइल मुँह देखह, जे एहि सभ बातक चर्च परमीला लग करह । ओ बड़ मुँहफट्ट अछि । जिनगी भरि हमरा खोभाटैत रहि जायति । हम ओकरा आगाँ मुँह देखयबा जोग नहि रहि जायब ।

हम कहि नहि सकैत छियह जे शारदाक ओहि ठाम जायब त्यागि देलह से जानि हमरा कतेक दुःख आ अपसोच भेल अछि । हम की जनैत छलियह जे तोँ हमर चिट्ठी पढ़ि, किरतिम्म कऽ ओहि ठाम जायब छोड़ि देबहक । हम तोरा नेहोरा करैत छियह जे तोँ आब ओकरा ओहि ठाम अवश्य जाहक । जँ शारदाकेँ ई बात बूझल भऽ जयतैक तँ ओ हमरा कतेक घृणाक दृष्टिसँ देखत ! कतेक ओछाहि बूझत ? 'ओहि ठाम नहि जा कऽ तोँ हमरा बाटसँ हटि गेलह' से कोना ? हम नहि बुझलिऐक । तोँही कहह जे ओहि ठाम हमर कोन स्वार्थ अछि ? आब एतबे कहबह जे शारदा आ ओकर भाइकेँ एहि

चिट्ठीक रोखा-तोखीक गप्प नहि बुझऽ दिहक । कहुना छियह तँ तोरे रामजोड़ी ने ।

रामजोड़ी हय, तोहर चिट्ठी पढ़ि कऽ हमरा तँ अभिमान होइत अछि । हिनस्ताइ किएक होयत ? डाक्टर, इंजीनियर आ प्रोफेसरक गंप्प जे लिखलह से ककरा भाग्यमे की लिखल रहैत छैक से के जानय ! खाली टकेसँ सभ किछु नहि होइत छैक । विधाताक लेखे सभ करमातिक जड़ि रहैत छैक । नहि तँ 'पड़ी पदमिनी भाँड़ के पाले' कहबी कोना बनितैक ? हमरा तँ मोनमे होइत अछि, सेहन्तो भऽ रहल अछि जे हमरा जे किछु लिखलह एहि सम्बन्धमे, से पहिने तोरे संग होइतह ।

हय रामजोड़ी ! हम तोरा कहियो 'हय' छोड़ि 'गय' नहि कहलियह । कहियो हम बिसरभोरोमे 'एकार' नहि मारलियह । मुदा ओहि दिनुक अपन दुरमतियाक सम्बन्धमे की कहियह जे किएक हम चिट्ठिए सुरू कयलियह 'गय रामजोड़ी' कहि कऽ । सौंसे चिट्ठीमे तोरा 'एकारे' मारलियह । तोँ तकर एक बेर अपना चिट्ठीमे चर्चो ने कयलहक । हमरा जनैत सौंसे चिट्ठीमे हमर ओ सभसँ पैघ असभ्यता छल ।

हय रामजोड़ी ! हमरासँ तँ बड़ चूकि भेलह । हम तँ नेहोरा करबह जे तोँ ओकरा छमि दैह । अवस्थामे हम तोरासँ छोटि छियह, तोँ जेठि छह तेँ तोरा क्षमो करबाक अधिकार छहे । हे, हमरा अपराधकेँ बिसरि जाह आ रूसह नहि । की तोँ अपन रामजोड़ीक अपराध देखि कऽ कठोर भऽ जयबह ?

हय, एहि ठाम हम अपन सभ बालसंगी आ बहिनपासँ फराक छी । जे केओ स्कूलक परिचित अछि से सभ 'फ्रेण्ड' अछि बेसी अंशमे । ओकरा संग जे गप्प होइत अछि से सिनेमाक सम्बन्धमे, फिलमस्टारक सम्बन्धमे, नवका फैसनक सम्बन्धमे, आरो मारि की-कहाँ सभ । अपन घर-दुआर, सऽर-सम्बन्धी, अपन जीवनक नीक-अधलाहक सम्बन्धमे ओकरा सभसँ की गप्प होयत ? अपन हृदयक भावना ओकरा सभ संग गप्प करबामे नहि उतरि पबैत अछि । मोन होइत अछि जे तोरासँ मुँहाँमुहीं भेँट होइत आ भरि छाँक गप्प करितहुँ । एहि चिट्ठीमे हम अपन मोनक कतेक गप्प लिखि सकबह ? एतनी छोट कागतमे भावनाक ओ अम्बोह कोना समेटि कऽ भरि सकबह ? हम तोहर पयर धरैत छियह जे हमर अपराधकेँ क्षमा कऽ दैह आ तुरन्त उतारा दैह जाहिसँ हमरा भरोस हो । **तोरे अभागलि रामजोड़ी –सोनियाँ**

19 गय रामजोड़ी, जय मैथिली !

तोहर चिट्ठी पाबि हमरा भेल जे कोनो हुड़िया भेटि गेल आ कि मोदराक कोनो पोटरी भेटि गेल । कोना हम अपन तखनुक भावकेँ बुझा सकबौक जे तोहर चिट्ठी हाथमे लैत देरी हमरा मोनमे उठल । गय, हम तँ निराशे छलहुँ । ओहि दिन जे हम तोरा चिट्ठी लिखने छलियौक से ई बूझि कऽ जे आब तँ तोँ हमरासँ सभ दिनक लेल छुट्टा-छुट्टी कऽ सम्बन्ध तोड़ि लेलेँ । हमरा की एको रत्ती आशा छल जे फेर तोँ घूमि कऽ हमरा उतारा देबेँ । मुदा हमर पुण्य बड़ पैघ अछि ।

हमहूँ जे ओहि दिन चिट्ठी लिखलियौक से हमरा ओना नहि लिखबाक चाही, से आब हम अनुभव करैत छी । सत्ते कहैत छियौक रामजोड़ी, तोरा चिट्ठी लिखबाक काल हमरा तामस नहि, दुख भेल.छल । मुदा बादमे जखन सोचलहुँ तँ भेल जे जँ रामजोड़ी हमरासँ छुट्टा-छुट्टी कऽ लेत तँ एहन कठोर चिट्ठी लिखिये कऽ की ? अनेरे रामजोड़ीकेँ राग-उपराग दऽ कऽ कोन फल ? मुदा तावत धरि तँ प्राय तोरा हमरवला चिट्ठी भेटि गेलौक ।

गय रामजोड़ी, तोँ जे हमरापर ओतेक तमसायलि छलेँ तकर की कारण से हम एखनो नहि बूझि सकलियौक अछि । हमरा तँ होइत अछि जे जरूर तेहने कोनो बात भेल होयतौक जे तोरा मोनकेँ एकदमसँ हौंड़ि देने होयतौक । तोँ हमरासँ कोनो बात नुका रहल छेँ से हम अनुमान लगबैत छी । गय रामजोड़ी, तोरा हमरे सप्पत थिकौक, तोँ अपन हीया खोलि कऽ सभ बात लीख जे की बात भेलौक अछि । जँ खुलासा हाल नहि लिखबेँ तँ हम बूझि लेबौक जे तोँ जे हमरा ई चिट्ठी लिखने छलेँ से खाली 'आहे-माहे' छलौक । ओहिमे तोहर हृदयक भाषा नहि छलौक, खाली सौजन्येँ तोँ हमरा ओना लिखलेँ अछि ।

हम जे तोरा चिट्ठी लिखने छलियौक ओहिमे हम किछु व्यंग्य कऽ देने छलियौक । आब सोचैत छी जे तोरा ओ व्यंग्य देखि कतेक दुख आ वेदना भेल होयतौक ? तोँ हमरा कतेक नीच बुझने होयबेँ ? तोँ बुझने होयबेँ जे रामजोड़ी कतेक ओछाहि अछि, एक रत्ती बजबाक लिखबाक ढंग नहि अबैत छैक । हे गय रामजोड़ी, तोँ हमर ओहि अपराध लेल माफी नहि देबेँ ? तोहर हम बड़ गुण मानबौक जँ तो हमरा क्षमा कऽ दैँ ।

गय रामजोड़ी ! हमरा लोकनि पढ़ैत-लिखैत छी, तँ पढ़ियो लीखि कऽ एना भसिया जाइ तँ पढ़ने-लिखने कोन फल ? तेँ हम तोरा नेहोरा करबौक जे हमरवला ओ चिट्ठी तोँ ककरो अनका नहि देखऽ दिहनि, ने ककरो आगाँ ओहि चिट्ठीक कोनो चर्च-वर्च करिहनि । बरु तोँ ओकरा फाड़ि-चोरि कऽ फेकि दिहनि, ने रहत बाँस ने बाजत बसुली ।

गय रामजोड़ी, तोहरवला चिट्ठी हम ककरो ने देखऽ दलिऐक आ ने ओहि सम्बन्धमे ककरो आगाँ चर्चा कयलिऐक । तोँ एहि दिससँ एकदमसँ निश्चिन्त रह । हम जे तोरा लिखलियौक जे डाक्टर, इंजीनियर कि प्रोफेसर वर भेटतौक से तोरा भने अनर्गल लगौक, मुदा हम लिखलियौक धरि एकदम ठीक । परमीलो तँ हमरा सैह कहैत रहय एक दिन । ओ तँ तेहन मुँहफट्ट छैक जे एक दिन ओ हँसैत-हँसैत आयलि आ कहऽ लागलि- हय रेवा ! एकटा बात आइ की भेलैक से बुझलहक ?

हम पुछलिऐक जे- की ?'

-ऊँह ! आइ एकटा महाशय आयल छलाह । ओ बाबूजीकेँ तकैत छलनि । बूझि पड़ल जेना केओ अनभोआर अछि ।

-हय, केओ मोकिल रहल होयतनि तोहर बाबूजीक ?'

–तोँ तँ उपरे लोकि लैत छह । ओहन मुँह–ठानक लोक मोकदमा नहि लड़ैत छैक से नहि बुझैत छहक । ओ दोसर बातेँ आयल छलैक । नहि तँ ओहि बेरमे ओ कचहरीमे होयथिन से मोकिल नहि बुझतैक ?' हम पुछलिऐक– कोन बात ?' ओ बाजलि– बड़ नेन्ना छह तेँ नहि बुझैत छहक ने ? बेसी अर्थाबह नहि । ओ छलैक बाहरमे ठाढ़ । हम बाड़ी दऽ कऽ घूमि कऽ बाहर चलि गेलहुँ आ एकटा पोथी लेने बाटपरसँ आबि कऽ ओकरासँ पुछलिऐक जे –की अछि ?' ओ बाजल जे मोखतारसाहेबसँ काज छल ।

हम कहलिऐक जे– मोखतारसाहेब तँ नहि छथि, गामपर हुनक बेटी परमीला आ हुनकर कनियाँ छथिन, जकरा कहीं तकरा बजा दी, कोन काज अछि ? परमीला आगाँ कहलक जे 'ओकर' बोल जेना लटपटा गेलैक, मुदा सम्हरि कऽ कहलक जे हमरा मोखतारसाहेबसँ बड़ जरूरी काज छल, हुनका बेटोकेँ बजा दियऽ, मोखतारसाहेबक एकटा चिट्ठी दऽ देबनि ।'

परमीला कहलक जे–हम बाहरेसँ 'परमीला परमीला' कहि कऽ सोर पाड़लिऐक– आङन जा कऽ फेर आबि कऽ कहलिऐक जे 'परमीलाकेँ एक सय तीन डिगरी जऽर छैक, माय ओकरे सेवा–बरदाइसमे लागल छथिन । अहाँ चिट्ठी दऽ दियऽ ।' एहिपर ओ जेना झमान भऽ खसल । ओ हमरासँ किछु पूछऽ चाहलक तँ कहलिऐक, 'हमरा बड़ जरूरी अछि, हमरा बहीनकेँ देखबाक लेल हुनक भावी वर आबि रहल छथिन से परमीलाकेँ कहऽ आयल छलिऐक, मुदा ओ तँ अपने ओछाओन धयने अछि ।' ई कहि कऽ हम पड़ा कऽ तोरा आङन चलि अयलहुँ ने तँ हँसीसँ नहि रहल जाइत ।'

तोँही कह जे एहन मुहजोरकेँ हम तोहर बात कोना कहितिऐक ? हमरा जे 'गय' कहि कऽ चिट्ठी लिखलेँ ताहि लेल हमरा कोनो क्षोभ नहि अछि । हम तँ रामजोड़ी लगबऽ दिनमे कहने रहियौक जे तो हमरा 'गय' कह से तोँ अपने नहि मानलेँ । तोरासँ कोनो अपराध नहि भेलौक अछि जकरा हम क्षमा करियौक । अपनामे एहिना होइत छैक ।

गय रामजोड़ी, तोँ जे लिखलेँ 'अभगली' से तोँ अभागलि कोना छेँ ? ई नीक नहि । गय रामजोड़ी ! तोँ विश्वास राख, हम तोहर छियौक । तोरासँ विरान हम नहि भऽ सकैत छियौक । तोहर कुशल–मंगल जनबा लेल मोन लागल अछि । **तोहरे रामजोड़ी –रेवा**

20

हय रामजोड़ी, जय मैथिली !

तोहर सिनेह भरल चिट्ठी हमरा समयपर भेटि गेल । जखनसँ हमरा ओ भेटल अछि तखनसँ हम विभोर छी । तोहर चिट्ठीक पाँती–पाँतीमे हमरा तोहर सिनेहक मधुधार बहैत बूझि पड़ल । हय, हमरा प्रति जे तोहर सिनेह छह ताहिमे कहियो कोनो अन्तर नहि आयल छलह, हमरे जरलाहा मोनमे कहाँ ने कहाँसँ आबि कऽ कोनो सन्देहक लत्ती लतरि गेल छल । हमरा की ई आशा छल जे तोँ आबो हमरासँ रामजोड़ी लगौनहि रहबह ? तेँ तोहर चिट्ठी पाबि हम अपनाकेँ पुण्यवती मानैत छी ।

हय रामजोड़ी ! तोँ जे लिखलह जे 'तोरा चिट्ठी लिखबाक काल हमरा तामस नहि, दुख भेल छल ।' से अवश्ये दुख भेल होयतह, जँ नहि होइतह तँ सैह आश्चर्यक कथा होइत । हय, तोहर चिट्ठी एको रत्ती ने कठोर छलह जे आरो कठोर कऽ लिखितह तैयो ओ हमरा लेल कोमले रहैत । हय, जँ हम कोनो अनट काज करी तँ ओहिलेल हमरा हँटबाक-डँटबाक अधिकार तोरा नहि छह की ? भेंट भेलापर जँ हमरा दुइ चाट मारबो करबह तँ हमरा एको रत्ती रोख नहि होयत । एको रत्ती ने । हम तोरासँ वयसमे छोटि छियह । तोँ जेठि छह । तोरा सभ किछु कहबाक अधिकार छह । एक तँ तोँ हमरा किछु कहलह अछि नहि । दोसर, जँ किछु कहबो कयलह तँ ओ तोहर अधिकारे छह । एहिमे हम क्षमा कयनिहारि के ? हमरा क्षमा करबाक अधिकारे कहाँ अछि ? तेँ तोँ जे हमरासँ बेर-बेर क्षमा आ माफी मङलह अछि से हमरा जनैत अनर्गल ।

क्षमा तँ हमरा तोँ करह । कारण, हमहीं तोरा मोनकेँ दुखौने छलियह । ओहिमे बड़का अपराध हमरे अछि । हम तोरा ओना कऽ चिट्ठी लिखलियह ताहिसँ तोरा कतेक दुख आ वेदना भेल होयतह ? एहिलेल तँ तोँही हमरा माफी दैह । हम एहिलेल जिनगी भरि गुण मानैत रहबह । तोहरवला चिट्ठी अनका नहि देबैक, तोहर आदेशकेँ भंग नहि कऽ सकैत छी, मुदा ओकरा फाड़ऽ कोना कहैत छह ? ओकरा तँ हम जोगा कऽ राखब ।

हय रामजोड़ी, तोँ हमर हृदयक संगी छह । तोँ हमर हृदयक भाषा बुझैत छह से हमरा पूर्ण विश्वास भऽ गेल अछि । तोँ हमर चिट्ठी देखि, मोनक बात बूझि जा सकैत छह । प्रायः आन केओ ने बूझि पबैत अछि । मायो ने बुझैत छैक किछु तँ ।

तोँ जे चिट्ठीमे लिखलह अछि जे– जरूर तेहने बात भेल होयतौक जे तोरा मोनकेँ हौंड़ि देने होयतौक । तोँ हमरासँ कोनो बात नुकबैत छेँ से अनुमान लगबैत छी' – ई पढ़ि कऽ भेल जे हमर प्राणक तार-तारमे तोँ समा कऽ हमरा बूझि लेने छह, ने तँ एहन विश्वासक संग केओ ने कहि सकैत छल । हय रामजोड़ी ! तोरा हम हीया खोलि कऽ खुलस बात लिखैत छियह । तोरोसँ हम बात नुकयबह तँ फेर कहबैक ककरा ?

तोरा जे ओहि दिन हम चिट्ठी लिखने रहियह से ठीके हमर मोन नीक स्थितिमे नहि छल । तामससँ सौंसे देहक सोनित जेना गरम छल । दुखसँ आँखि नोरायल छल । क्षोभसँ हमर अन्तर्मन अशान्त छल । तखने हमरा कोन दुरमतिया घेरि लेलक जे हम तोरा चिट्ठी लिखलियह । तोहर छोटछीन गप्प-सप्पपर हमरा हँसी लगैत से भऽ गेल तामस । मुदा ओहिमे हमर दोख नहि, हमर मनःस्थितिक दोख छल । मनःस्थितियो तँ ओहि दिनुक परिस्थितियेसँ भऽ गेल छल । ओहन परिस्थिति भगवान ककरो ने देने छल होयथिन आ ने देथिन । नहि देथुन भगवान ककरो ओहन परिस्थिति । मुदा भगवान्केँ एहि सभसँ किछु लेना-देना नहि छनि । ओ तँ 'आन्हर छथि भगवान् कहौ के ?' नहि तँ मौगी जातिकेँ एहन सम्मानहीन जीवने किएक दितऽथिन । जँ एतेक सस्त अछि मौगी जाति तँ कोन काज

छलनि भगवानकेँ ओकर रचना करबाक ? कोन ओकरा बिना सृष्टि अन्हार भेल जा रहल छलनि ? जखन अपने सभ कर्त्ता छथि तँ मौगी बिना हुनका कथीक खगता होइतनि ?

हय रामजोड़ी, हमरा मोनमे एतेक अपमानक भावना कहियो ने आयलं छल । गरानिसँ जेना सौंसे देह गलल जाइत अछि । कखनो-कखनो कऽ मोनमे होइत अछि जे मौगीकेँ सम्माने कहिया भेटलैक जे ओकरा अपमान बूझि पड़तैक !

हय, हमरा तँ मोनमे होइत रहैत अछि, हमर जीउबे व्यर्थ अछि । एहन जिनगीक कोन काज ? हय, आब तोरा ई बुझबामे भाङठ नहि रहल होयतह जे डाक्टर, प्रोफेसर आ इंजीनियरक कथा कतेक निराधार छलह । परमीलाक सम्बन्धमे जे लिखलह से ओ मुहफट्ट नहि, उचितवक्ता अछि । जे उचित बुझलक से बाजि देलक । हँ, ओकर औचित्य निर्धारणमे ठाम-ठाम आधार ठीक नहि बैसैत छैक । ओकरा सम्बन्धमे तोँ बेस मनोरंजक घटना लिखलह अछि, की भेलैक तकरा बाद से लिखिहह ।

हय रामजोड़ी, तोहर सौंसे चिट्ठी पढ़ि गेलियह, मुदा कोनो ठाम शारदाक चर्च नहि कयलह अछि । हम तोरा लिखने रहियह ओकरा ओहि ठाम जयबाक लेल । मुदा तोँ ओहि सम्बन्धमे एकदम गुम्म रहि गेलीह अछि । हय, तोँ नहि जयबहक तँ सभ बात हम शारदाकेँ लीखि देबैक । तोँ शारदाक ओहि ठाम अवश्य जाहक, तोरा हमरे सप्पत । शारदा, ओकर भाइ, ओकर घरक आन लोकक कुशल-क्षेम लिखिहह । अपना घरक, हमरा गामपरक कुशल-मंगल लिखिहह । हमरा बाबीसँ भेँट करिहनु । **तोरे अभगली रामजोड़ी –सोनियाँ**

21

गय रामजोड़ी, जय मैथिली !

तोहर चिट्ठी पाबि मोन बड़ प्रसन्न भेल । एहि ठाम हमरा लोकनि सभ केओ कुशलपूर्वक छी । तोरे कुशल-क्षेम जनबाक लेल सतत मोनमे उत्कण्ठा लागल रहैत अछि । तोहर बाबी सेहो निकेँ छथुन, तोहर बियाहक चर्च करैत छलथुन । गय रामजोड़ी ! एना कऽ तोँ चिट्ठी किएक लिखैत छेँ ? गय, एक संग लोक रहैत अछि तँ कतेक-की ने भऽ जाइत छैक । तोरा बुतेँ ओहन चिट्ठी लिखा गेलौक । हमरोसँ ओहने उतारा लिखा गेल । आब जँ ओहि बात सभकेँ मोनमे गीरह बान्हि कऽ रखने रही तँ से उचित होइक ? जे भऽ गेलैक से भऽ गेलैक । मुइल मुर्दा उकटने कोन फल ? क्षमा तँ आनकेँ ने कयल जाइत छैक ? तोँ तँ हमर अपन छेँ ।

गय, दिनक दोखक कारणेँ तोँ हमरासँ रुष्ट भऽ गेल छलेँ । मुदा कोन एहन बात भऽ गेलैक जे तोहर मनःस्थिति एना असन्तुलित भऽ गेलौक ? तोँ लिखलेँ जे हीया खोलि कऽ खुलस बात लिखैत छियह मुदा तोँ लिखलेँ धरि किछु ने । जहिना हम तोहर प्राणक तार-तारमे समा गेल छियौक तहिना तोँहू हमर अंग-अंग, पोर-पोरमे समा गेल छेँ । तोरासँ फराक रहि कऽ हमर कोनो अस्तित्वे ने रहि जायत से बूझि पड़ैत अछि । गय, तोँ ओतऽ छेँ आ हम एतऽ छी– एहिमे हमरा कतेक कष्ट बूझि पड़ैत अछि से अनका ककरा

कहबैक आ के बूझत ? गय, तों अपन एहि चिट्ठीमे लिखले हें जे 'तामससँ सौंसे देहक सोनित जेना गरम छल । दुखसँ आँखि नोरायल छल । क्षोभसँ हमर अन्तर्मन अशान्त छल ।' आगाँ तों लिखैत छें जे 'ओहन परिस्थिति भगवान ककरो ने देने छल होय़थिन आ ने देथिन ।' ई सभ पढ़ि कऽ मोनमे बड़ सोच होमऽ लागल अछि । गय बतहिया ! तों लीख ने जे कोन बात भेल छलौक ? कोन परिस्थिति भऽ गेलौक आ किएक भऽ गेलौक ? ओना तँ हमरा लोकनिक जन्मे भेल अछि परवशताक सिरें । मुदा कोनो बुद्धि तँ फुरा सकैत छियौक, नहि तँ बोल भरोस तँ दये सकैत छियौक ।

तोरा कोन बातक अपमान भेलौक ? किएक गरानि भऽ रहल छौक ? तोहर मोन एना उद्विग्न किएक छौक ? ई सभ जनबाक लेल जेना हम औना रहल छी । मोन छटपटा रहल अछि । गय रामजोड़ी, तोरा हमरे सप्पत थिकौक, साफ-साफ लीख आ पिहानी नहि बुझा । जँ हमरे चिट्ठीसँ कोनो कचोट भेल होउक तँ सेहो साफ-साफ लीख । 'प्रोफेसर, डाक्टर आ इंजीनियरक कथा कतेक निराधार छल' एहि पाँतीक हमरा अर्थ नहि लागल अछि ।

हमरा तँ तोरे विषयमे चिन्ता लागल अछि तखन अपन आ परमीलाक विषयमे की लिखियौक ? परमीलाक विषयमे एखन कोनो विशेष बात नहि भेलैक अछि । ओ तँ मनमौजी जीव अछि । ओकरा की कोनो बातक चिन्ता-फिकिर छैक ? एकदमसँ हुड्ड छैक । ओ तँ कखनो कऽ कहत जे ज़िनगी भरि जँ हम सभ कुमारिये रहि जाइ तँ की होयतैक ?' हम कहलिऐक– हय, परमीला, हमरा लग ई कथा सभ नहि बाजह । लोक सुनत तँ मारि कहूँ गुलंजर उड़ा देत । तोरा तँ धरी-धोख नहि छह कोनो बात बजबामे ।' ओ बाजलि– हय रेवा बहीन ! एना जँ सुकसुक करैत रहबह तँ सभ क्यो पीचि कऽ मारि देतह ।

शारदाक ओहि ठाम तों जयबाक लेल लिखले अछि, मुदा बड़ दुखक संग लिखैत छियौक जे आब हम तोहर एहि आदेशक पालन नहि कऽ सकबौक । हम आब ओकरा ओहि ठाम नहि जयबैक । एहिमे तों अपनाकें नहि सानि लिहें । कोनो तोरा बातें हम ओकरा ओहि ठाम नहि जयबैक, से बात नहि । अपनो मोनमे होइत रहैत अछि जे कनेक एक दिन शारदाक ओहि ठाम जैतिऐक । मुदा जानि नहि कोन एहन बात भऽ गेलैक जे ओकरा ओहि ठाम जयबाक हमर बाटे छेका गेल अछि । जखन ओकरा ओहि ठाम जाइये ने सकैत छी तँ ओकरा ओहि ठामक कुशल-क्षेम की लिखियौक ? सभ नीके होयतैक की !

गय रामजोड़ी, अन्तमे तोरा एकटा उपराग दैत छियौक । तों अपन चिट्ठीमे 'तोरे अभगली रामजोड़ी- सोनियाँ' एना किएक लिखैत छें । तों अभगली किएक रहबे गय ? तोरा कथीक त्रुटि छौक ? तों ककरासँ कथीमे घाटि छें ? एना जँ लिखल करबें तँ नीक बात नहि होयतौक । आबसँ जँ ओना लीखल करबें तँ बेजाय बात भऽ जयतौक । हम ओ चिट्ठी कहियो पढ़बो ने करबौक आ फाड़ि कऽ फेकि देबौक । फेर तँ बस छुट्टा-छुट्टी । **तोरे रामजोड़ी –रेवा**

22 हय रामजोड़ी, जय मैथिली !

तोहर चिट्ठी भेटल । तोरा लोकनिक कुशल-समांचार जानि मोन बड़ प्रसन्न भेल । हमरा लोकनि एहि ठाम निकेँ छी । तोरा सभक कुशल माता भगवतीसँ मनबैत रहैत छी । हय, हम अपना मोनमे कहाँ कोनो बातक गीरह बान्हि कऽ रखने छी ? सभ बात मिझा-बता गेलैक । हमरा लोकनिकेँ कोनो ग्रह लागि गेल छल । मुदा फेर तँ तोँ हमर अपने ने छह ? तोरा छोड़ि कऽ आन के हमर अपन होयत ?

हय रामजोड़ी ! अपन मोनक बात हम तोरा की लिखियह ? हमर मोन एना असन्तुलित भऽ गेल छल आ अछि तकर एक-दू नहि, अनेको कारण छैक । आ बूझह तँ किछु ने छैक । एहि देशमे, एहि समाजमे तँ एहन वस्तु सभ घटित होयब साधारण वस्तु थिकैक । हय, की कहियह जे हमर मानसिक स्थिति केहन अछि ? स्कूल जयबामे मोन एको रत्ती ने लगैत अछि । होइत अछि जेना किछु हेरायल जाइत अछि, जकरा बूझियो कऽ हम सम्हारि नहि पबैत छी । स्कूलक चमक-दमक तँ सोहाइतो ने अछि । तेँ हम आब प्रिंटवला साड़ी पहिरब छोड़ि देलहुँ अछि । एकदम सादा उजरा साड़ी आ आङी पहीरि कऽ जाइत छी । स्कूलक संगी सभ मारि ओहि लेल खौंझबैत रहैत अछि जे स्वर्णप्रभा आब उदास रहऽ लागलि अछि ।' हम की उत्तर दियौक ओकरा सभकेँ ?

हय रामजोड़ी ! तो लिखलह अछि जे 'तोरा कोन बातक अपमान भेलौक ? किएक गरानि भऽ रहल छौक ? तोहर मोन एना उद्विग्न किएक छौक ?' एहि प्रश्न सभक उतारा तोरा हमर पहिलका चिट्ठीसँ नहि भेटलह की ? हमर-तोहर जे अवस्था अछि आ समाजक जे मनोवृत्ति भऽ गेलैक अछि ताहिसँ तोँ अपरिचित छह की ?

हय, बाबूजीकेँ एखन अन्न-पानि नहि नीक लगैत छनि । मायकेँ सदिखन झखिते देखैत छिऐक । भाइजीकेँ सेहो मनहूस भेल देखैत छियनि । एहन बूझि पड़ैत अछि जेना हमरा चारू कात कुहेस लागि गेल होइक । हय, एक दिन स्कूल चल जाइत रही तँ केओ पाछाँसँ सोर कयलकैक— 'स्वर्णिमा !'

हम घूमि कऽ तकलहुँ तँ एक गोटा पुछलक जे— अहाँक नाम स्वर्णिमा थिक ?

हम अकचका गेलहुँ । कहलिऐक— नहि, हमर नाम स्वर्णप्रभा थिक । किएक ?

—नहि, ओहिना ।' ई कहि ओ आगाँ बढ़ि गेल । एक दिन आरो एक अधवयसू मौगी आयलि । हमरा लगमे बजा कऽ पुछलक जे अहाँकेँ भानस-भात करऽ अबैत अछि ?

हम की उतारा दितिऐक ? मूड़ी निहुरौने ठाढ़ि रहलहुँ । ओकर रिक्सा ठाढ़ छलैक आ ओहिपर ओकरा संग एकटा अधवयसू पुरुख छलैक । पाछाँ बाबूजीकेँ कहैत सुनलियनि जे— ओ सभ हमर कथा नकारि देलनि जे अपन माङसँ एको पाइ कम नहि लेबनि ।' एक गोटा आरो समाद पठा देलकनि अछि जे हमरा पटनियाँ कनियाँ नहि चाही ।

पटनामे रहऽवाली गाम-घरमे कोना रहतीह, तेँ नहि करब ।' एकटा आरो समाद भेटलनि जे पढ़लि लोक हम अपना घरमे नहि आनब ।'

आर कोन-कोन समाद सभ भेटलनि से की कहियह । ई सभ की अपमानक गप्प नहि थिकैक ? गरानिक गप्प नहि थिकैक ? हय रामजोड़ी, एकटा आरो घटना भेल छलैक । मुदा छोड़ह, की होयतैक ओ सूनि कऽ ।

तोँ शारदाक ओहि ठाम जायबे छोड़ि देलहक ! अवश्ये कोनो हमरे बातसँ कचोट भेलह । ने तँ आन कोन कारणेँ ओकरा ओहि ठाम आब नहि जा सकैत छहक ? कोन बात भऽ गेलैक से जनबाक लेल मोन लागल अछि । तोँ जँ ओकरा ओहि ठाम नहि जयबहक तँ हमरा मोनमे कतेक दुख होयत से तोँ अनुमान नहि लगा सकैत छह । तोँ जखन हमर मोनक भाषा बुझैत छह, तखन चिट्ठीक भाषा बुझबामे कोन भाङठ छह ? हय रामजोड़ी, तोँ लिखलह अछि जे शारदाक ओहि ठाम 'आब' नहि जयबैक से कोन बात भऽ गेलैक ? हय रामजोड़ी ! परमीलाक कथा ककरासँ लागि रहल छैक ? कहिया ओकर बियाहक दिन ठीक भेलैक अछि ? हमरा जनैत एतबा दिनमे सभ किछु ठीक-ठाक भऽ गेल होयतैक । तोँ अपना विषयमे सेहो लिखिहह जे कतऽ की भऽ रहल छह ? आरो गामक आन-आन सखी-बहिनपाक सम्बन्धमे सेहो विस्तारसँ लिखिहह । बिसरिहह नहि । गामक हाल-समाचार बुझबाक हेतु मोन टाङल अछि ।

हय रामजोड़ी ! आब तोहर आदेशानुसार 'अभगली' नहि लिखबह । ठीके तोँ लिखलह अछि, जाहि सोनाकेँ तोरा सन रामजोड़ी छैक से अभागलि नहि भऽ सकैत अछि । खाली कखनो-कखनो कऽ जिनगीक प्रति अविश्वास जकाँ भऽ जाइत अछि । ओहि अविश्वासक क्षणमे जेना सम्पूर्ण संसारे निस्सार बुझाइत अछि । मुदा तोहर बोल-भरोस हमरा लेल अमरितक काज करत । **तोहर रामजोड़ी —सोना**

23

गय रामजोड़ी ! जय मैथिली !

तोहर कुशल-क्षेम बूझि परम प्रसन्न भेलहुँ । हमरा लोकनि एहि ठाम माता भगवतीक कृपासँ निकेँ छी । तोँ चिट्ठी लिखबामे एको रत्ती विलम्ब नहि करैत छेँ आ हमरासँ कहियो काल कऽ विलम्ब भऽ जाइत छौक ताहि हेतु मोनमे दुख नहि करिहेँ । ठीके तोँ लिखलेँ अछि जे हमरा लोकनिकेँ कोनो ग्रह लागि गेल छल तेँ एना रुष्टा-रुष्टी भऽ गेल छल । अवश्ये ई सभ ग्रहक फेर थिकैक । मुदा खुसीक गप्प एतबे जे हमरा लोकनिक मोनक आकासमे मनमोटावक जे मेघ पसरि गेल छल से आब हटि गेल । जहिना तोँ हमरा अपन अँगित बुझैत छेँ तहिना हमहूँ तोरा अपन अंग बुझैत छियौक ।

तोँ जे अपन मोनक बात सभ लिखलेँ तकर अनुमान हमरा पहिनहुसँ छल, मुदा ओहि लेल एना उदास आ निराश होयबाक काज नहि छैक । मोनमे जे बितैत होयतौक से हम खूब बुझैत छियौक । किन्तु एहि खातिर जे तोँ नीक कपड़ा-लत्ता पहिरब-ओढ़ब

छोड़ि देलें से हमरा अनर्गल लगैत अछि । तोरा हमरे सप्पत छौक, तों रङलाहा आ प्रिंटवला साड़ी अवश्ये पहीर । तोरासँ जे केओ पूछ-पाछ कयलकौक ताहिसँ घबड़ो नहि । लोक जे टका लैत छैक तँ कोना ठोकि-बजा लैत छैक ? तहिना एहू सभमे होइत छैक । तोरा डर कथीक ? हमर रामजोड़ी की घेघाहि-कनाहि अछि जे डर होयतैक ?

तखन सवाल उठैत छैक समादक हेरा-फेरीक, से ओहिना होइत छैक । काल्हिखन बुढ़िया काकी बजैत छलथिन जे काँच-कुमारकें कतेकसँ ने कथा लगैत रहैत छैक । ओहिमे विधाता जकरासँ जुड़िबन्हन लिखने रहैत छथिन तकरासँ भऽ जाइत छैक ।' बुढ़िया काकीक ई गप्प तों जँ मोनमे रखबें तँ एको रत्ती हर्ख-विखाद नहि होयतौक । ओना बेटीक माय-बापक जे दशा रहैत छैक से तँ जगविदिते छैक । गीतोमे कहैत छैक जे-

जाहि घर आहे बाबा कन्या हे कुमारी से कोना सुतय निचिन्त हे ।

एकटा बात आरो । ई दुनियाँ विभिन्नता आ विचित्रतासँ भरल छैक । एक गोटाकें जे वस्तु नीक लगतैक, वैह वस्तु दोसरकें अधलाह लगैत छैक । ककरो पढ़लिये कनियाँ चाहिऐक आ ककरो पढ़लि कनियाँ देखि सात आँखि होइत छैक । एहिमे हमर-तोहर कोन सक ?

गय रामजोड़ी ! एकटा बातक लेल तोरा डँटबाक मोन होइत अछि । अँय गय ! तोहर माय आ बाबूजी मुलुक किछु गप्प करैत रहैत छथुन तँ ओहि बात सभकें तों किएक एना कान पाति कऽ सूनऽ लगैत छें ? तों एना कनसो किएक धयने रहैत छें ? तोरा सुनबाक कोन प्रयोजन रहैत छौक ? गय, जखन कखनो अपन कथाक गप्प-सप्प सूनी तँ पयर बारि कऽ सहटि जाइ । जे माय-बाप जन्म देलकैक से माय-बाप कर्मो देबे करतैक ।

गय रामजोड़ी ! तों लिखलें अछि जे 'शारदाक ओहि ठाम नहि गेने हमरा दुख होयत । कोन कारणे नहि जयबहक ?' एहि सम्बन्धमे हम तोरा विशेष नहि किछु कहि सकैत छियौक । एक दिन परमीला हमरा ओहि ठाम आयलि आ बाजलि जे —हय रेवा ! आइ कने शारदाक ओहि ठाम सेहो जयबैक । कतेक दिनसँ नहि गेलिऐक अछि । तों तँ ओकरा ओहि ठाम जायबे त्यागि देलहक अछि । शारदा सेहो कहैत छलि जे रेवादाइ हमरा ओहि ठाम नहि अबैत छथि से किएक ?'

गय रामजोड़ी ! शारदा हमरा 'रेवादाइ' कहलक से सूनि बड़ आश्चर्य भेल । मोनमे भेल जे ओहो हमरासँ रुष्ट अछि तें ने आदर लगा कऽ कहलकैक जे हमरा ओहि ठाम नहि अबैत छथि । परमीला हमरा कहलक जे आइ तोरा ओकरा ओहि ठाम अवश्ये चलबाक छह । हम तोरा बलजोरी लऽ जयबह ।' एतबेमे माय ओहि ठाम आबि गेलैक । ओ पुछलकैक जे- अय परमीलादाइ ! कतऽ लऽ जयबैक एकरा ?'

—शारदाक ओहि ठाम । हमर सभक संगी थिक ओ । पहिने तँ हम सभ बराबरि जाइत छलिऐक ओकरा ओहि ठाम, मुदा रेवा सैह ओकरा ओहि ठाम जायब छोड़ि देलकैक अछि । आइ कहैत छिऐक ओकरे ओहि ठाम चलबाकलेल ।'

–कतऽ छनि एहि शारदादाइक डेरा ? कहाँ लऽ जयबैक एकरा ओहि ठाम ? अनेरे कथी लेल बौआइ लेल जायब ?' हम तँ बड़ विचित्र स्थितिमे पड़ि गेलहुँ जे आब हम की कहिऐक । परमीलाक कहलापर मोन भेल जे शारदाक ओहि ठाम जैऐक । मुदा मायक मना कयलापर आब हम कोना जाइ ! एकसरोमे एक दिन माय मना कयलक जे एना आब ककरो ओहि ठाम नहि गेल करी । आब की तोँ कोनो नेना छेँ । अपन सोझे स्कूल जो आ चल आ ।'

आब तोँही कह रामजोड़ी, जे कोना कऽ शारदाक ओहि ठाम जाइ ! ओकरा ओहि ठाम नहि जयबामे तोहर कोनो दोख ने । अपनो मोन कचोटैत रहैत अछि जे ओना कऽ शारदा हमरा समाद देलक आ तैयो ओकरा ओहि ठाम नहि गेलिऐक । स्कूलमे सेहो ओकरासँ नजरि बचौने रहैत छी । परमीलाक कथा तँ ठीके ने भेलैक तावत बियाहेक दिन ठीक भऽ जयतैक गय ? आन सखी–बहिनपाक हाल हम फेर लिखबौक । एखन एतबे । तोँ अपन हाल–समाचार अवश्य लिखिहेँ । तोरा हमरे सप्पत छौक, अनठबिहेँ नहि । **तोरे रामजोड़ी – रेवा**

24

हय रामजोड़ी, जय मैथिली !

तोहर चिट्ठी हमरा भेटि गेल । पढ़ि कऽ मोनमे बड़ भरोस भेल । हय, तोहर चिट्ठी पयबामे जँ एको रत्ती विलम्ब होइत अछि तँ मोन कछमछ करऽ लगैत अछि । एकदमसँ जेना उचाट लागि जाइत अछि । जानि नहि, तोरा एना हमरा चिट्ठी लेल होइत होयतह वा नहि । हय रामजोड़ी ! तोरे कहनामपर आब माय–बाबूक चिन्तामे हम अपन सन्हियायब छोड़ि देलहुँ अछि । हय, जहिया, जतऽ, जेना, जे होयबाक होयतैक से होयतैक । ओहि हेतु हम अपन माथ किएक भुकाउ ?

हय रामजोड़ी, तोरा हम अपन हृदयक बात कहैत छियह । मोनकेँ हम बड़ सान्त्वना दैत छिऐक तैयो जेना खुट–खुट्टी लागल रहैत अछि । आशंकासँ सौंसे देह सिहरैत रहैत अछि । हय, मोन पड़ैत रहैत अछि सूरदासक ओ पाँती जे 'जैसे उड़ि जहाजको पंछी, पुनि जहाजपर आबय' । अनन्त दूरी धरि पसरल ओहि नील जलराशिमे केहन लगैत होयतैक ओहि चिड़ैकेँ ? कतेक अबूह बूझि पड़ैत होयतैक ? मुदा ओकरा लेल आश्रय स्थल ओ जहाज तँ छलैक, जँ उड़ैत–उड़ैत ओकर पाँखि दुखा जाइत छल होयतैक तँ जहाजक मस्तूलपर बैसि कऽ सुस्ता लैत होयत । मुदा कल्पना करह जे जँ ओ जहाज डूबि जाइक तँ की होयतैक ओहि चिड़ैक ? कतऽ भेटतैक ओकरा आश्रय ओहि अथाह, अनन्त, अगम्य, अपार जलराशिमे । प्रायः जीवन भरि उड़िते रहि जायत, कतहु ठेकान नहि भेटतैक । सम्भव छैक जे कतहु कोनो टापू भेटि जाइक तँ विश्रामक साँस लऽ सकत । मुदा से तँ अनिश्चिते जकाँ रहतैक ।

हय रामजोड़ी, ओही पंछी सन हालति हमरा लोकनिक अछि। अनन्त आकासमे उड़ल चल जा रहलि छी, जानि नहि, कोनो गाछ–वृक्षक डारि वा फुनगी भेटत वा नहि ।

हमरा लोकनिक जीवन नौका कोन किनार वा दीयरमे जा कऽ लागत वा कोनो पाँकमे जा कऽ फाँसि जायत से के जौनय ? एही सभक आशंका आ भयसँ मोन भरिआयल रहैत अछि । ऊपरसँ जतबे शान्त रहैत छी, भीतरसँ ततबे हलचल मचल रहैत अछि। बिरड़ो आ बिहाड़ि उठैत रहैत अछि । अपन मोनक कथा ककरा कहबैक आ के बूझत ? के सहानुभूति देखाओत ? के सान्त्वना देत ?

हय रामजोड़ी, हम लिखैत-लिखैत कतेक भसिया गेलहुँ ? की कहियह, विचारक प्रवाहमे भसिया जाइत छी । एतेक खुलि कऽ गप्प करबाक वा लिखबाक अवसर हमरा कतऽसँ भेटत ? ओ तँ हमरा भाग्यसँ तोरा सन रामजोड़ी भेटलि, हमर रामजोड़ी मोन पाड़ि कऽ सिनेहसँ चिट्ठी लिखैत अछि आ हमरा एक बेर कऽ अपन हृदयक कथा कहबाक अवसर दैत अछि । ई तँ भेल हमरा पक्षक गप्प । तोँ अपन पक्षमे एकरा कोन रूपेँ लैत होयबह से तँ तोँही कहि सकैत छह । हमरा होइत अछि जे हमर आहे-माहेवला चिट्ठी पढ़ि कऽ बोर भऽ जाइत होयबह । कहैत होयबह जे रामजोड़ी जहिया कहियो चिट्ठी लिखैत अछि तँ अपन आमा माइक खिस्सा शुरू कऽ दैत अछि । रामजोड़ी हय, तोरा जँ अधलाहो लगैत होअह तैयो तमसैहह नहि, कारण तोरा चिट्ठी लिखलापर मोन हल्लुक भऽ जाइत अछि ।

हँ, एतेक दूरधरि तँ हम अपने पोथा पसारने छलहुँ । कहैत छैक जे बहिरा नाचय अपने ताले । मुदा से भलमनसाहति नहि कहल जा सकैत छैक । किछु तोरो सम्बन्धमे तँ हमरा पुछबाक चाही । हय, तोरा माय मना कऽ देलथुन शारदाक ओहि ठाम जयबासँ से किएक ? हमरा मोनमे एहि बातक बड़ दुख अछि । तँ आब शारदासँ तोरा भेंट नहियेँ होयतह ने ! हम सहजहि पटनेमे छी आ तोँ ओकरा ओहि ठाम जयबे ने करबहक, तखन की होइक ?

परमीलाक कथा-वार्ताक सम्बन्धमे खूब फड़िछा कऽ नहि लिखलह । एकटा चिट्ठीमे जे लिखने छलह जे एक गोटा परमीलाक ओहि ठाम आयल छलैक, ताहि सम्बन्धमे फेर किछु नहि लिखलह । हय रामजोड़ी ! तोँ अपनो सम्बन्धमे नहि लिखलह जे की भऽ रहल छैक । आ की, कोनो बात हमरासँ तोँ नुकबैत छह ? जँ नुकबैत होयबह तँ बड़ बेजाय बात भऽ जयतह । हम तोरासँ कोनो बात छपबैत नहि छियह । हम तोरा लिखने छलियह जे 'गामक आन-आन सखी-बहिनपाक सम्बन्धमे सेहो विस्तारसँ लिखिहह ।' मुदा तोँ ओकरा सम्बन्धमे किछु नहि लिखलह । रामजोड़ी हय, हमरा बिसरिहह नहि । मोन पाड़ि कऽ कष्ट उठा कऽ चिट्ठी अवश्य लिखिहह । **तोहर रामजोड़ी —सोना**

25 गय रामजोड़ी, जय मैथिली !

तोहर चिट्ठी भेटल । कुशल-समाचार जानि मोन बड़ प्रसन्न भेल । गय, हम तोहर चिट्ठीक बाट दिन-राति तकैत रहैत छियौक । आ तोँ छेँ जे जावत हम चिट्ठीक उतारा नहि देबौक तावत तोँ चिट्ठी लिखबे ने करबेँ ।

तोहर पछिला चिट्ठी पढ़ि कऽ तँ भेल जे तोँ आब मनुक्खसँ बेसी दार्शनिक भेल जा

रहल छें । एना वैरागी विचार सभ मोनमे किएक अबैत छौक ? गय, मोनमे तँ हमरो होइत रहैत अछि जे जानि नहि ककेरा हाथ पड़ि जाइ । मोनमे डऽर पैसले रहैत अछि, मुदा ताहिमे हमरो लोकनि की कऽ सकैत छिऐक ? जे होनी होयतैक से होयबे करतैक । कहैत छैक जस अपजस विधि हाथ । विधाताक जे इच्छा होयतनि सैह होयतैक । ककरो मुहें सुनने छलिऐक जे विवाह, जन्म आ मरणक स्थान सभक लेल निश्चित रहैत छैक । जकरा जतऽ कपारमे लिखल रहतैक ओतहि जा कऽ होयतैक । मुदा ताहि कारणें मोनमे निराशाकें स्थान दी से उचित नहि । समाजक जे गति छैक, जे रंग-ढंग छैक तकरा देखैत मोनमे निराशा होयब स्वाभाविक छैक, मुदा तों तँ पढ़लि-लिखलि छें, तोरा तँ अपना मोनमे भरसाहा बान्हि कऽ रखबाक चाहियैक, नहि तँ अनपढ़मे आ हमरा-तोरामे कोन अन्तर ?

मुदा एकटा बात कहि दैत छियौक, हमरा जे कोनो गप्प लिखैत छें से खुलि कऽ लिखिते रह । तोहर कोनो गप्प भसियायल नहि होइत छौक । तोहर मनःस्थिति जनबाक लेल हमरो मोन लगले रहैत अछि । तोहर चिट्ठी आहे-माहेवला नहि रहैत छौक । जे तोरा हीयामे से हमरा कीयामे । जे बात सभ तोरा मोनमे उठैत रहैत छौक सैह बात सभ हमरो मोनमे उठैत अछि, तें तोरा चिट्ठीमे हमरा अपने मोनक बात सभ पढ़बाक लेल भेटैत अछि । तों जे लिखलें जे 'हमर आहे-माहेवला चिट्ठी पढ़ि कऽ बोर भऽ जाइत होयबह' से अनर्गल ।

गय रामजोड़ी, एकटा बात आरो लिखैत छियौक । एहि बीचमे एकटा नऽव बात भेलैक अछि । हम तँ स्कूल जाइत छी आ नुका कऽ चल अबैत छी । शारदाक सोझाँ नहि होइत छी, जखन मुहाँमुही होयत तँ की कहबैक ? ओ हमरा टोकि देत तँ हम लाजे गड़ि जायब । से एक दिन परमीला आँचरक खूटसँ एकटा मोड़ल कागत बहार कऽ देलक आ कहलक जे एकरा पढ़ि लैह आ तुरन्त पढ़ि कऽ ओकर उतारा दैह, जकर चिट्ठी थिकैक से तोरासँ तुरन्त लिखित उत्तर चाहैत छह ।' हम सन्न दऽ रहि गेलहुँ जे परमीला ककर चिट्ठी अनलक अछि ? के हमरा चिट्ठी लिखलक अछि ? हम पुछलिऐक जे कहह ने जे ई चिट्ठी के लिखलक अछि आ एहिमे की सभ लिखल छैक ?

–से सभ हम नहि जानी, जे किछु छैक से ओहीमे छैक, अपने खोलि कऽ पढ़बहक तँ सभ किछु बूझि जेबहक जे के चिट्ठी लिखलकह आ की सभ छह ?' परमीला ई बाजि कऽ मिथिला मिहिर उनटा कऽ पढ़ऽ लागलि ।

हम कहलिऐक जे– हय, परी ! हमरा एना माथ जुनि भुकाबह, गोड़ लगैत छियह, हम कोनो अपराध नहि कयलियह अछि, कोनो हार-बिगाड़ नहि कयलियह अछि, तखन हमर एना परीक्षा नहि लैह ।

हमर देह तँ जेना थर-थर कपैत छल । जानि नहि, मोन हमर एना हलचल किएक भऽ गेल ? ओ मोड़ल कागत छुबिते जेना हमरा सौंसे देहमे डऽर पैसि गेल छल । हम बड़ दयनीय भावसँ ओकरा दिस तकलिऐक । परमीला हमर ई हाल देखि भभा कऽ हँसि

देलक । ओ बाजलि– जाह, हय रेवा ! एना किएक करैत छह ? तोहर चेहरा एना उज्जर किएक भऽ गेलह ? कोन बात लऽ कऽ तोरा एना मोन उजबुजा गेलह अछि ?

गय रामजोड़ी, जावत ओ हमरा ई बात कहय-कहय तावतमे जेना हमर माथ सुन्न होमऽ लागल, आँखिक सोझाँ अन्हार होमऽ लागल । घुरमी जकाँ लागि गेल । हम अपनाकेँ लाख सम्हारबाक कोसिस कयलहुँ मुदा हम स्वयं बेसम्हार भेलि जा रहलि छलहुँ । जखन अपन मोन आ देह अपन काबूमे नहि रहि सकल तँ परमीलाक कान्हपर हम अपन मूड़ी टेकि देलिऐक आ कहलिऐक जे– हय, हमर मोन बड़ खराब लगैत अछि, गामपर चलह ।

ओहि कालमे परमीलाकेँ कहैत सुनलिऐक– आहि रे दैवा ! हय रेवा बहिन, ई की भेलह हय ! एखने केहन नीक छलीह आ गप्प करिते एकदमसँ अचेत किएक भऽ गेलीह ! बाप रे, आब हम की करी ?' हम एतबा बुझलिऐक जे परमिला हमरा देहकेँ धरतीपर पाड़ि देलक आ अपना जांघपर हमर माथ धऽ कऽ रगड़ऽ लागलि मुदा तकरा बाद की सभ भेलैक, से हम किछु ने बुझलिऐक । हम एकदमसँ संज्ञाहीन भऽ गेलहुँ । हमर ओहि दिनुक अचेत भेलासँ सौंसे देह नितुआन भऽ गेल अछि, तेँ तोरा चिट्ठीक उतारा समयपर नहि दऽ सकलियौक । हमर विवशता जानि कऽ क्षमा करिहेँ । आरो बात सभ लिखितियौक मुदा एहि धड़फड़ीमे की कोना लिखियौक से नहि फुराइत अछि । पत्रोत्तर दिहेँ । बिसरिहेँ नहि । **तोरे रामजोड़ी –रेवा**

26

हय रामजोड़ी, जय मैथिली !

एतेक दिनुक बाद तोहर चिट्ठी पाबि कऽ जेना हक दऽ कतहुसँ प्राण आबि गेल । मोनमे भरोसे नहि छल जे तोहर चिट्ठी पायब । जाबत तोहर चिट्ठी नहि भेटल छल ताबत मोनमे किदन-कहाँदन सभ सोचैत छलहुँ । चिन्तासँ गललि जाइत छलहुँ । होइत छल जे हमरासँ फेर कोनो तेहन गलती तँ ने भऽ गेल अछि जाहिसँ हमर रामजोड़ी फेरो हमरासँ रूसि रहलि । अपन पछिला चिट्ठी सभकेँ मोन पाड़ैत छलहुँ तँ कोनो एहन बात नहि भेटैत छल जाहिसँ बूझि पड़य जे तोरा दुख भेल होयतह । दोसर मोन कहय जे प्रायः रामजोड़ीक कथा ठीक भऽ गेलैक आ प्रायः विवाहो भऽ गेलैक तेँ ओही हूलिमालिमे लिपित भेल रहैत अछि तेँ हमरा चिट्ठी-पत्री नहि दैत अछि । तोहर सप्पत कहैत छियह रामजोड़ी, ई बात सोचि कऽ पुलकित भऽ जाइ आ तामसो भऽ जाइत छल जे रामजोड़ी केहन अपस्वार्थी अछि ! एक बेर खबरियो ने देलक । रामजोड़ीकेँ एहन नहि करबाक चाहिऐक । बीचमे माय कय बेर पुछारियो कयलक जे– गय, रेवादाइ तोरा चिट्ठी नहि लिखलथुन अछि ? गाम-घरक कुशल-क्षेम बुझबाक लेल मोन लागल अछि ।

–कहाँ लिखलक अछि ?' हम कहलिऐक– देखही चिट्ठीयोक उतारा नहि देलक अछि । बूझि पड़ैत अछि ओकर कथा ठीक भऽ गेलैक ।' हम कहि तँ देलिऐक, मुदा पाछाँ बड़ लाज भेल । भेल जे हम ई कोन बात मायकेँ कहि देलिऐक ! मोनमे की

सोचतैक ! से हम चोट्टे ओहि ठामसँ ऊठि गेलहुँ । हय रामजोड़ी ! कखनो-कखनो कऽ मोनमे शंका भऽ जाइत छल जे हमर रामजोड़ीक मोन तँ ने असक भऽ गेलैक । फेर अपना मोनपर तामस होइत छल जे एहन अलच्छ बात मोनमे किएक अनैत छी ।

एक दिनुक सपनाक हाल लिखैत छियह । हम बिसनयलहुँ जे हम, तोँ, परमीला, शारदा आ आरो आन गोटे सभ छी । कोनो पैघ पाँतर छैक । ओहिमे खाली बालु । जतऽ धरि नजरि जाइत अछि ततऽ धरि बबूरक गाछ देखि पड़ैत छैक । रेहुनी कटैयाक गाछ सभ छैक । फेर बूझि पड़ल जेना बड्ड जोर अन्हड़-बिहाड़ि आबि गेलैक आ हमरा लोकनि ओहिमे उधियाय लगलहुँ अछि । तोँ भरि पाँज कऽ परमीलाकेँ धऽ लेलहक अछि, हम शारदाकेँ धरऽ लगलिऐक तँ ओ हमरा ठेलि देलक । हम तोरा देहपर खसि पड़लहुँ । तोहूँ तलमला कऽ खसि पड़लीह आ अचेत भऽ गेलीह । तखन शारदा तोरा भरि पाँज कऽ समेटि लेलकह अछि आ हमरा डाँटऽ लागल अछि जे तोँ बड्ड भारी मूर्ख छह, ईहो ने बुझैत छहक जे रेवती एखने दुखितसँ उठलैक अछि ।'

एतबेमे हमर निन्न भक दऽ टूटि गेल । डऽरसँ सौंसे देह भरि गेल । भगवती ! भगवती ! करऽ लगलहुँ । ओहि दिनसँ तोरापर हमर सुरता बढ़ि गेल छल । से देखह, ओ सपना आखिर कोनो ने कोनो रूपेँ घटित भैये गेलह । तोहर अचेत होयबाक हाल बूझि कऽ हम एकदमसँ घबड़ा गेलहुँ । तोहर दवाइ-वीरो होइत छह कि नहि, से लिखिहह । स्कूल बरु एखन नहि जाह । पढ़लासँ मस्तिष्कपर बऽल पड़ैत छैक । पढ़ि कऽ हमरा सभकेँ की कोनो पहाड़ ढाहबाक अछि ।

मुदा हय रामजोड़ी, ओ परमीलावला चिट्ठी ककर छलैक, ओहिमे कोन एहन बात छलैक जाहिसँ तोँ घबड़ा कऽ अचेत भऽ गेलीह ?

हय, तोँ तँ कोनो बातसँ घबड़ाइवाली जीव नहि छलीह, तखन जँ एना भऽ गेलह तँ अवश्ये कोनो भयानक बात भेल होयतैक, तेँ ने ओना भेलह ? ओ तँ सुकुर छलह जे लगेमे परमीला छलह, नहि तँ ने जानि तोहर की हाल होइतह ।

हय, मास दू माससँ तोँ देहेँ स्वस्थ नहि रहैत छह की ? सभ बात फड़िछा कऽ लिखह ।

हय रामजोड़ी, एकटा बात कहैत छियह तकरा अधलाह नहि मानिहह । तोँ हमरा लिखलह अछि जे-जे कोनो बात लिखैत छेँ से खुलि कऽ लिखिते रह ।' मुदा तोँ हमरासँ अपन बात सभ नुकौने रहैत छह । सभ बात हमरा नहि लिखैत छह ।

हे रामजोड़ी ! हमरासँ कोनो बात नुकाबह जुनि । तोरा हमरे सप्पत ! तोँ हमरे मुइल मुँह देखह, हमरे सराधक भात खाह जे सभ बात साफ-साफ नहि लिखह । हम तोहर रामजोड़ी थिकियह, बालसंगी । हम कोनो बात तोरासँ अबंच नहि रखैत छियह । तोँ जे हमरा

लिखलह अछि जे वैरागी भऽ गेलेँ से अपना मोनकेँ हम कोना कऽ समेटि कऽ रखिऐक । लाख समेटैत छी मोनकेँ तैयो ई समटल नहि रहैत अछि । होइत छल जे फगुआक हाल-समाचार लिखबह से नहि लीखि अपन दुखक हाल लिखलह । मोनमे चिन्ता, सोच, फिकिर सभ भऽ रहल अछि, अपन कुशल तुरन्ते जनाबह । **तोहर रामजोड़ी –सोना**

27

गय रामजोड़ी, जय मैथिली !

तोहर चिट्ठी पढ़लहुँ, पढ़ि कऽ बड्ड आनन्द भेल । चिट्ठी पढ़लाक बाद बेर-बेर मोनमे होइत रहल जे आब तोरासँ भेंट होइत तँ भरि छाँक गप्प करितहुँ । फगुआमे आशा छल जे तोँ अवश्य अयबेँ, मुदा तोरा हमरा लोकनिपर दया कहाँ होइत छौक ? हमरा सभकेँ तँ जेना बिसरिए जयबेँ । गय, पाबनियो-तिहारमे तँ गामकेँ देखि गेल कर । ओना तोरा आब एहि देहातमे मोन तँ नहियेँ लगतौक । कहाँ पटना आ कहाँ अपन ई गाम ! मुदा, गय रामजोड़ी ! कहुना थिकौक तँ ई अपन जन्मभूमि थिकौक, जन्मधरती । 'देशभक्ति'पर लेख लिखबाक कालमे एकटा पाँती मोन पाड़ि कऽ लिखने रही जे 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' से एकरा नहि बिसरी । गय, सासुरो जयबेँ तँ ओहि ठामक लोक पटनावाली कनियाँ नहि कहतौक । ओहू ठाम अपन गामक नाम धऽ कऽ कहतौक जे 'फल्लाँ गामवाली कनियाँ' । से एक बेर अपनो गाम दिस ताक । अपन सखी-बहिनपाक सुधि लहिन ।

बीचमे हम चिट्ठी नहि देने रहियौक ताहि लेल तोरा मोनमे अवश्ये चिन्ता भेल होयतौक । किएक देरी भेल ताहि सम्बन्धमे तँ लिखनहि रहियौक । तोँ अपना माँकेँ किएक कहि देलहिन बियाह आदि दऽ ? ओ की कहने होयथिन ?

गय रामजोड़ी ! तोरा मोनमे जे शंका भेल छलौक हमर देह-समाङक सम्बन्धमे से अपन आप्त लोकक प्रति एहिना होइत छैक । अपन लोक जखन कतहु आन ठाम जाइत छैक तँ लोक मारि की- कहाँ ने सोचऽ लगैत छैक । तोँ जे सपना देखने छलेँ सेहो एही दुआरेँ । गय, कोनो बात होमऽवला रहैत छैक तँ ओकर आगम लोक पहिनहिसँ जानि जाइत छैक । तहिना आन ठाम अपन लोकपर कोनो विपत्ति होइत छैक तँ तकरो आभास भऽ जाइत छैक । मोन उदास आ उचटल सन भऽ जाइत छैक, जी हदरैत रहैत छैक ।

तोहर सपनाक कथा जे पढ़लियौक से पढ़ि कऽ भेल अछि जेना कोनो पैघ घटना हमरा सभक ऊपर घटित होमऽ जा रहल अछि । गय, तोहर सपनामे एकटा बात तँ अवश्ये सत्त भेलौक जे बड्ड जोर अन्हड़ अयलैक आ हमरा लोकनि ओहमे उधियाय लगलहुँ आ फेर भरि पाँज कऽ परमीलाकेँ धऽ लेलहुँ । गय रामजोड़ी, एहिसँ बूझि पड़ैत अछि जेना सपनाक आनो गप्पसभ कोनो-कोनो रूपेँ घटित होयबे करतैक । रामजोड़ी गय, सुनैत छिऐक जे भोरक सपना सत्त होइक छैक से तोँ कखन देखने छलहिन ?

गय, हम एखन कमजोर ओहिना छी, मुदा मोन नीक रहैत अछि । दबाइ-बीरो भऽ

रहल छैक । स्कूल तँ नहियेँ जाइत छी, मुदा कखनो-कखनो कऽ पोथी-तोथी उनटा कऽ देखि लैत छिऐक । से तोँ कहैत छेँ एखन नहि पढ़बाक लेल तँ तोहर बात मानि लेबौक आ आबसँ नहि पढ़बौक ।

तोँ हमरा सम्बन्धमे विशेष चिन्ता नहि करिहेँ गय, हम तँ नीक भैये जायब । हम सब कतहु मऽरी ? लोक सभ कहैत छैक जे बेटीक जाति अज्जर-अम्मर भऽ कऽ जनम लैत छैक । कौआक जीह पिउने रहैत छैक घसि कऽ । तेँ हमरा किछु होयत नहि । भगवतीक कृपासँ सभ किछु ठीक भऽ जयतैक ।

ओना तँ हमरा कहियो किछु होइत नहि छल । ओहि दिन कोन डऽर हमरा मोनमे समा गेल से नहि जानि । जेना बुझलेँ अछि जे भयानक बात भऽ गेल होयतैक से सभ नहि छलैक । एकदम साधारण बात हमरा लेल हौआ भऽ गेल । हम जे अचेत भऽ गेलहुँ आ परमीला हमर माथ रगड़ऽ लागलि, तकरा बाद तँ मारि लोक जमा भऽ गेलैक । जखन हमरा चेत भेल, आँखि फूजल तँ देखलहुँ जे परमीला रुमाल भिजा कऽ हमर मुँह पोछि कऽ केस सरियबैत अछि । आगाँमे हेडमास्टर साहेब ठाढ़ छथि आ हमरासँ पुछैत छथि जे एना किएक भऽ गेलौक ? हम अपन चारू कात ओतेक लोककेँ देखि कऽ ऊपरे खेते रहि गेलहुँ जे एना तमसगीरसभ हमरा चारू कात किएक लागल अछि ? मुदा तुरन्ते मोन पड़ल जे हमरा चाउन्हि जकाँ आबि गेल छल । ओतेक लोककेँ देखि मोनमे बड़ लाज भेल । सभ टीचर लोकनि जमा भऽ गेल छलथिन ने । हम नहुएँसँ कहलियनि जे आइ गामपरसँ खा कऽ नहि चलल छलिऐक आ बाटमे बड्ड जोर रौद छलैक । पियास बड़ जोर लागल आ स्कूलमे पानि नहि पिलिऐक । गय रामजोड़ी, बातो सैह छलैक । हमरा जनतेँ ओही दुआरेँ ओना घुरमी लागि गेल छल ।

गय रामजोड़ी, तोँ हमरा मारि कहूँ सप्पत-सपतान दऽ कऽ लिखलेँ अछि जे 'हमरे सराधक भात खाह जे सभ बात साफ-साफ नहि लिखह ।' ओहिसँ उपरे तोँ लिखलेँ अछि 'तोँ अपने हमरासँ सभ बात नुकौने रहैत छह ।' से हमरासँ जे सप्पत खुआ ले । हम कोनो बात तोरासँ छपा कऽ नहि रखैत छियौक । तोरोसँ जँ मोनक बात नुकौनहि रहब तँ फेर हीया खोलि कऽ हम कहबैक ककरा । रामजोड़ी गय ! तोँ एको रत्ती मोनमे सन्देह नहि कर जे तोरासँ किछु हम नुकबैत छियौक । मोनमे चिन्ता, सोच, फिकिर नहि किछु करिहेँ । हम सकुशले छी, तोँ अपन कुशल शीघ्र जनबिहेँ । **तोरे रामजोड़ी –रेवा**

28 **हय रामजोड़ी ! जय मैथिली !**

तोहर चिट्ठीलेल बड़ मोन लागल छल । कोना कऽ तोहर हाल-समाचार जानि सकब ताहिलेल जेना छटपट्टी उठल छल । सभ दिन हम स्कूलसँ आबि कऽ तोहर चिट्ठीक पुछारी करैत छलियह । मोनमे आशंकाक बिहाड़ि बहैत रहैत छल जे केहन होयत हमर रामजोड़ी केहन नहि, मोन कहीं बेसी अधलाह तँ ने भऽ गेलैक । यैह सभ सदिखन सोचैत रही तावतमे

तोहर चिट्ठी भेटल । चिट्ठी पढ़ि तोहर कुशल-मंगलक गप्प बूझि कऽ ततेक हर्ख भेल जे होअय जे धरतीपर पयरे ने पड़त । हय रामजोड़ी, हमरो सदिखन होइत रहैत अछि जे आब तोरासँ भेंट भेनाइ बड़ जरूरी अछि । हमरो आशा छल जे फगुआमे हमरा लोकनि गाम जायब, मुदा सरकारी सालक आखरी मास रहबाक कारणेँ बाबूजीकेँ पलखति नहि भेटि सकलनि आ हमरा लोकनिकेँ गामक फगुआसँ अबंच रहऽ पड़ल ।

रामजोड़ी हय, गाम-घरक परतर ई पटना शहर नहि कऽ सकैत छैक से तोरा हम कोना बुझबियह । हमर मोन तँ छटपट कऽ रहल अछि गाम अयबाक लेल, मुदा अपन मोन भेने की होयत ? हय, जाहि धरतीपर जनम भेल, जाहि ठामक बोलीमे अपन मोनक भाव प्रकट करब सिखलहुँ, जाहि ठामक संस्कृतिमे रहि कऽ आचार-व्यवहार सिखलहुँ से धरती की बिसरल जयतैक ? लता-तरुसँ बेढ़ल, खेत-पथारसँ घेरल अपन गाम नहि बिसरल जाइत अछि । हय, अपना गामक ओ पुरनी पोखरि नहि बिसरल जाइत अछि, की ओहि पोखरिमे उजाहि नहि उठलैक अछि एखन ? तोरा मोन छह, एक बेर जे हमरा लोकनि ओहिमे माछ मारने रहिऐक ? हय, अपना गामक ओहि पाकड़िक गाछमे नऽव-नऽव टुस्सा लागि गेल होयतैक । ब्रह्मस्थानक पीपरक गाछ तँ एखन खूब कलसा गेल होयतैक । हय रामजोड़ी, अपना देशमे एहि बेर आम मजरलैक अछि कि नहि ? परुकाँ साल तँ ततेक अथरवन भऽ कऽ फड़ल रहैक जे सौंसे देश घिना गेल छल, कुकुर कौआ नहि पुछलकैक । आब एहि बेर की होइत छैक से देखा चाही ।

हय, एहन परम प्रिय, परम पावन अपन गामकेँ कोना बिसरि पायब ? हमरा तँ रहि-रहि कऽ नटुआ सभक ओ पाँती मोन पड़ैत अछि– **परम प्रिय पावन तिरहुत देश ।**

हम तँ अपन सभ संगी-बहिनपाक सुमिरन करैत रहैत छिऐक, मुदा वैह सभ जेना हमर सुधि बिसरा देलक अछि । ओकरा सभकेँ सोनादाइक चिन्ता किएक होयतैक । ओ तँ तोँही छह जे हमर सुधि लैत रहैत छह । हय रामजोड़ी, अपन देह-समाङक पूरा-पूरी हाल-समाचार जनबिहह । एखन तोँ बड़ कमजोर होयबह तेँ घरक कोनो भरिगर काज-ताज नहि करिहह ।

हमरा ई जानि कऽ बड़ सन्तोख भेल जे ओहि दिन जे तोँ अचेत भऽ गेलीह ताहिमे कोनो तेहन सीरियस बात नहि छलैक, मुदा किछु तँ अवश्ये रहल होयतैक । हमर अपन ई अनुमान अछि जे तोँ कोनो पैघ चिन्तामे पड़लि छह आ कहैत छैक, 'चिन्ता खाय शरीर' से ताही कारणेँ तोँ अबल भऽ गेलीह अछि । ओहि दिन कोन साधारण बातक हौआ भऽ गेल छलह से कहह तँ ।

हय रामजोड़ी, तोँ अपना चिट्ठीमे बहुत किछु हालचाल लिखलह । सभ किछु बूझि-सूझि कऽ मोन बड़ प्रसन्न भेल । भविष्योमे तोँ एहिना लिखैत रहबह से आशा करैत छी । किन्तु सभ बात लिखियो कऽ तोँ असलकी गप्प नुकाइये रखलह । तोँ कहबह

जे रामजोड़ीके ँ ई गप्प लिखलिऐक तँ मारि कहूँ खोद-बेद करऽ लागलि । तोँ ई गप्प नहि लिखलह जे परमीलावला चिट्ठी ककर छलैक, ओहिमे कोन एहन बात छलैक जाहिसँ घबड़ा कऽ अचेत भऽ गेलीह ? परमीला ओ चिट्ठी किएक अनलकैक ? ओ चिट्ठी अनबामे की उद्देश्य छलैक ओकर ? जँ तोरा कोनो धर्मसंकट नहि होअह, कोनो संकोच नहि बूझि पड़ह तँ अवश्ये सभ बात साफ-साफ लिखह । हँ, जँ कोनो तेहन बात होइक जकरा खोलब तोँ नीक नहि बूझह तँ हम दुराग्रह नहि करबह ।

हय रामजोड़ी ! तोरा परमीलापर कोनो तरहेँ सन्देहो होइत छह ? हमरा तँ मोनमे ओकरा प्रति केहनदन धारणा बनि गेल अछि । हमरा ई आशा नहि छल जे परमीला एतेक ओछ बुद्धिक भऽ जायत, जे चिट्ठी-पत्रीक लटपट-सटपटमे रहत, मुदा तोहर पछिला चिट्ठी पढ़ि कऽ कोनादन घिनाओन जकाँ लगैत अछि । जँ चिट्ठीमे कोनो अनर्गल कथा रहल होइक तखन तँ निश्चित रूपेँ तोँ परमीलाक संग छोड़ि दैह । आरो हम की लिखबह, आगिक धाहसँ मोमसन मोनके ँ बचा कऽ राखब बड़ कठिन छैक । सभ बात तँ तोँ अपने बुझैत होयबहक, हम की बुझबियह-बुझनुककलेल इसारा काफी छैक । **तोहर रामजोड़ी –सोना**

29

गय रामजोड़ी ! जय मैथिली !

तोहर चिट्ठी भेटल । पढ़ि कऽ मोनमे तोरा प्रति जे मात्सर्य भऽ उठल से की कहियौक । तोँ हमर कतेक ध्यान रखैत छेँ ! हमरा लेल चिन्ता होइत रहैत छौक । हमरेपर मोन लागल रहैत छौक से सभ जानि कऽ मोनक कोन-कोनमे जेना गुदगुदी लागि रहल हो तेहने सन बूझि पड़ैत अछि । हमरालेल तोरा मोनमे जे बात सभ उपकैत रहैत छौक, ठीक सैह बात हमरो मोनमे तोरालेल उपकैत रहैत अछि । एहिसँ हमरा तँ यैह बूझि पड़ैत अछि जे हमर तोहर लगाओल ई रामजोड़ी नहि, सिनेहजोड़ी थिक । गय, कोनो गीतमे एकटा पाँती अबैत छैक 'रोपल सिनेहक गाछ' से जेना हम-तोँ मीलि कऽ ठीके सिनेहक गाछ रोपने रही । ओही गीतमे कहैत छैक जे 'फले-फुले लुबुधल डारि' तँ हमरो लोकनिक एहि सिनेहक गाछमे फल-फूल होइत रहय । गय रामजोड़ी, तोरा अपन गाम-घर बिसरल नहि जाइत छौक । ठीके बिसरल कोना जा सकैत छैक ? हम जे एक बेर लीखि देने रहियौक जे तोँ गामके ँ बिसरि गेलेँ से तँ ओहिना हँसीमे लिखलियौक ।

एकटा बात आरो, गय रामजोड़ी, तोरा एहि ठाम संगी-बहिनपा सभ नहि बिसरलकौक अछि, सदिखन तोहरे चर्चा होइत रहैत छौक । सभ कहैत रहैत छौक जे सोनादाइ गाम अबितैक तँ खूब गप्प करितहुँ, पटनाक हाल-समाचार पुछितिऐक । ओहि ठामक सिनेमा दऽ पुछितिऐक । गंगाजीमे जहाज चलैत छैक ताहि दऽ पुछितिऐक ।

गय रामजोड़ी, गौरी आ गीता हमरा भुकबैत रहैत अछि जे सोनाके ँ लिखहक जे गाम औतैक । गय, तोँ गोलघर जा कऽ देखि अयलेँ कि नहि ? हमरा लोकनि बच्चामे पढ़ैत रहिऐक 'पटनाक गोलघर' से केहन छैक ? तो तँ ओहि ठाम छेँ, कने जा कऽ देखितहीक ।

हे देख, एकटा बात हम बिसरिये जाइत छलियौक । गय, पटनामे हवाइ जहाज खूब उतरैत छैक । सुनैत छिऐक बड़ पैघ रमना छैक ओहि ठाम । हमरा लोकनिकेँ तँ हवाइ जहाजक ऊड़ब आ उतरब देखबाक सेहन्ता लगले रहत । कहियो की देखबैक ? तोँ तँ खूबे देखने होयबेँ । गय, ओहि सम्बन्धमे लिखिहेँ । एहि ठाम छौंड़ी सभ हमरा भुकबैत रहैत अछि, तोँ लिखबही तँ हम पढ़ि कऽ सुना देबैक । गय रामजोड़ी, तोँ फगुआमे नहि अयलेँ, जूड़ोशीतलमे नहि । सोना, आब गाम चल आ, बहुत गोटेक बियाह भेलैक आ होमैयोबला छैक । तोँ रहबे तँ हमरो मोन लागत । गय, तोरा सेहन्ता नहि होइत छौक जे गाम-घरमे सखी-बहिनपाक बियाह-दान देखी !

आब हम शरीरेँ नीक छी । कमजोरी सेहो आब कम भऽ गेल अछि । स्कूल जायब स्थगित अछि । भरि दिन गामेपर माछी मारैत रहैत छी । कोनो काज ने धन्धा । की करू सैह ने फुराइत अछि, लिखू-पढ़ू तँ माय कहत जे दिमागिपर असरि पड़तौक, सियाइ-फड़ाइ करू तँ कहत जे आँखिपर जोर पड़तौक । काज करू तँ कहत दमे ने छौक, तोँ की करबेँ ? ककरो आङन बूलऽ जाउ तँ कहत– गय, टाङ नहि दुखाइत छौक ?' मने एको करैत एको नहि बनैत अछि ।

गय रामजोड़ी, तोँ ओहि दिनुक चिट्ठीक सम्बन्धमे जे लिखलेँ, से कोनो विशेष चिन्तावला नहि छलैक । परमीलापर जे तोरा सन्देह भेलौक सैह सन्देह हमरो भेल छल । मुदा से उचित नहि । परमीला बड्ड नीक लोक अछि । ओ कोनो चिट्ठी-पत्रीक लटपट-सटपटमे नहि छलि तेँ ओकरा प्रति जे धारणा बनि गेलौक अछि ओकरा तोँ दूर कऽ दे । ओ स्वभावक बड़ निर्मल अछि । ओकर संग छोड़बाक कोनो प्रश्न नहि छैक । तोहर इसारा हम बुझलियौक आ सप्पत खा कऽ कहैत छियौक जे तोहर रामजोड़ी कोनो गलती नहि करतौक । तोँ तँ चिट्ठीवला गप्पकेँ आरो भरिया देलही । चिट्ठी कोनो तेहन नहि छैक, ने ओहिमे कोनो बाते तेहन छैक जकरा नुकयबाक प्रयोजन होइक, मुदा एहन मनःस्थितिमे हमरा बातपर विश्वासे ने करबेँ जे ओ चिट्ठी कोनो विशेष ध्यान देबा योग्य नहि छलैक । तेँ तोरा ओ चिट्ठी पठा रहल छियौक । तोँ अपने पढ़ि कऽ बूझि जयबेँ । पत्रोत्तर दिहेँ । **तोरे रामजोड़ी –रेवा**

30

स्वस्ति श्रीरेवतीदाइ, नमस्ते !

आइ हम अहाँकेँ ई चिट्ठी लीखि रहलि छी ताहिसँ अन्दाज लगा लियऽ जे अहाँसँ भेंट करबाक हमरा कतेक इच्छा अछि । स्कूलमे अहाँ हमरासँ छिटकलिये रहैत छी । कोन एहन बात भेलैक जे अहाँ हमरा ओहि ठाम आयब एकदमेसँ त्यागि देलहुँ । रेवादाइ, हमरा मोनमे कतेक बेर भेल अछि जे अहाँक बाट हम छेकि कऽ ठाढ़ि भऽ जाइ, मुदा से अहाँक इच्छाक प्रतिकूल ने भऽ जाय, तेँ नहि कयलहुँ अछि । अहाँपर तँ हम हुकुम नहि चला सकैत छी, खाली अनुनय-विनय कऽ सकैत छी । आशा अछि जे अहाँ हमर अनुनयकेँ अवश्य मानब आ हमरा ओतऽ अवश्य आयब । हमरा परमीला कहैत छलि जे अहाँक माय

मना कयने छलीह हमरा ओहि ठाम अयबासँ । ओकर की कारण से हम नहि बुझैत छिऐक । जाहि दिन अहाँके परमीला हमरा ओहि ठाम अयबा लेल कहने छलि आ माय मना कऽ देने छलीह ओहि दिन हमरा ओहि ठाम भगवान्क पूजा छलनि.। हमहीं परमीलाके कहने रहिऐक जे तोरा आ रेवादाइके हकार, नोत आ संगहि बिजो सेहो करा दैत छियह, दुनू गोटा अवश्य अबिहह ।' हम ओहि दिन बाट तकिते रहि गेलहुँ । एकदमसँ जेना हेहऽरू भऽ गेल रही । भाइजी आबि कऽ कहलनि जे– कहलहुँ जे यैह संगी आओत, वैह संगी आओत, तँ कहाँ आयलि केओ ?'

माय आ बाबूजी सेहो अहाँ दऽ पुछलनि । हम की कहितियनि ? मोने–मोन होअय जे खूब कानी । सप्पत खा कऽ कहैत छी जे हमर आँखि ओहि दिन ढबढबायल छल । अहाँमे कोन एहन विशेषता अछि जे सभक मोनके मोहि लेने छिऐक ? भाइजी तँ जखन हमरा एसगरमे देखताह कि अहाँक चर्च पसारि देताह । माय तँ कय दिन ने अहाँक विषयमे पुछलक अछि जे आब तोहर संगी नहि अबैत छथुन ? तोँ झगड़ा–झाँटी तँ ने कऽ लेलहुन अछि ? एक दिन अनहुन ने बजा कऽ ? एक बेर देखबाक मोन करैत अछि !'

रेवादाइ ! अहाँके हम कोन शब्दमे नेहोरा करू जाहिसँ अहाँ पसीझि जाइ !

परमीला सेहो आब बेसी काल नहि अबैत अछि । हम ओकरोसँ पुछलिऐक तँ कहलक जे एकसर अयबामे मोन नहि लगैत अछि । रेवा अयबे ने करैत अछि । जानि नहि किएक ?' एही बातपर हम अहाँके ई पत्र दऽ रहल छी । एकरा अहाँ उपेखि नहि देब । नहि तुरन्त आबी तँ उतारा धरि अवश्ये तुरन्त दी । हम परमीलाके कहि देलिऐक अछि जे जेना–तेना कऽ एहि चिट्ठीक उत्तर रेवादाइसँ अवश्य लिहह ।

अय रेवादाइ ! भाइजीक आब बियाह होयतनि से सुनैत छिऐक । सुनैत छिऐक जे कनियाँ बड़ सुन्नरि छैक । शील–सोभाव सेहो वेश । हमरे अहाँक किलासमे प्रायः पढ़ैत छैक । जानि नहि, कोन कनियाँ थिकैक, कतऽक थिकैक ? भाइजी कहैत छथिन जे एखन हम बियाहे ने करब । हमरा कहलनि जे गय सारो, मायके कही ने जे एना हड़बड़यने घेघाहि–कनाहि कनियाँ गरदनिमे पड़ि जयतैक । आब की कहैत छथिन से बुझबैक ? कहैत छथिन जे हम कनियाँके अपने देखि लेबैक तखन बियाहक सहमति देबैक ।

हम कहलियनि– औ भाइजी ! हमरा लग कथी लेल एना रोब झाड़ैत छी ? बाबूजीके, मायके कहियौनि ने ?' मुदा माय लग जा कऽ बम्भोलानाथ ! एकदमसँ चुप्प रहैत छथि । खाली हमरे लग फुफकार ! जेना हमही हुनकर बियाह करबैत होइयनि । हमही घटक होइ । हमर अपन अन्दाज अछि जे लाखो छटपटयने एहि बेर बियाह नहि रुकतनि, होयबे करतनि । प्रायः भाइजीक इंतिहान खतम भेलापर कथाक उपन्यास होइ ।

ई सब तँ भेल अल्लर–बल्लर गप्प सभ । मूल बात ई जे अहाँ एक दिन हमरा

डेरापर आबी । हमरा अहाँसँ गप्प करबाक उत्कट इच्छा भऽ रहल अछि । अहाँ हमरा अनुरोधकेँ टारी नहि । आ फैरसँ कहि दैत छी, जँ अहाँ नहि आयब तँ हमहीं अहाँक ओहि ठाम चल आयब । कोनो आश्चर्य नहि जे हमरा संग हमर मायो चल आबय । ओकरो अहाँके देखबालेल मोन लागल छैक । शेष कुशले-कुशल । **अहाँक –शारदा**

31

हय रामजोड़ी ! जय मैथिली !

तोहर चिट्ठी पढ़लियह, संग-संग शारदाक चिट्ठी सेहो पढ़लिऐक । हय, वैह चिट्ठी छलैक शारदाक जकरा हाथमे पड़िते तोँ अचेत भऽ गेल छलीह ? शारदाक चिट्ठी पढ़ि कऽ तँ हमरा मोनमे किदन-कहाँदन सभ होमऽ लागल । सभसँ पहिल बात तँ ई जे ओ तोरा 'अहाँ अहाँ' कऽ कऽ चिट्ठी किएक लिखलकह ? हय, हम सभ तँ सभ दिन संगहि रही, कहाँ-कहियो तोरा 'अहाँ' कहैत छलह ? सभ दिन तँ 'हय शारदा' ! आ 'हय रेवा ! सैह चलैत छलह ।

शारदा तोरा ओतेक करुणा कऽ कऽ लिखलकह अछि तँ एक दिन ओकरा डेरापर भैये अयबहक तँ की होयतह ? एना ककरो निठोहर नहि करी । शारदो तँ बड़ भारी हट्ठी अछि । अपनहि एक दिन रिक्सासँ तोरा ओहि ठाम चल औतह तँ की अमला ओछ भऽ जयतैक ? नहि होअह तँ स्कूलमे दुनू गोटा मीलि लैह । कनेकटा बातकेँ तोँ सब एना भरियौने छह से हमरा नहि नीक लगैत अछि । हम तँ शारदोकेँ लिखबैक जे तोँ सभ ई कोन खेल-बेल रचने छेँ ? शारदाक भाइक बियाह भऽ रहल छनि से शारदाक तोरेवला चिट्ठीसँ बुझलिऐक । शारदाकेँ एतेक पलखति कि ध्यान कहाँसँ रहतैक जे हमरा सभके ओहि सभ दऽ एको अच्छर लिखत ? एहन सन बूझि पड़ैत अछि जेना ओकर कहियो सँगिए ने रहल होइऐक । एहन नहि करक चाही शारदाकेँ । मुदा ओकरापर हमर जोरे की अछि ?

ओ तँ तिरपित होयत बियाहक अलदलमे । नवकी भौजी जे औथिन । कतऽ बियाह होइत छनि; केहन कनियाँ छैक, पढ़लि छैक कि नहि, आगाँ कतेक व्यवस्था दैत छनि से सभ तँ किछु बुझबे ने कयलिऐक ।

हय रामजोड़ी ! एकटा बात तोरा लिखैत छियह जे शारदाक भाइजीकेँ एखन बियाह करब कोनो जरूरी छलनि ! मलाहिनक माँछ तँ नहियेँ छथि । हमरा सभ जकाँ माउगि-मेहर तँ नहियेँ छथि जे अजगग भऽ जयबाक डर होयतनि । एखन हुनकर वयसे की भेलनि अछि ! एखन तँ केहन सुन्दर पढ़ैत छथि । पढ़ि-लीखि कोनो नीक ठाम नोकरी धरितथि तखन बियाह करितथि । पढ़लो-लिखल परिवारक लोकमे यैह बात ! हय, कहक शारदाकेँ जे ओ अपना मायकेँ कहतनि ।... आकि छोड़ि दिहक, नहि कहिहक । अनकर ममिलामे हमरा सभकेँ पड़बाक कोन प्रयोजन !

हय रामजोड़ी ! पटनाक गोलघर तँ सत्ते बड़ नामी छैक, मुदा हम ओतऽ नहि जा सकलहुँ अछि, ने एखन धरि म्यूजियमे देखलिऐक अछि । सत्त पूछह तँ जयबाक मोने ने

करैत अछि । आ मोनो करत तँ एकसरिए कोना जायब ? माय सतत काल चिन्तेमे ग्रस्त रहैत अछि, बाबूजीकेँ ओफिस आ कन्यादानक चिन्ता आ भाइजीक अपन मोटका-मोटका पोथी सभसँ फुरसतिए ने होइत छनि । एकटा उफाँटू हमही बनलि रहैत छी, से हमरो बलजोरी पोथी लऽ कऽ ने तँ सिआइ-फड़ाइक वस्तु लऽ बैसि जाय पड़ैत अछि ।

भाइजीकेँ मारि घटक सभ अबैत छनि । सभकेँ बाबूजी एकेटा उतारा दैत छथिन जे हमरा अपने एकटा काज अरसल अछि से जा धरि नहि सम्पन्न होयत तावत बौआक बियाह नहि करयबनि आ दोसर बात एखन तँ नेना छथि, पढ़िए रहल छथि, कोनो हड़बड़ी नहि छैक ।' हय रामजोड़ी, बाबूजीक एहि बातपर हमरा तामस जकाँ भऽ जाइत अछि जे भाइजी हमरासँ पाँच-छौ बरखक जेठ छथि से तँ ओ नेना छथि, हुनका पढ़बाक छनि आ हम बुढ़िया भेलि जा रहलि छी, अजगिग भेलि जाइत छी । तोँही कहह रामजोड़ी, जे ई बात तोरो अनटोटल लगतह कि नहि ? हय, हम अपनो स्कूलमे देखैत छिऐक आ बाटो-घाटमे देखैत छिऐक जे जाठि सनि-सनि मौगी आ एखन धरि कुमारिए । ओकरा लगमे तँ हम सभ पासङोने होयबैक । बूझह तँ हम सभ बकरीक बच्चा लगबैक । स्कूलोमे तीन चारिटा 'बहनजी'क बियाह नहि भेल छनि । हमरे डेरा लग एकटा आरो डेरामे एकटा प्रतिमादाइ छथि, कालेजमे पढ़ैत छथि । बूझह तँ हमरासँ बहुत बीस । माय हुनका दऽ कहैत छैक जे बियाह भेल रहितैक तँ चारि धिया-पूताक माय भेलि रहैत । से कखनो-कखनो कऽ हुनका लग चल जाइत छी । हुनका हम प्रतिमादीदी कहैत छियनि । ओ हमरा एक दिन कहलनि- अय जी सोना ! तुम्हारी शादी की बात हो रही है ?

हमरा तँ बड़ लाज भऽ गेल । ओ हमर गाल थपथपबैत कहलनि- बोलो न । तुम लजाती हो ?' हम मूड़ी गोंतने कहलिऐक- क्या जाने !'

-हाय राम ! नन्ही-सी गुड़िया शादी करेगी !' ओ हँसी करैत कहलनि- मैं तो माँजीसे कहूँगी । हमरा कोनादन लागल, से हम तुरन्त भागि कऽ चल अयलहुँ । एखन धरि नहि गेलियनि अछि । आब कागतमे एहिसँ बेसी जगह नहि छैक तेँ एतबे । फेर दोसर बेर लिखबह । तोँ पत्रक उतारा तुरन्त दिहह । **तोरे रामजोड़ी -सोना**

32 **गय रामजोड़ी, जय मैथिली !**

तोहर चिट्ठी भेटल । पढ़ि कऽ मोन बड़ प्रसन्न भेल । गय रामजोड़ी, तोँ जे शारदाक भाइजी दऽ कहलेँ जे जँ एखन नहियेँ बियाह करताह तँ की बिगड़तनि । से ओहि दऽ हम की लिखियौक ? ककरो मोनकेँ आन केओ कोना कऽ रोकि देतैक ? जँ हुनका लोकनिकेँ इच्छा छनि तँ ओकरा रोकनिहार हम सभ के छी ?

गय,तोँ कहलेँ शारदाकेँ कहबाक लेल, मुदा ओ तँ अपन घरक लोकसँ तीन बिसबा आगाँ अछि । ओ चाहैत अछि जे हुनकर बियाह जे काल्हि होयतनि से आइए भऽ जाउन । आब एकर कोनो जबाब तोँ दऽ सकैत छही ?

गय, एहि बीचमे फेर एकटा बात भेलैक अछि । शारदा फेर एकटा चिट्ठी लिखलक जे अहाँ हमरा चिट्ठीक कोनो उतारा नहि देलहुँ, भेंट-घाँट कहाँसँ होयत । अहाँ तँ स्कूलो आयब त्यागि देने छी । ओहि दिन सुनलहुँ जे अहाँ स्कूलमे अचेत भऽ गेलि रही । ओहि दिनसँ हमर मोन बड़ विचलित भऽ गेल अछि । एको रत्ती मोन नहि लगैत अछि । अहाँक मोन खराब भऽ गेल तेँ हमरा ओहि ठाम तँ अहाँ एखन चाहियो कऽ नहि आबि सकब । अहाँ नहि आयब तँ कोनो बात नहि । जँ अहाँ हमरा आदेश दी तँ हम अपने आबि जायब । अयबामे कोनो बेसी भीड़ तँ नहियेँ लगतैक, भाइजीकेँ कहबनि जे हमरा रेवतीदाइक ओहि ठाम पहुँचा दियऽ । अहाँ तुरन्त अपन स्वस्ति पठा दियऽ । परमीलाकेँ सेहो बजा लेबैक । ओहो संग-संग रहति ।'

गय रामजोड़ी ! ओहि अलगी छौंड़ीक कथा की कहियौक ? ओ तँ बड़ विचित्र स्थितिमे हमरा दऽ देलक । एक दिन ओ आ परमिला एकटा रिक्सापर आ शारदाक भाइजी पाछाँ-पाछाँ साइकिलपर-धमधम कऽ दलानपर हाजिर ! बाबूजी गामपर नहि छलथिन । कतऽ गेल छल होयथिन से बुझबामे कोनो भाङठ नहियेँ होयतौक ? तीन-चारि दिनसँ बाहरे छलथिन ।

शारदा एकटा साजीमे मारि किदन-कहाँदन सनेस सभ अनने । सरोजिनीक लेल फराक ई सभ अनने । सरोजिनी कनियाँ-पुतरा खेलाइत छलि से ओकरा पकड़ि कऽ पहिरा देलकैक । शारदाक भाइजीकेँ परमीला जलपानक व्यवस्था कऽ देलकनि । शारदा केहन मुँहफट्ट जे हुनका कहि देलकनि जे भाइजी, आब अहाँ जा सकैत छी । हमरा नहि नीक लागल ओकर उद्धतपनी । रौद छलैक तेँ हमर मोन जे बिलमि जयताह, फेर दुनू भाइ-बहीन चल जयताह । हम कहबो कयलियनि जे एखन नहि जाउ, मायो परमीलासँ कहबौलकनि, मुदा शारदा तँ उपरटभकी, लुब-लुब कऽ बाजि देलकैक जे- एह ! एहि ठाम हम सभ अपन गप्पमे बाझल रहब आ ई एकसर 'बोर' होइत रहताह से किएक ?'

शारदाक भाइजी कहलथिन- रेवतीदाइ हमरा सभक ओहि ठाम जाइते ने छथि तखन तँ हमरे सभकेँ आबऽ पड़ल ।' हम शारदाकेँ कहलिऐक जे -हय शारदा ! ई सभ तोरे खुरफात रचल थिकह । हुनका की-कहाँ कहि कऽ हरान करौलहुन ।'

शारदा हमर मुँह दूसैत कहलक- महरानीजी ! बेसी ममता देखयबाक काज नहि अछि ।' आ फेर शारदा आ परमीला दुनू गोटा हहारो दऽ कऽ हँसि देलक । हमरा मोनमे तामसो भेल जे एहन बलहँसीक कोन प्रयोजन छैक । जखन ओ जाय लगलाह तँ परमीला दौड़लि माय लग गेलि आ कहलैक- अय काकी, शारदाक भाइजी जाइ छथिन, अहाँ देखबनि नहि ?'

माय सेहो दौड़ि कऽ आयलि आ केबाड़क दोगसँ देखऽ लागलि । मायपर मोन खौंझा गेल जे शारदाक भाइजीसँ एना नुकयबाक कोन प्रयोजन छलैक ! मायकेँ हम

बिहुँसैत देखलिऐक । ओ पछबरिया घरसँ नारिकेर, किसमिस, अड़ाँची, छोहाड़ा आ सुपारी एकटा सराइमे आनि कऽ परमीलाकेँ देलकैक शारदाक भाइजीकेँ देबा लेल । ओ तँ चल गेलथिन, मुदा हमरा मोनमे की-कहाँ सभ ने उपकऽ लागल ।

भरि दिन परमीला आ शारदा रहि-रहि कऽ हमरा देखि कऽ खिखिया उठय । हम खौंझा उठी आ ओ जेना एहिमे रस लैत रहय । भरि दिन 'अहाँ-अहाँ' करैत रहलि । हम कहलिऐक तँ कहलक जे– अहाँ हमरा हय कहू, मुदा हम अहाँकेँ अय कहब ।' ई बात कहैत-कहैत ओकर मुँह गह्वरित भऽ गेलैक । साँझ कऽ ओ बाजलि जे– अहाँ लगसँ जयबाक मोन नहि करैत अछि । होइत अछि जे अहींक पाँजरमे बैसलि रही । मुदा जे-से, फेर तँ भेंट होयबे करत । बिसरब नहि, खास कऽ जखन अहाँक बियाह होयत तँ हमरा अवश्य बजायब ।'

चलितो-चलितो ओ व्यंग्य कैये ने देलक । ओ अवसर तँ ने चूकऽवाली अछि ? ओकरा गेलाक बाद हमर मोन शारदा आ ओकर भाइजीक चारू कात घूमैत रहल । बूझि पड़ल जेना आजुक ओकर बेवहार तँ निकटतम सम्बन्धी जकाँ भेलैक अछि । ओकर भलमनसाहतिपर मुग्ध रही । देखी, आब कहिया भेटैत अछि । तोँ पत्रोत्तर तुरन्त दैह । **तोरे –रेवा**

33

हय रामजोड़ी, जय मैथिली !

तोहर चिट्ठीक बाट तकैत छलियह, से भेटैत देरी हँपसि कऽ पढ़ऽ लगलहुँ । मुदा चिट्ठी पढ़ैत-पढ़ैत बड़ उदवेग होमऽ लागल । मोन कोनादन करऽ लागल । गुनधुनमे पड़ि गेलहुँ– ई की भऽ गेलैक ? दू-तीन दिन धरि तँ अथउथमे पड़लि रहलहुँ । किछु सोहाइते ने छल । सदिखन जेना जी उचङले-उचङल सन रहल । आइ अपनाकेँ खूब परबोधि कऽ सुचित मोनसँ तोरा चिट्ठी लिखऽ बैसलहुँ अछि ।

रामजोड़ी हय, तोरा ओतऽ शारदा आ परमीला अचानचकमे पहुँचि गेलह आ ओकरा सभक संग शारदाक भाइजी सेहो छलथिन । शारदा किछु व्यवहारो कयलकह । ई सब तँ अनेरे नहि ने भेल होयतैक ! पहिलुक चिट्ठीमे तोँ लिखने छलीह जे एक दिन काकी तोरा शारदाक ओहि ठाम जाइसँ मना कयने छलथुन । शारदा तोरा 'अहाँ अहाँ' कहऽ लगलह । तोरा चिट्ठी लिखलकह । अपना ओतऽ अयबाक नेहोरा कयलकह । हमरा तखनेसँ किछु सन्देह होमऽ लागल छल जे बिनु कारनीएँ बैदक घोड़ा नहि दौड़ैत छैक । ओहि दिन शारदा आ परमीलाक संग शारदाक भाइजी अयलथिन तँ हुनका काकी अऽढ़सँ ठिकिया कऽ देखलथिन, आवेससँ जलखै करबाक आग्रह कयलथिन । सब बातकेँ माला जकाँ गाँथि कऽ देखलहुँ तँ हमरा अर्थ लागि गेल जे तोहर गुड्डी कटि गेलह ।

हय, हमरा जखन असली बात बुझबामे भाङठ नहि रहि गेल, तखन तोँ अनबूझ रहि गेलि होयबह से नहि भऽ सकैत छैक । तोँ सरती सब बात बुझैत छलीह मुदा हमरासँ बात नुकौने रहलीह । नुकौने की रहबह, एक तरहेँ पिहानी जकाँ झाँपि-तोपि कऽ तँ लिखिये दैत

छलह । हमही तेहन बकलेलि जे असली बात नहि बुझैत छलिऐक । बूझि सकलियह तोहर एही चिट्ठीसँ जे शारदाक भाइजीक प्रति तोहर कथा लगिचा गेलह अछि ।

हय रामजोड़ी, तोरा मोनमे ई बात अवश्य उपकतह जे तोहर कथा-वार्त्ताक बात जानि तोहर रामजोड़ीक मोनमे किएक उद्‌बेग भऽ गेलैक । हय, आइ हम अपन रामजोड़ीसँ कोनो बात नुका कऽ नहि राखब । हम सभ बात बिकछा कऽ तोरा कहि देबह । तोरा नहि कहबह तँ कहबैक ककरा ? अपन मोनक सभ नीक-अधलाह तोरे कहैत अयलियह अछि ने ! हे हय, अपन मोनक जे जे बात सब लिखबह से सब जानि कऽ रोख कि तामस नहि करिहह, ने अपन रामजोड़ी पर सन्देह करिहह । अपन बकलेलही रामजोड़ीक एकटा बतहपनी बूझि कऽ बिसरि जैहह ।

हय, तोरा मोन होयतह, तोँही लिखने छलीह, जे, शारदासँ ओकर भाइजी हमरवला रुमाल लऽ लेने छलथिन आ मड़लोपर आपस नहि कयलथिन । ओ हमर चर्चा बेर-बेर करैत रहैत छलथिन । से सब जानि कऽ हमरा नीक लागऽ लागल छल । हमरा मोनमे शारदाक भाइजीक प्रति एकटा अपनैतीक भाव जकाँ भऽ गेल छल । तोरा प्रति शारदाक अत्यन्त अपनैतीक व्यवहारसँ हमरा इरखा होमऽ लागल छल आ तेँ तोरा एकटा चिट्ठी ओते कठोर भाषामे लिखने छलियह । हय रामजोड़ी, सत्त-सत्त किएक नहि कहियह, तोहर इहो चिट्ठी पढ़ि कऽ पहिल झोंकमे इरखा आ डाह भऽ गेल छल । हमरा भेल जेना हमर कोनो धराउर चीज तोँ लुझने जा रहल छह । आ ओही उदवेगमे अनमनायलो रहलहुँ । मुदा फेर सुचित भऽ कऽ विचारऽ लगलहुँ जे बजारमे लोक नीक-नीक वस्तु देखैत छैक, ओहि पर लोभो भऽ जाइत छैक मुदा तेँ ओहि पर देखनाहरक कोनो अधिकार तँ नहि भऽ जाइत छैक । एहिना सोचैत-सोचैत हमरा अपने गरानि होमऽ लागल जे तोरा सन अपन हित-प्रेमक प्रति हमरा मोनमे एहन कुविचार किएक जागल ?

हय, हमर मनक बात बूझि कऽ प्रेम-त्रेमक बात नहि सोचऽ लगिहह । से सब किछु ने छलैक । ओ सब उपन्यासे-सिनेमा आ नाटकमे होइत छैक । अपना सभक समाजमे से सब नहि होइत छैक । कहियो भैयो ने सकैत छैक । अपना सभक समाजमे तँ मानल जाइत छैक जे स्त्री-पुरुषक जोड़ीक मिलान ब्रह्माजीक लिखलाहा होइत छैक । वैह छठिहारक रातिमे जनमौटी बच्चाक कपारमे जकरासँ जकर जोड़ी लीखि देने रहैत छथिन, सैह होइत छैक । भाग्यक रेख के मेटा सकैत छैक कि बदलि सकैत छैक ? नहि तँ, हम की तोँ, शारदा की परमीला कहियो सोचनहुँ छलिऐक जे शारदाक भाइजीसँ तोहर कथा लगतह ?

हय, शारदा बड़ सुजनि अछि । ओकर माय-बाबू सेहो बड़ नीक लोक छथिन । शारदाक भाइजीक शील-स्वभाव कतेक नीक छनि ? खूब सहमिल्लू, खूब मिठबोलिया । एहन सुजन लोकक तोँ अंक लगबह, तोहर जुड़िबन्हन होयतह, से सोचि-सोचि बड़

अहलाद भऽ रहल अछि । रामजोड़ी हय, ओहो लोकनि बड़ भागमन्त छथि जे हमर रामजोड़ी सन सोनक टुकड़ी भेटि जयतनि, सबे किछु देखल-सुनल, बुझल-गमल, निरेखल-परेखल । आन ठाम टका-पाइ, देब-लेब खूब भऽ सकैत छलनि मुदा लोको अपना मोन जोग भेटबे करितनि तकर कोन ठेकान !

हय, हम मायकेँ तोहर कथा दऽ कहलिऐक जे हमर रामजोड़ीक कथा प्रायः ठीक भऽ गेलैक । हम कहि तँ देलिऐक मुदा पाछाँ हमरा अपने लाज भऽ गेल जे माय की बुझति हमरा दऽ ? रामजोड़ी हय, हमर बात सूनि माय बड़ हरखित भेल आ चोट्टहि पूछि देलक जे कतऽ ठीक भेलैक अछि ?' हम कहलिऐक जे एकदम निजगुत तँ नहि भेलैक अछि मुदा भेले सन बुझही । हमरे स्कूलक संगी अछि शारदा, तकरे भाइ थिकथिन वर ।' माय हुलसैत बाजलि जे-गय, शारदाक बाबूजी तोहर बाबूजीक बड़ अपेक्षित छथिन । ओहि नेनाकेँ तँ हम देखनहुँ छिऐक कय बेर । भगवती सभक भल करथुन, संगहि हमरहु सब दिस ताकथु । जानि नहि भगवती हमरा सब दिस कहिया तकतीह ?' ई कहि कऽ अपन दहिना हाथसँ हमर मुँह हँसोथऽ लागलि । हम लजा कऽ पड़ा अयलहुँ ।

हय रामजोड़ी, रातिमे बाबूजी जखन खाइत रहथिन तखन माय किदन-किदन फुदुर-फुदुर कहैत रहनि मुदा किछु बुझलिऐक नहि । खाली दुनू गोटा बेर-बेर 'सोना-सोना' करैत रहथिन, सैहटा बुझबामे आयल । ताहीसँ गमलहुँ जे हमरे दऽ किछु गप्प भऽ रहल छैक । की गप्प होइत छल होयतैक से तोँ अपनो अन्दाज कऽ सकैत छह ।

अँय हय, शारदा आब तोरा ओतऽ अबैत छह कि नहि ? अबिते होयतह ? की-केहन आब ओकर व्यवहार होइत छैक तोरा संग ? की सब गप्प करैत छह ? शारदाक भाइजीकेँ फेर कहियो देखलहुन अछि कि नहि ? बेर-बेर हुनका देखबाक मोन तँ होइते होयतह । आ परमीलाक की हाल-चाल छैक ? हमरा तँ होइत अछि जे शारदाक भाइजीसँ जे तोहर कथा लगलह ताहिमे ओकरो सऽह जरूर रहल होयतैक । वैह शारदाक संग बुधिबधिया कऽ कऽ सब रचना रचने होयत । आ कि नहि ?

हय रामजोड़ी, मोनमे तँ होइत अछि जे अपन सक रहितय तँ ऐखन तन-मनसँ उड़ि कऽ तोरा लग चल अबितहुँ आ मोनक बात बतिऐतहुँ । मुदा की करू ? तखन तँ चिट्ठीएक असरा अछि । कागतक पाँखिपर तँ मनेटा जा सकैत छैक, तन नहि । तेँ एही कागतक पाँखिपर उड़ि-उड़ि कऽ हम तोरा लग जायब, तोँ हमरा लग अयबह । हय, आगाँ कोना-की भेलह, तोरा केहन लगैत छह, तोरा मोनमे की सब होइत छह, की सोचैत छह-से सब बात बिकछा-बिकछा कऽ हमरा अवश्य लिखिहह । अपन हीत रामजोड़ीसँ नुकबिहह नहि । आ, हे, बियाहक निस्तुकी दिन कहिया भेलह से धरि अवश्य लिखिहह । ओहि बेरमे अपन रामजोड़ीकेँ नहि बिसरिहह । नहि बिसरिहह । तोरा हमरे सप्पत । हमर मोन तोरे पर लागल रहत । उताराक बाट तकैत, **तोरे रामजोड़ी –सोना**

34 गय रामजोड़ी, जय मैथिली !

तोहर उतारा पयबा लेल बड़ मोन व्यग्र छल । होइत छल जे हमर चिट्ठी पढ़ि कऽ तोरा मोनमे की भेल होयतौक, की नहि । तों अपन मोनक भीजल बात सब नुकौलें नहि, साफ-साफ लिखलें । तोरा मोनमे हमर चिट्ठी पढ़ि कऽ जे भेलौक तकरा हम अनर्गल नहि कहबौक । तोहर हृदयक बात हम बुझैत छियौक । मुदा जे भेलैक आ भऽ रहलैक अछि ताहिमे हमर कोन करताइ अछि ? हम तँ अपना दिससँ उपकरि कऽ किछु ने कयने छलियौक । जहिया जे किछु भेलैक आ होइत रहलैक, ओहिमे हमरा जे बुझल भेल छल से लिखिते रहलियौक । हम मुदा बजितिऐक की ? गय रामजोड़ी, अपना सभक समाजक बेटी तँ गाय होइत अछि, जाहि खुट्टामे बान्हि दौक, बान्हलि रहति । आगाँमे जे घास-भुस्सा ओआरि दौक से खाय वा सूँघि कऽ छोड़ि दिअय । बाजत की, बाजत कोना ? ओकरा तँ बाजऽ नहि अबैत छैक । ओ खाली हुँकरऽ जनैत अछि । तें तो हमरा माफ कऽ दिहें ।

गय रामजोड़ी, हम तोरा कोना बुझबियौक जे हमरा मोनमे की की भऽ रहल अछि । सबसँ पहिल बात ई भेलैक जे हमर स्कूल जायब बन्द भऽ गेल अछि । जाहि दिन बाबूजी मायकें कहलथिन जे- आइसँ रेवा स्कूल नहि जायत, ताहि दिन हम भरे दिन कनितहिँ रहलहुँ । गय, एहि वर्ष तँ अपने सभक बैच मैट्रिकक बोर्ड परीक्षामे बैसतैक । मोनमे कतेक सेहन्ता छल जे हम खूब तैयारी कऽ परीक्षामे बैसब आ फस्ट डिवीजनमे पास होयब । हमहूँ आगाँ धरि पढ़ब । से सभ सऽख-सेहन्ता धोआ-पोछा गेल । ओना परमीला आबि कऽ बोल-भरोस दऽ गेल अछि जे क्लासमे जे सब पढ़ाइ होयतैक से सब नोट बना कऽ दऽ जयबह । पोथी सब अपना लगमे छहे । परोजन खतम भेलापर फेर स्कूल चलिहह आ परीक्षा दिहह । किछु दिन स्कूल नहियें जयबह तँ की बिगड़तैक ?' मुदा अपना नहि भरोस होइत अछि जे आब फेरसँ स्कूलक मुँह देखि सकब ।

गय, शारदा ओहि दिन आबि कऽ जे आपकता देखा गेलि तकरा बाद हमरा ओतऽ कहाँ आयलि कहियो । प्राय: ओकरो एमहर अयबासँ मना कऽ देल गेलैक अछि । परमीलाकें स्कूलमे ओकरासँ भेट आ गप-सप होइत रहैत छैक । परमीलाकें शारदाक संग जे बतियान होइत छैक से सब समाद हमरा कहि जाइत अछि । एम्हरको समाद शारदाकें कहिते होयतैक । मुदा एनामे शारदाक भाइजीकें कोना आ कतऽ देखबनि ? तखन, मोन तँ मोने थिक, बड़ चंचल । कखन, कतऽ, कोना चल जायत तकर कोन ठेकान ? ओकरा कोना रोकियौक ?

गय, एहि बीचमे एक दिन माय आ बाबूजीक मुँह उतरल देखलियनि । ठोर पर जेना फुफड़ी पड़ैत छलनि । जानि नहि किएक ? खाली बाबूजीकें एतबा कहैत सुनलियनि जे- जेना जे होयतैक से व्यवस्था करबैक । हाथसँ जाय तँ नहि देबैक ।

परमीला जखन आयलि तँ गपे-सपमे हमरासँ बात कहा गेल । तखन परमीला शारदाक ओहि ठामक किछु बात सब कहलक । शारदा ओकरा कहने छलैक जे ओकर

बाबूजी व्यवस्थामे जतेक मङने छलथिन ताही पर एकदमसँ अड़ि गेल छथिन। ऊपरसँ आरो किछु-किछु फरमाइसें करैत छथिन। कहैत छथिन जे ओहिसँ कममे कथा नहि करब। एहि लेल शारदा अपन मायसँ खूब झगड़ा कयलक। शारदाक भाइजी सेहो, अपन बाबूजी लग तँ नहि बजैत छथिन, मुदा मायकेँ कहलथिन जे व्यवस्था आ लेब-देब लऽ कऽ एहिना अड़ा-अड़ौअलि करबाक छलौक, एहिना रऽझऽ करबाक छलौक तँ हमरा शारदा आ परमीलाक संग जयबाक लाथ कऽ कऽ हुनका सभक ओहि ठाम पठौलेँ किएक ? हमरासँ बलजोरी 'हँ' किएक कहबौलेँ ? आब मूड़ी छिपैत जयबही से नहि होयतौक। कोनो नीक लोकके गाछ पर चढ़ा कऽ छओ मारब भलेआदमीक काज नहि थिकैक। अनकर बेटी कुजड़नीक भाँटा-मूड़ नहि थिकैक जे मोला-तौला कऽ उझीलि दिऐक। हम झाड़ि-ओसा कऽ कहि दैत छियौक— तोहर बेटाक बियाह आब होयतौक तँ ओत्तहि, ने तँ बेटा जिनगी भरि बियाहे ने करतौक। बोकबा रहत कुमारे।

गय रामजोड़ी, की कहियौक ? हमरे दुआरेँ शारदाक ओतऽ एतेक रेड़म-बहेड़म भेलैक से जानि कऽ हम तँ गरानिसँ गड़लि जाइत छी। एनामे कोना की होयतैक, ताहि सम्बन्धमे हम की लिखियौक ? हँ, परमीला धरि आबि कऽ कहि जाइत अछि जे शारदाक बाबूजीक बजने की होयतनि ? सरती ई कथा भऽ कऽ रहतैक।' ओ हमरा कहलक, शारदे ओकरा कहने होयतैक, जे शारदाक भाइजी तँ मोने-मोन गूड़-चाउर फँकितहि छथिन, हुनकर बाबूओजीकेँ सबा सोलह आना मोन छनि। ओ तँ चुपचाप सगून-हथधरी आ बियाहोक दिन तकबा लेने छथिन।' परमीला कहलक जे- शादाक परिवारक सब लोकके तोँ पसिन्ने पसिन्न छहुन। तखन वरक बापक जे एकटा लटाढ़म आ छिड़िऐनी होइत छैक, सैह शारदाक बाबूजी करैत छथिन।

गय, अपनो आङनमे काज-परोजनक जे धड़फड़ी होइत छैक से देखैत छिऐक। हमरा जेना ओहिसँ बारि देल गेल अछि। कोनो काजमे लागि-भीड़ि दियऽ जाइत छिऐक तँ माय रोकि दैत अछि। कहैत अछि— तोँ छोड़ि दहीँ।' आब हम की करू ? बैसल-बैसल, बूझ जे माँछी मारैत रहैत छी। कखनो काल कऽ पोथी लऽ कऽ बैसैत छी तँ मोने ने लगैत अछि। मोन जेना उचङले रहैत अछि। उचाट जकाँ बुझाइत अछि।

गय रामजोड़ी, जखन आङनमे मोन नहि लगैत अछि तँ कखनो काल तोरा आङन जाय तोरा बाबीसँ भेट कऽ अबैत छियनि। हुनका हमरा आङनक हालचाल केओ कहि आयल छलनि, से ओ तँ जेना खुसीसँ बताहि भऽ गेल छथिन। तोहर बाबी कहलनि जे- हय रेवा ! बियाह-दानमे जनउक खर्च बेसी होइत छैक। मायकेँ कहिहनु जे टकुड़ी पर सूतक ककुड़ी होनि तँ पठा दिहथि। हम सूतकेँ तानि-बाँटि, खीजि-माँजि कऽ जनउ तैयार कऽ देबनि। काज तँ बहुत होइत छैक, हम यैह काज सम्हारि देबनि।' गय रामजोड़ी, हम जखन जखन हुनका लग जाइत छी तँ बेर-बेर कहैत रहैत छथि जे- हे,

अपन रामजोड़ीकेँ एहि परोजनमे आबऽ लय अबस्स लिखिहक । तोँ लिखबहक तँ सोना अयबे करतेह । ओ तँ अपन माये-बाप जकाँ हमरा बिसरिए गेल अछि ।

रामजोड़ी गय, तोँ जे खोधिया-खोधिया कऽ पुछलेँ जे केहन लगैत छह ? मोनमे की सब होइत छह ?' से कोना लिखियौक जे की की सभ होइत अछि ? आगाँ की होयतैक ? बिड़रो, अन्हड़, बिहाड़ि उठैत रहैत अछि आ ओकरा झोँकमे जेना सदच्छन उधियाइत-पताइत रहैत छी । छाती धड़धड़ाइत रहैत अछि । मोनमे धुकधुकी पैसल रहैत अछि । सदिखन अदंके लेने रहैत अछि । होइत अछि जे एहनमे तोँ हू जँ लगमे रहितेँ तँ कतेक भरसाहा होइत ! शारदा हमरा ओतऽ अयबे ने करति । आन संगी सब जे अबैत अछि तकरासँ मोनक गप्प कहबामे अपने संकोच होइत अछि । तखन एकेटा अवलम्ब अछि परमीला । ओ अबैत अछि तँ खूब गप्प करैत अछि । मुदा कखनो-कखनो कऽ शारदा आ हुनक भाइजीक प्रसंग चला कऽ चौल करैत खौंझबितो रहैत अछि । हम खौंझाइत तँ छी, मुदा तोरा सत्ते कहैत छियौक रामजोड़ी, भितरे-भीतर कने-मने ओकर चौल आ खौंझायब नीके लगैत अछि । गय, जखन ओ स्कूलक पढ़ाइ आ नोट सभक गप्प बेसी नमराबऽ लगैत अछि तँ 'बोर' जकाँ होबऽ लगैत छी । होइत अछि जे परमीला आन-आन गप्पक बदलामे शारदेक ओहि ठामक गप्प किएक ने करैत अछि ।

गय, एखन हमर मोन जेना एकलक्खति उड़ियायले जकाँ रहैत अछि । जानि नहि, एना हमरे होइत अछि आ कि अनको एहिना होइत होयतैक ! और कतेक की सभ होइत अछि से कोना लिखियौक ? एखन एतबहि ।

गय रामजोड़ी, तोँ हमरापर जँ कनेको, रोख-तोख रखने होँहि तँ तकरा बिसरि जैहेँ आ गाम अयबाक कोनहुना जोगाड़ धरबिहेँ । तोँ लगमे रहबेँ तँ हमरा भीतरसँ हूबा बनल रहत । तोहर संग रहब हमरा बड़ नीक लागत । चिट्ठीक उतारा तुरन्त दिहेँ आ अयबाक सम्बन्धमे की होइत छौक से लिखिहेँ । **तोरे रामजोड़ी –रेवा**

35 **हय रामजोड़ी, जय मैथिली !**

तोहर चिट्ठीक आस-बाट तकैत छलहुँ, से जल्दीये भेटि गेल । हम अपना कोठलीमे जा कऽ हाञि-हाञि लिफाफ फाड़लहुँ आ हबर-हबर चिट्ठी पढ़ऽ लगलहुँ । मुदा की कहियह, तोहर चिट्ठी बड़ जल्दी खतम भऽ गेल । हमरा तँ होइत छल जे तोँ वेश नमहर ढड्ढर लिखने होयबह, एकदम रससँ बोरल मुदा तोँ तँ तेहन टिकुली सन छुछुन्न चिट्ठी लिखलह जे मोन छुछुआयले रहि गेल । तोँ अपन मोनक बात सभ लिखबामे बड़ कोताही कयलह अछि । आ कि नहि ? छैक ने से बात ?

हय, सबसँ पहिने ई बात जानि कऽ बड़ दुख भेल अछि जे तोहर स्कूल जायब बन्द भऽ गेलह । ई कोन बात भेलैक हय ? की जिनगी अछि हमरा लोकनिक ? माय-बापकेँ देखैत छिऐक बेटीकलेल वर तकबामे फिरीसान होइत आ बेटीकेँ ओकर

फल की भेटैत छैक, तँ जीवनक विकासमे अवरोध। बेटीक बियाहक चर्च-बर्च भेल कि ओकर पढ़ाइ बन्द, जेना बियाहेलेल जिनगी होइक, विद्यालेल नहि। अपना सभक समाजमे नाइन्थ, टेन्थ कि एलेवुन्थ धरि पढ़ैत-पढ़ैत सब छौंड़ी अजगिग, बुढ़िया भऽ जाइत अछि। तेँ ओहिसँ बेसी पढ़लि-गुनलि कनियाँ तँ अपना सभक समाजमे आङुरो पर ने गनि-गूथि कऽ भेटतह। हय, वरमे आ विद्यामे आगि-पानिक सम्बन्ध कि भेँड़ा-महिसाक कानि तँ नहिएँ छैक, तखन एना किएक होइत छैक ? तोहर पढ़ाइ बन्द भऽ गेलह ताहिमे ककर दोख ? समाजेक दोख ने ?

हय रामजोड़ी, हमहूँ सूरिमे आबि कऽ भसिया गेलियह आ परमीले जकाँ भाषण दियऽ लगलियह। समाजमे जे चलनिसारि छैक तकरा बदलि देब हमरा-तोरा सकक बात नहि, तखन बाजिये कऽ की होयत ? मुदा शारदाक बाबूजी जे आब एना हनछिन-हनछिन आ लटपट-सटपट करैत छथिन से किएक ? शारदा तोरा लऽ कऽ अपन मायसँ जे झगड़ा कयलक से एकदम ठीक कयलक। शारदाक भाइयोजी मायकेँ जे कहलथिन से एकदम उचित बात। हुनका ताइएँ एहने होयबाक चाही। ठीके तँ कहलथिन, हम सभ कोनो साग-भाँटा छी ? हय, शारदाक भाइजीक जे विचार छनि से जानि कऽ हमरो परमीले जकाँ विश्वास भऽ रहल अछि जे ई कथा होयबे करतैक। तोँ कनेको उदास नहि होइहह।

हय, तोहर बियाह होयतह से बिचारि कऽ हमरा अपने मोनमे गुदगुदी लागि रहल अछि। खुसीक एत्ता नहि अछि। सोचैत छी जे हमर रामजोड़ी आब कनियाँ बनति। आब ओ अपन वरक कनगुरिया धरति। मुँहपर आब एकटा नव पालिस चढ़ि जयतैक। ओ आब लजाइत मरोत काढ़ब आ घोघ तानब सीखि जायति। अपन वरक नाम आ सासुरक नाम लेब बारि देति। भरि सिउँथि लालटेस सिनुरक धारीसँ ओकर मुँह-ठान बिनु स्नो-पाउडर लगौनहुँ सुन्नर भऽ जयतैक।

हय रामजोड़ी, जँ कोनो अनचिन्हार-अनभोआरसँ तोहर कथा लागल रहितह तखन हम तोरा की सभ लिखितियह से बुझबह ? हम तोरा लिखितियह जे– हय रामजोड़ी, तोरा हमरे सप्पत जे कोनो बात नुकाबह हमरासँ। साफ-साफ लिखह जे तोहर भावी वर महाशय के छथुन ? हुनकर की नाम थिकनि ? फोटो देखलहुन कि नहि ? ओ पसिन्न छथुन ने ? तोँ आब रातिमे के कहय, दिनहुँमे स्वप्नलोकमे विचरण करैत होयबह। सदिखन अपन मोनक पाटीपर कोनो हँसैत-बिहुँसैत सोहनगर मूरुत उरेहैत होयबह। तोरा आगाँ तँ आब दोसरे-दोसरे दुनियाँक रूप अबैत होयतह ताहिमे हमरा सबकेँ मोने रखने रहह तँ सैह बहुत। प्रेमरस बुनियासँ बनल रसधारमे उबडुब करैत लोक तँ अपनो सुधि-बुधि बिसरि जाइत अछि– अनका बिसरब कोन अजगुत आदि आदि।

मुदा आब की ? तेहन ठाम कथा लगलह जे **घर पछुअरबा लओङ केर गछिया, ताही तर रेवादाइ ठाढ़ि**। हय, कहबी छैक, देखले कनियाँ देखले वर-से एहने ठाम चुट दऽ बैसि जाइत छैक।

हय, एहन मधुर-मधुर समाद सूनि कऽ हमहूँ आनन्दक बसातमे गुड्डी जकाँ उधिया रहलि छी। मोन तँ करैत अछि जे एहि ठामसँ उड़ि मारितहुँ आ जा कऽ तोरा पाँजर लागि सटि कऽ बैसि जैतहुँ। जहिना परमीला तोरा खौंझबैत छह तहिना हमहूँ तोरा पाँजरमे आङुर भोंकि कऽ खूब खौंझबितियह। तोँ जखन कचकचाइत होयबह तखन तोहर मुँह-ठान देखबामे कतेक सुन्नर लगैत होयतह!

हय रामजोड़ी, हम तँ मोने मोन सोचैत छी जे– एखन तोरा आङनमे साँझ कऽ गोसाउनिक गीत, ब्राह्मणक गीत, बेटीक लगन, साँझ, सोहर आ खेलौना सब गाओल जाइत होयतह। परमीला सेहो ओहिमे अपन टाँसीवला कंठ मिलबैत होयत। हमर मोन औनाइत, अहुछिया कटैत रहैत अछि जे हमहूँ आइ-माइक गीत-नादमे संग पुरितहुँ! मुदा हमर अभाग जे हम तोरासँ अस्सी योजन दूर, परदेशमे छी। आनन्दक ओहि कुण्डमेसँ एको आँजुर पीबि सकबामे असमर्थ छी, तेँ अपनेपर तामस होइत रहैत अछि।

हय, तोँ हमर बाबी लग जाइत छहुन से जानि मोन हुलाससँ भरि गेल अछि। हुनका हम बिसरबनि कोना? हुनकर सुरता तँ हमरा सदिखन अबैत रहैत अछि। हमरो कंछा होइत अछि तोहर बियाह देखऽलय गाम आबी। अपन बाबी लग आबी। मुदा अपनेसँ एकसरि तँ आबि नहि सकैत छी। केओ पहुँचा देत तखने आबि सकब। एहिलय माइयेकेँ गोहराबऽ पड़त। माइये लग जा कऽ नोर-झोर एकट्ठा करब। भभटपन करब। आपठ खसायब। ताहिपर ओ मानि जाय तँ मानि जाय।

रामजोड़ी हय, तोँ जे अदंक आ धुकधुकीवला गप्प लिखलह अछि से एखन हम की बुझबैक? हम तँ अनुमाने कऽ सकैत छियह। हय, प्रतिमादीदी दऽ पहिने कहियो लिखने रहियह। हुनका लग जाइते रहैत छी। हुनको बियाह ठीक भऽ गेलनि अछि। छथि केहन पकठोसलि! मुदा ओहो ओहने-ओहने बात सब कहैत छलीह जेहन तोँ लिखलह अछि। तँ होइत अछि जे तोरो अबूह, अगम, अथाह लगिते होयतह। हय, बुझि पड़ैत अछि बियाहसँ पहिने अपना सभक बतारी सभ लोककेँ एहिना होइत होयतैक। तोँ एको रत्ती हहरिहह नहि, अपनाकेँ सम्हारने रहिहह।

अँय हय रामजोड़ी, तोँ हमरासँ माफी किएक मङलह? तोँ हमर की बिगाड़लह अछि? हम तँ आने-मानेसँ तोरा बुझाइये देने छलियह जे शारदाक भाइजीक प्रति कहियो कोनो आपकताक भाव उपकल छल जरूर मुदा ओ तँ बिला गेल कहिया ने। ठीक ओहिना जेना लोक निन्नमे बिसनाइत अछि आ बिसरि जाइत अछि। बिसनायल बात सभ सत्त थोड़बे होइत छैक!

हय रामजोड़ी, तोरा मोन होयतह। अपना सभक साइन्स टीचर वर्माजी लेबोरेटरीमे एकटा प्रयोग कयने रहथिन। फगुआक छुट्टीमे स्कूल बन्द होयबासँ एक दिन पहिने हम सभ लेबोरेटरीमे प्रयोग करैत रहिऐक। वर्माजी कहलथिन जे आइ होली खेलयबाक प्रयोग

सिखयबौक । ओ कोनो-कोनो केमिकल सबकेँ मिला कऽ एकटा फ्लास्कमे रंग बनौलथिन– एकदम गुलाबी लाल । फेर, जे लड़का सभ उज्जर दपदप ड्रेस पहिरने रहय तकरा सभक देहपर ओ रंग ढारि देने रहथिन । सभक कपड़ा लाल टुहटुह भऽ गेलैक । ओकर सभक मोन केहन घोर भऽ गेल होयतैक से ओकर सभक चेहरेसँ बुझि पड़ैत छलैक । मुदा दसे मिनटक बाद ओ रंग उड़ि गेलैक आ सभक कपड़ा फेर ओहिना उज्जर भऽ गेलैक । ठीक तहिना हमरा मोनमे जे एकटा गुलाबी रंग पसरल छल से उड़ि गेल । एकदम सफाचट । ई सभ बुझाइयो देलियह तैयो तोँ हमरा डहजरिन बुझलह आ हमरासँ माफी मङलह अछि ! हमर बातक परतीत तोरा नहि भेलह ।

हय रामजोड़ी, हम तोरा कोना बुझबियह जे तोहर खुसी हमरहु खुसी थीक । हम तोँ कीं फराक छी ? मुदा तोँ हमरा अपनासँ फराक बुझलह । भिन्न बुझलह । आन बुझलह । बिरान बुझलह ।

सत्ते कहैत छियह रामजोड़ी, तोहर एहि बातसँ हमरा बड़ दुख भऽ रहल अछि । हमर मनुआँ कानि रहल अछि जे हमर रामजोड़ी हमरा दोसर कऽ बुझलक । सखिहे, ई नहि उचित विचार । एहि लय माफ तँ नहिएँ करबह, मुदा तोँ धरि उतारा जरूर दिहह आ तुरन्त दिहह । उतारामे अपन सभ बात, नान्हियो-नान्हियोटा बात सभ खूब बिकछा-बिकछा कऽ लिखिहह । तखने तोरा माफ करबा पर विचार करबह । से बुझलह किने ? तोहर चिट्ठीक बाट तकैत रहबह । **तोहर अप्पन रामजोड़ी –सोना**

36

गय रामजोड़ी, जय मैथिली !

तोहर चिट्ठी एतेक जल्दी भेटि जायत से आशा नहि छल । हमर मन तँ एखन सदति अब्बुह-अथाहमे पड़ल रहैत अछि । एहनमे तोहर चिट्ठी पाबि कतेक भरोस भेल से कोना बुझबियौक ? तोँ तँ अपन कल्पनाक बाढ़िमे तेना ने भसिया गेलेँ से सोहे ने रहलौक जे एहि ठामक परिस्थिति की भेल होयतैक ।

गय रामजोड़ी, तोँ जे गीत-नाद दऽ ओते लिखलेँ से ओहि कहबीक परि भऽ गेलौक जे वर-कनियाँक भेटे नहि ओठंगरलेल मारि ! एहि ठामक गप्प की लिखियौक ? एहि ठाम जे हुलास-उछाह छलैक से सब जेना एकाएक बिला जकाँ गेलैक । बाबूजी आ माय दुनू गोटेकेँ सदिखन गुमसुम देखैत छियनि । सदिखन होइत रहैत छनि जे हम हुनका सोझाँ ने पड़ि जैयनि ।

एक दिन सुनबामे आयल जे बाबूजी शारदाक बाबूजीक ओहि ठाम गेल छलथिन । हुनका कहि अयलथिन जे अपनेक जे माङ अछि से सब हम पूरा करब । ताहिपर ओ सब कहलथिन जे सात-आठ दिनमे बिचारि कऽ खबरि करब । बाबूजी कहलथिन जे हमहीं आठम दिन भेट करऽ आबि जायब । बाबूजी फेर ओहि ठाम जैतऽथिन ताहिसँ पहिने केओ ओहि ठामक समाद आबि कऽ कहि गेलनि जे हुनका गामपर अपने देयादीमे एकटा

खुटका भऽ गेलनि अछि, तेँ अशौचमे कोनो गप्प नहि होयत ।

एहि बीचमे परमीला आयलि छलि । ओकरा शारदासँ भेट भेल छलैक । ओकरा शारदासँ बहुत रास भितरिया बातक जनतब भेलैक । ओ कहलक जे- शारदाक बाबूजी आब फेका-फेकौअलिवला गप्प करऽ लगलथिन अछि । अशौच की रहतनि ? शारदाक मामा आ मौसा पटनामे रहैत छथिन से समाद देलथिन जे धड़फड़ा कऽ कतहु कथा ठीक नहि कऽ लेथि ।

परमीला कहलक जे- हय रेवा, असलकी बात दोसरे छैक । शारदाक भाइजी इंजीनियरिंगक टेस्टमे बैसल छलथिन । ओकर रिजल्ट बहराइलेल छैक । जँ ओहिमे पास भऽ जयथिन आ से होयबे करथिन, तखन तँ बड़का-बड़का कथासब औतनि । तखन लय मामा आ मौसा दुनू गोटे अपन-अपन कथा ठेकना कऽ रखने छथिन ।

गय रामजोड़ी, आब तोँही कह जे हमर बाबूजी ओकरा सभक पासङो बराबरि होयथिन ? आब तोँ अपने अन्दाज कऽ सकैत छेँ जे माय आ बाबूजीकेँ मनमे की बीतैत होयतनि आ हमर की हाल होयत । आङनमे केओ किछु बजैत नहि छैक, कोनो टोका-चाली नहि । सब गुमसुम, चुपचाप अपन-अपन काज करैत रहैत अछि । हमहूँ आङनसँ कखनो बहराइत नहि छी । संकोच होइत रहैत अछि जे कतहु जायब तँ के, की बाजि देत !

हँ, आ परमीला दोसरे-तेसरे हमरा ओहि ठाम आबऽ लागलि अछि । ओकरे संग थोड़ेक काल बैसि कऽ किछु पढ़ियो लैत छी आ किछु-किछु मोनोक बात बतिया लैत छी । एक दिन हम परमीलाकेँ कहलियैक जे- तोँही हमरा मायकेँ कहऽ जे बाबूजीकेँ बुझा देतनि जे कोन आसा-तिसनामे पड़ल छथि ? शारदाक भाइजीक प्रति कथा-वार्त्ताकेँ अनठा देथिन ।

एहिपर ओ हमरा डाँटि कऽ कहलक जे- एहिमे तोरा दहीमे सही करबाक कोन काज छह ? जे होइत छैक से होअऽ दहक । हमरा तँ शारदासँ भेट आ गपसप होइते रहैत अछि । शारदा भेट होइते देरी सबसँ पहिने तोरे हाल समाचार पूछि दैत अछि । हमहुँ ओकरा पेटसँ बातसब लैत रहैत छियैक । हय रेवा, शारदाक, ओकर भाइजी आ मायक एक मोन छैक । शारदा कहलक जे- ओकर माय ओकर बाबूजीसँ खूब लड़ैत छथिन जे- ककरो कथाकेँ एना लटका कऽ राखब नीक बात नहि । अपनो बेटी कुमारि अछि सेहो सोचू । जँ अहूँकेँ कोनो बेटावला एहिना व्यवहार करत तँ केहन लागत ?

परमीलाक बात हम चुपचाप सुनैत रहलहुँ ।

रामजोड़ी गय, एकटा बात तोरे कहैत छियौक । एक दिन परमीला आयलि । दुनू गोटे एकातमे पढ़ऽलेल बैसलहुँ । पढ़ब की ! शारदेक ओहि ठामक गपसप होबऽ लागल ।

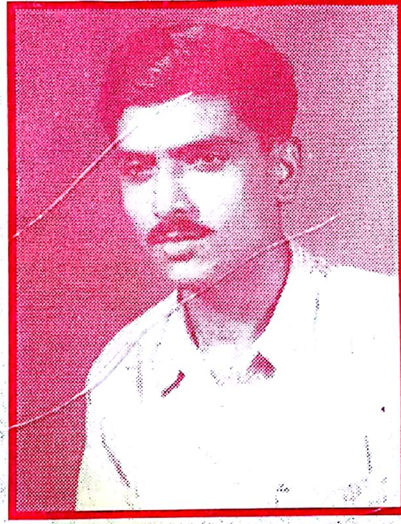
की कहियौक रामजोड़ी ! ओहि ठामक गपसप सुनबामे हमरो नीक लगैत अछि । ओहि दिन परमीला कहलक जे- काल्हि खन हम शारदाक ओहि ठाम गेलि छलहुँ । शारदाक माय तोरा दऽ पुछलथुन. आ बजलथुन जे- देखियौक विधाता की करैत छथिन । शारदा बाजलि जे मोन होइत अछि जे एक दिन रेवतीदाइसँ भेट कऽ अबियनि ।

हय, हम जखन चल अबैत रही तँ शारदाक भाइजी हमरा अरियातने अयलाह आ जखन सुनहट भेटलनि तँ कहलनि जे- सुनै छी अहाँक सखी स्कूल जायब छोड़ि देने छथि ! से सब नहि करऽ कहबनि । कहबनि जे पढ़ाइ नहि छोड़थि । मैट्रिक परीक्षामे अवश्ये बैसथि । हवा-बिहाड़ि तँ एहिना अबैत-जाइत रहतैक ।

गय, परमीलाक मुँहसँ ई बात सुनि कऽ हमरा कतेक नीक लागल से हम कहि नहि सकैत छियौक । हमर सौंसे देहक रोआँ भुटकि गेल । हम भरि पाँज कऽ परमीलाकें धऽ लेलियैक आ कतेक काल धरि धयने रहलियैक । से सोहे ने रहल ।

गय रामजोड़ी ! ई बात लिखैत-लिखैत हमर मोन गह्वरित भऽ गेल अछि, तें एतबे एखन । तों चिट्ठीक उतारा तुरन्त दिहें । अनठबिहें नहि । **तोरे रामजोड़ी– रेवा**



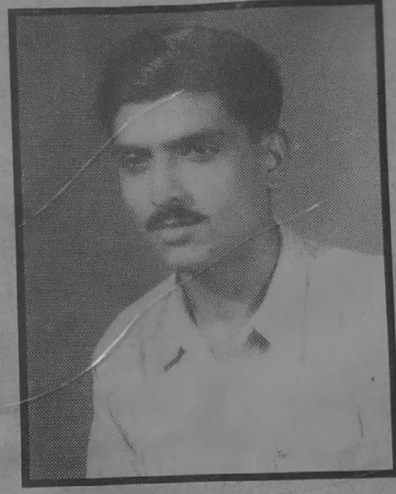


श्रीरामदेवझा

समेकित परिचिति : 'लेखक छठम दशकसँ तँ साहित्य-मञ्च पर अवतीर्ण भेल छथि परञ्च उत्तीर्ण भेल छथि जीवनक नेपथ्यहिमे। जेना ई अनवरत साधना करैत रहला, स्कूल-वर्गमे एको दिन अनुपस्थित नहि भेला, कॉलेज-क्लासमे कखनहु दोसर पंक्तिमे नहि गेला, अध्यापक-जीवनमे कहिओ अप्रस्तुत भऽ कऽ नहि अयला, साहित्यिक क्षेत्रमे सव्यसाची जकाँ बाम-दहिन दूनू सन्धान करैत रहला, निबन्ध-कथा-कविता-एकांकी सभ विधामे कलमक कमाल देखबैत रहला- ताहि सबसँ बहुत पूर्वहिसँ चिन्हारे नहि, मैथिली क्षेत्रमे एक चमत्कारे सिद्ध छथि । रुचि-संस्कार ओ लेखन-भाषण, शोध -अनुसन्धान सब दिशामे भाषा-साहित्यक अनुपम उपहारे प्रसिद्ध छथि ।'

('धरतीमाता'क भूमिकासँ)

– आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन'



श्रीरामदेवझा

समेकित परिचिति : 'लेखक छठम दशकसँ तँ साहित्य-मञ्च पर अवतीर्ण भेल छथि परञ्च उत्तीर्ण भेल छथि जीवनक नेपथ्यहिमे। जेना ई अनवरत साधना करैत रहला, स्कूल-वर्गमे एको दिन अनुपस्थित नहि भेला, कॉलेज-क्लासमे कखनहु दोसर पंक्तिमे नहि गेला, अध्यापक-जीवनमे कहिओ अप्रस्तुत भऽ कऽ नहि अयला, साहित्यिक क्षेत्रमे सव्यसाची जकाँ बाम-दहिन दूनू सन्धान करैत रहला, निबन्ध-कथा-कविता-एकांकी सभ विधामे कलमक कमाल देखबैत रहला- ताहि सबसँ बहुत पूर्वहिसँ चिन्हारे नहि, मैथिली क्षेत्रमे एक चमत्कारे सिद्ध छथि । रुचि-संस्कार ओ लेखन-भाषण, शोध -अनुसन्धान सब दिशामे भाषा-साहित्यक अनुपम उपहारे प्रसिद्ध छथि ।'

('धरतीमाता'क भूमिकासँ)

– आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन'

श्रीरामदेवझाक प्रकाशित कृति

प्रथम प्रकाशित कथा :

'मुदा आब की ?' (मिथिला मिहिर, दरभंगा, जुलाइ 1953)।

कथाकृति :

एक खीरा : तीन फाँक 1965 / मनुक सन्तान 1966 / इजोतीरानी 1967 / धरती माता 1985 / अंगरेजीफूलक चिट्ठी 2002 (मिथिला मिहिरमे धारावाहिक 1960-61) / बहिनाक विरोग 2002 (मिथिला मिहिरमे धारावाहिक 1961-62)/ रामजोड़ी कागतक पाँखिपर 2002 (मिथिला मिहिरमे धारावाहिक 1963)।

नाट्यकृति :

पसिझैत पाथर 1989 (साहित्य अकादेमी पुरस्कार 1991, प्राप्त)।

अनुसन्धान-आलोचना :

शकुन्तला नाटक : एक अध्ययन 1959 / पार्वती परिणय नाटक : एक अध्ययन 1960 / मैथिली शैव साहित्य 1979 / उमापति 1980/ मैथिली शैव साहित्यक भूमिका 1982 / जगत्प्रकाशमल्ल 1990 / जगज्ज्योतिर्म्मल्ल 1995 / जनार्दनझा जनसीदन 1998 / मैथिली लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य 2002।

अनुवाद :

पृथ्वी परिचय (भाग चारि) 1988 / जीव विज्ञान (प्रथम भाग) 1988/ वाणभट्ट (अंग्रेजी मोनोग्राफ) 1989 / सगाइ 1992 (उर्दूक 'इक चादर मैली सी', साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 1994, प्राप्त)।

सम्पादन :

नन्दीपति : गीतिमाला 1965 / रामविजय नाट ओ वर गीत 1967/ हरगौरी विवाह नाटक 1970 / नेपालक शिलोत्कीर्ण मैथिली गीत 1972 / कुञ्जविहार नाटक 1976/ मैथिली भाषा सरिता (भाग चारि) 1984 / दशावतार नृत्यम् ओ षोडश गीतम् 1988 / मैथिली प्राचीन गीतमञ्जरी 1991 / दुर्गाचरित नाटक 1996 / रमेश्वरचरित मिथिला रामायण 1999।

पत्र-पत्रिका सम्पादन :

वैदेही (मासिक) 1964 सँ 67 धरि / संकल्प (अंक 1 सँ 5 धरि)।

सम-सम्पादन :

मैथिली प्राचीन गीतावली 1977 / कविवर जीवनझा रचनावली 1980/ विद्यापति गीतसंचय 1999।